Vol.20, Issue 5 | Annual Subscription ₹420

March 2021

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

INDIA

www.rotarynewsonline.org

Rotary

दिल्ली में IA के कुछ पल

रशीदा भगत

RIDE महेश कोटबागी, अमिता और राशी मेहता के साथ DGEयों के जीवनसाथी।

हेमंत कुमार

बाएं से: RID भरत पांडया, माधवी, अमिता, RIDE महेश कोटबागी, RIDE ए एस वेंकटेश और विनीता।

विषयसूची

10 पोलियो-मुक्त भारत की 10 वीं वर्षगांठ का समारोह

आईपीपीसी प्रमुख माइक मैकगवर्न ने रोटरी क्लब मद्रास को संबोधित करते हुए रोटरी की पोलियो उन्मूलन परियोजना की समीक्षा की।

20 RIPE मेहता ने अपने गवर्नरों से आग्रह किया "जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा करें"

अपने अध्यक्षीय थीम का खुलासा करते हुए, RIPE शेखर मेहता ने नवनिर्वाचित गवर्नरों से अगले 17 महीनों के दौरान सेवा और सदस्यता वृद्धि को अपना मंत्र बनाने का आग्रह किया।

24 ज़ाम्बिया में मलेरिया उन्मूलन TRF का पहला विस्तारित कार्यक्रम है

अंतर्राष्ट्रीय सभा में डीजीयों को संबोधित करते हुए, नवनिर्वाचित टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष जॉन जर्म ने आगामी वर्ष के लिए संस्थान की योजनाओं और लक्ष्यों का खुलासा किया।

40 कोविड ने भारतीय फार्मा के लिए अवसर खोलें

स्वास्थ्य सेवा विशेषज्ञों ने कोविड महामारी और *द ओडिसी* ज़ोन इंस्टीट्यूट की सफलता पर अपने विचार व्यक्त किए।

48 कर्नाटक में प्रोजेक्ट रीसाउंड का लक्ष्य है बहरापन मिटाना

रोटरी बैंगलोर ब्रिगेडस श्रवणबाधित बच्चों को नि:शुल्क श्रवण सहायता उपकरण प्रदान कर रहा है।

52 अफगानिस्तान — जहां भारत को प्यार और इज़्ज़त दी जाती है

2005 में युद्ध से तबाह देश की यात्रा के लघु चित्र।

62 ग्रामीण शिमोगा में महिलाओं को अपनी आय बढ़ाने के लिए मिली गायें

रोटरी क्लब शिमोगा ने वैश्विक अनुदान के माध्यम से 70 से अधिक ग्रामीण महिलाओं को उनकी आजीविका के लिए संकर गाय उपहार में दिए।

64 सुरों की मलिका, आशा

लाखों लोगों को मंत्रमुग्ध करने वाले महान गायक की जीवन यात्रा की एक झलक।

कवर पर : रुखसार खातून, भारत में अंतिम पोलियो संक्रमित बच्ची, रोटरी क्लब हावड़ा द्वारा भेंट में दि गई साइकिल की सवारी करती हुई।

एक रंगीन, प्रासंगिक ज़ोन इंस्टिट्यूट अंक

मैं फरवरी अंक से बहुत प्रभावित हूँ, जो रोटरी और सामान्य हित के मामलों से जुड़े दिलचस्प और ज्ञान-उन्मुख विषयों से भरा हुआ है।

आमतौर पर, बाहरी लोग रोटेरियनों से पूछते थे कि रोटरी में ऐसा क्या खास है और वे इस संगठन के सदस्य होने पर गर्व महसूस क्यों करते है। उन्हें अलग-अलग उत्तर मिलते है जैसे निस्वार्थ सेवा, वर्गीकरण सिद्धांत, रोटरी संस्थान, आदि। हम निश्चित रूप से इस सूची में एक और कारण जोड़ सकते है: हमारी पत्रिका, *रोटरी न्यूज़,* क्योंकि यह हर माह हमें ज्ञान के एक कोष से प्रबुद्ध करती है।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि भारतीय सतत विकास संस्थान के महानिदेशक डॉ श्रीकांत के पाणिग्रही जैसे बाहरी व्यक्ति पत्रिका प्राप्त करना चाहते है। रोटरी की सार्वजनिक छवि बनाने का श्रेय संपादक रशीदा भगत और उनकी उत्साही टीम को जाना चाहिए।

जब संपादकीय टीम अथक रूप से इस तरह का उत्कृष्ट काम कर रही है, तो यह हमारे सभी सदस्यों की जिम्मेदारी है कि हम नियमित रूप से पत्रिका की सदस्यता लें और रोटरी के भरपूर ज्ञान से खुद को समृद्ध करें।

आर श्रीनिवासन

रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन - मंडल 3000

फरवरी अंक में आपके संपादकीय के शब्द मुझे पसंद हैं: ''नाजुक होने के बावजूद, आइए हम अपनी लड़कियों को शिक्षा की जीवनरेखा उपलब्ध करवाएं और सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाने और आशा से परिपूर्ण भविष्य के लिए उनका हाथ थामें।'' मुझे यकीन है कि रोटरी में हम सभी महिलाओं और बच्चों को सशक्त बनाने हेतु अपना काम कर रहे है, लेकिन मेरा मानना है कि यह पर्याप्त नहीं है।

रो ई ज़ोन इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट एक दूसरे से हाथ न मिलाने को लेकर संदर्भित है, जिसका अब अभ्यास नहीं किया जाता है। गवर्नर की यात्रा के दौरान हमारे क्लब की बैठक में भाग लेने के दौरान मुझे वही अकेलापन महसूस हुआ जहाँ मैं अपने साथी रोटेरियनों से हाथ नहीं मिला पाया और न ही उन्हें गले लगा पाया जिनसे मैं कई महीनों से मिला भी नहीं था।

लेख आइए *हम डिजिटल युग को समाविष्ट करें* में रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक कहते है, ''आइए हम उन लोगों तक पहुंचने के संयुक्त प्रयास करें जो अकेला महसूस करते है और उन्हें रोटरी परिवार का एक हिस्सा महसूस करवाने के तरीके ढूंढे।'' ये शब्द मेरे कानों में गूँजते है।

नेतृत्व के पाठ लेख में जयश्री की रिपोर्ट में, मुझे RIPE शेखर मेहता के शब्द बहुत पसंद आए: ''जब तक कोई काम पूरा नहीं होता तब तक मैं न तो सोऊंगा और न ही सोने दूंगा।'' यह व्यापारिक घरानों के हर सफल सीईओ का मंत्र है।

टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष रवींद्रन का कथन कि परमात्मा में हमारा विश्वास एक कसौटी को एक साक्ष्य में, एक प्रयोग को जीत में और एक शिकार को विजेता में बदल देगा, वास्तव में एक सकारात्मक सोच है। फरवरी अंक का हर पन्ना मुझे आपके संपादकीय टीम द्वारा रिपोर्ट किए गए कथनों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है। पंडित रविशंकर पर लिखे गए लेख में चित्रों का चुनाव उत्कृष्ट है। टीम रोटरी न्यूज तालियों की गड़गड़ाहट की हकदार है।

नन नारायणन

रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

सार्थक लेख

संपादक के संदेश में स्पष्ट रूप से यह बताया गया है कि यह महामारी हमारे समुदाय की लड़कियों और महिलाओं के लिए कितनी पीड़ादायक थी और उनसे जुड़े मुद्दों को कोविड के बाद की दुनिया में सहानुभूति और करुणा से निपटने की आवश्यकता होगी।

रो ई निदेशकों ने कहा कि रोटरी बस आशा के बारे में है और महामारी के दौरान रोटेरियनों द्वारा शांति निर्माण और अन्य सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करती है। 'ओडिसी' के दौरान रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक और अन्य रोटरी नेताओं द्वारा दिए गए भाषण सार्थक और पढ़ने योग्य है। सभी प्रेरक भाषणों को शामिल करने के लिए धन्यवाद।

लेख *टीआरएफ के माध्यम से अच्छा करना* जो रोटरी क्लब गोरखपुर की सेवा का वर्णन करता है, सराहनीय है। टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष का कथन निश्चित रूप से इस निराशाजनक समय से उबरने हेतु हमारे लिए एक प्रेरणा है। टीआरएफ के नेतृत्व में कोविड की कठिनाइयों से उबरने के लिए उठाए जा रहे कदम सराहनीय है। पूर्व प्रधानमंत्री और प्रशंसनीय गुणों के साथ दूर दृष्टि रखने वाले दिवंगत ए बी वाजपेयी के बारे में पढ़कर और उन्हें याद करके खुशी हुई। सितारवादक रविशंकर के बारे में पढ़कर अच्छा लगा। कुल मिलाकर यह संपादकीय दल के प्रयासों की बदौलत सार्थक लेखों से भरा हुआ अंक था।

फिलिप मुलप्पोन एम टी

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन

मंडल 3211

संपादक ने पूर्व प्रधानमंत्री ए बी वाजपेयी पर लिखी गई किताब *Vajpayee: The years that changed India.* वाजपेयी में लेखक द्वारा उन्हें दी गई श्रद्धांजलि का वर्णन किया है। इस वर्तमान युग में जब राजनीतिक विरोधियों को अछूत माना जाता है, तो यह जानकर

खुशी होती है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव चाहते थे कि वाजपेयी, जो तब विपक्ष में थे, कश्मीर मुद्दे पर चर्चा के लिए संयुक्त राष्ट्र में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करें। इस लेख में वाजपेयी के गुणों के बारे में पढ़कर अच्छा लगा। एक और दिलचस्प लेख सितार वादक पंडित रविशंकर पर था।

के पी बालसुब्रमण्यम
रोटरी क्लब अम्बासमुद्रम
मंडल 3212

विविधता, लिंग समानता

RIPN जेनिफर जोन्स ने उचित रूप से विविधता और लिंग समानता के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया है जो आने वाले वर्षों में रोटरी की बढ़त के लिए आवश्यक है। उन्होंने यह भी याद किया कि कैसे उन्होंने क्लब स्तर से रो ई मंडल में रोटरी पदानुक्रमों को पार किया और फिर शीर्ष पद के लिए नामांकित होने से पहले न्यासी के रूप में काम किया... सब कुछ अपनी योग्यता के आधार पर।

रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक कहते है कि रोटरी राष्ट्रों, भाषा, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक बाधाओं को पार करते हुए लाभार्थियों तक पहुंचती है। RIPE शेखर मेहता रोटरी और लायंस के साथ मिलकर परियोजनाओं को लागू करने के पक्ष में है क्योंकि 'दोनों एक दूसरे के पूरक हो सकते है।' एक बार मैंने चेन्नई के एक लायंस क्लब की साप्ताहिक बैठक का दौरा किया। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह अपनी 25वीं वर्षगांठ मना रहा था और इसका नेतृत्व महिला पदाधिकारी कर रही थीं। अपने भाषण में, क्लब अध्यक्ष ने लायंस और रोटरी दोनों को संयुक्त सेवा परियोजनाएं करने के लिए बुलाया। यह 10 साल पहले की बात थी। और मेहता ने भी एक बार फिर अपने इसी तरह के विचार प्रस्तुत किए।

एस मुनियांडी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट
मंडल 3000

रणनीतिक योजना बहुत जरूरी है

अपने जनवरी के संदेश में, रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक ने रोटरी क्लबों के लिए रणनीतिक योजना की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया है। यह बहुत प्रासंगिक है क्योंकि अधिकांश क्लब सिर्फ एक वर्ष के लिए ही योजना बनाते है। हमें सभी सदस्यों, विशेष रूप से क्लब के पूर्व अध्यक्षों, जिन्हें परियोजना गतिविधियों का हिस्सा रहना चाहिए, को शामिल करके रोटरी के उद्देश्यों को प्रभावी तरीके से प्राप्त करने के लिए एक रणनीतिक योजना की आवश्यकता है।

हमें उचित नीति के साथ युवा रोटेरियनों के समय और ऊर्जा का उपयोग करने की आवश्यकता है ताकि क्लब उचित संगति के साथ जीवंत रहे। यह सदस्यों का अवरोधन सुनिश्चित करेगा।

प्रत्येक क्लब को कुछ महत्वपूर्ण मील के पत्थर पार करने हेतु विचारोत्तेजक सत्र आयोजित करके बहु-वर्षीय रणनीतिक योजना तैयार करने के लिए रो ई अध्यक्ष की सलाह पर ध्यान देना चाहिए। मैंने इस प्रक्रिया को हमारे क्लब में शुरू करने का फैसला किया है।

विजय अनंत शेट्टी
रोटरी क्लब मापुका
मंडल 3170

एक उल्लेखनीय क्लब

मुझे दक्षिण भारत के सबसे पुराने क्लबों में से एक, रोटरी क्लब क्विलोन की 70वीं वर्षगांठ के बारे में पढ़कर खुशी हुई, जो 1949 में शुरू हुआ था। इसके सभी सदस्य अब कई पॉल हैरिस सदस्य है। इसने छह गवर्नरों का योगदान दिया है, जो एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। यह क्लब अपने साप्ताहिक बुलेटिन के लिए जाना जाता है जिसे रोटेरियन वी वी प्रभु द्वारा अच्छी तरह से संपादित किया गया था।

ए आर भास्कर राज
रोटरी क्लब शिवकाशी सेंट्रल - मंडल 3212

क्लबफुट क्लिनिक की स्थापना

लेख *बच्चों की चलने में मदद करना* शिक्षाप्रद था। मैं सर्जनों और फिजियोथेरेपिस्ट की टीम को उनके द्वारा की गई मुफ़्त उत्कृष्ट सेवाओं के लिए बधाई देता हूँ। इस परियोजना को करने के लिए रोटरी क्लब कोयंबटूर को बधाइयाँ।

मैं क्योर इंटरनेशनल इंडिया ट्रस्ट (CIIT) की सेवाओं को ध्यान में लाना चाहता हूं, जो राज्य सरकारों और कुछ रोटरी क्लबों के साथ मिलकर, क्लबफुट से प्रभावित बच्चों के इलाज की गैर-सर्जिकल विधि कर रहे हैं, जिसे पॉन्सेटी विधि कहा जाता है।

CIIT के निदेशक डॉक्टर संतोष जॉर्ज और रोटरी क्लब दिल्ली मिडटाउन से पीडीजी रमन भाटिया के मार्गदर्शन में हमारा क्लब मदुरई के सरकारी राजाजी अस्पताल में क्लबफुट क्लिनिक में नियमित सेवा कर रहा है।

हमनें 50 FAB (फुट अब्डक्शन ब्रेसेस) दान किए है और अन्य 50 FAB दान करने के लिए इनर व्हील क्लब की मदद की है। हम जरूरतमंद बच्चों को लाभान्वित करने के लिए अपने क्षेत्रों में अधिक क्लबफुट क्लीनिकों को प्रायोजित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

देविका रविन्द्रन
रोटरी क्लब मदुरई मल्लीगई - मंडल 3000

We welcome your feedback. Write to the Editor:
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com.
Mail your project details, along with hi-res photos,
to **rotarynewsmagazine@gmail.com**

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/webinar should be sent only by e-mail to the Editor at **rushbhagat@gmail.com** or **rotarynewsmagazine@gmail.com** WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** in our website **www.rotarynewsonline.org** to read about more Rotary projects.

रोटरी-रोटरेक्ट का तालमेल भविष्य के लिए ज़रूरी हैं

चूँकि मैं प्रत्यक्ष रूप से रोटरेकटरों की महान नेतृत्व क्षमता के बारे में जानता हूँ इसलिए मुझे हमेशा विश्व रोटरेक्ट सप्ताह का इंतजार रहता है, जो हम 8 से 14 मार्च को मना रहे है। रोटरेकटर इस साल मेरी तीनों अध्यक्षीय बैठकों का केंद्र रहे है और मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा था जब दो साल पहले विधान परिषद ने रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के सदस्यों के रूप में रोटरेक्ट क्लबों को शामिल करके रोटरेक्ट का दर्जा ऊँचा करने हेतु मतदान किया। इससे पहले, परिषद ने पहले ही दोहरी सदस्यता संभव कर दी थी और कुछ समय बाद निदेशक मंडल ने रोटरेक्ट की आयु सीमा को समाप्त करने का निर्णय लिया था।

लेकिन हम सब एक साथ सिर्फ अपनी यात्रा आरंभ कर रहे है। प्रभावी ढंग से साझेदारी अपने आप नहीं होती। इसके लिए दोनों पक्षों का तालमेल और विभिन्न पीढ़ियों के गठबंधनों के मूल्य को समझने की आवश्यकता होती है। लुई डे रियल, रोटरेक्ट और रोटरी के दोहरे सदस्य समझाते है।

संयुक्त आभासी बैठकों ने रोटरेकटरों की रोटेरियनों के समक्ष नए विचारों और उपकरणों को पेश करने, क्लबों के लिए एक साथ मिलकर काम करने के नए तरीके बताने में मदद की। महामारी और आपदा प्रतिक्रिया के मामले में, जहाँ रोटरेक्ट क्लबों ने प्रयासों का समन्वय करने, सूचनाओं को तेज़ी से प्रसारित करने, धन संचयन करने के लिए सामाजिक मीडिया का इस्तेमाल किया वहीं रोटरी क्लबों ने समर्थन प्रदान करने, रसद प्रदान करने और समुदायों तक माल और सेवाओं को पहुँचाने के लिए अपने नेटवर्क और संसाधनों का इस्तेमाल किया।

रोटरेकटरों के अभिनव आभासी कार्य और पेशेवर विकास गतिविधियों ने रोटेरियनों को समर्थन प्रदान करने और अनुकूल होने के लिए प्रेरित किया। इस महामारी ने रोटरेक्ट क्लबों को यह एहसास दिलाया कि हम त्वरित रूप से आभासी मंचों के माध्यम से रोटरी क्लबों के साथ भागीदारी कर सकते है। लगातार सहयोग मिलने से हमें यह एहसास हुआ कि रोटरी और रोटरेक्ट वास्तव में एक दूसरे के पूरक है और हम साझा लक्ष्यों के साथ एक ही संगठन का हिस्सा है।

दोनों पक्ष मूल्य में वृद्धि करते है। रोटेरियन रोटरेकटरों के मार्गदर्शक और सेवा भागीदार हो सकते है, जबकि रोटरेकटर रोटेरियनों को दिखा सकते है कि कठिन कार्यों को सरल बनाया जा सकता है और डिजिटल पद्धति के माध्यम से सीमाओं को पार किया जा सकता है। यह तालमेल रोटरेकटरों को भविष्य के रोटेरियन बनने हेतु प्रेरित करता है: मैं रोटरी से जुड़ा क्योंकि रोटेरियनों ने सहयोग के प्रेरणादायक लम्हों के माध्यम से मुझे यादगार सदस्यता अनुभव प्रदान किए। मैं एक रोटेरियन बनकर इसी तरह रोटरेकटरों को आज और आने वाले कल में प्रेरित करना चाहता हूँ।

इस तालमेल की वजह से रोटेरियनों को यह एहसास हुआ कि भले ही रोटरेकटरों की एक अलग संस्कृति हो सकती है, हम सभी कार्यवाही करने वाले लोगों को एकजुट करने हेतु एक आम दृष्टिकोण साझा करते है। रोटरेक्ट के काम करने के अनूठे तरीके नवाचार के लिए प्रेरणा की तरह काम करते है, जिससे रोटरी को भविष्य की चुनौतियों के अनुकूल होने की क्षमता बढ़ाने में मदद मिलती है। रोटेरियन और रोटरेकटर एक साथ मिलकर भविष्य का निर्माण करेंगे, इसलिए आज से ही इसकी शुरुआत करें।

मुझे एक रोटरी क्लब और एक रोटरेक्ट क्लब के बीच औसत उम्र के अलावा कोई और अंतर नज़र नहीं आता!

कई रोटेरियन अभी भी रोटरेक्ट को हमारे युवा संगठन के रूप में देखते है, लेकिन मैं इसे अलग तरह से देखता हूँ। मेरे लिए वे हमारा ही हिस्सा है और वे हमारे जैसे ही है। एक साथ सफल होने के लिए हमें एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना रखने और एक दूसरे को बराबर नज़रों से देखने की आवश्यकता है। आइए रोटरेकटरों को देखें कि वे वास्तव में कौन है: छात्र और युवा नेता, लेकिन सफल प्रबंधक और उद्यमी जो रोटरी संस्थान की योजना तैयार करने, आयोजन करने और प्रबंधित करने में सक्षम है - जिसमें पांच भाषाओं में ब्रेकआउट सत्र शामिल है - जैसा कि उन्होंने 2014 में बर्लिन में किया था।

चूंकि हम इस यात्रा पर एक साथ है, इसलिए रोटरी और रोटरेक्ट की ताकत को याद रखें। और जैसा कि लुई कहते है, चलो अभी एक साथ मिलकर भविष्य का निर्माण करें। ऐसा करने में, हम अपने संगठन के लिए अंतहीन अवसर खोलते है।

होल्गर नेक
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

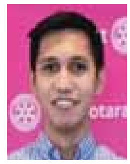

लुई डे रियल
रोटरेक्ट क्लब
सैन फ्रांसिस्को
डेल मोंटे
मलाया
एचीवर्स
फिलीपींस

रोटरी क्लब
सैन फ्रांसिस्को
डेल मोंटे
फिलीपींस,
चेयर
फिलीपिनास
रोटरेक्ट
MDIO

संपादक
का संदेश

एक सर्वोत्कृष्ट नेता

अन्ततः, रोटरी की दुनिया, 1987 में सिर्फ महिला सदस्यों को प्रवेश नहीं देने की ऐतिहासिक गलती सुधारने का गंभीर प्रयास कर रही है और वह भी मुकदमेबाजी के बाद। लेकिन उसके 2-3 दशक गुजर जाने के बाद भी, अतिरिक्त महिलाओं को रोटरी में लाने का प्रयास नहीं किया गया । आज स्थिति यह है कि दुनिया भर के रोटरी क्लबों द्वारा वर्तमान में महिला सदस्यता को 24 प्रतिशत से बढ़ाने की आवश्यकता पर गंभीरता से चर्चा की जा रही है। रो ई अध्यक्ष 2022-23 के लिए जेनिफर जोन्स का मनोनयन इस लक्ष्य की प्राप्ति में एक निर्णायक क्षण बनने जा रहा है।

निस्सन्देह, रो इ के सभी वरिष्ठ नेता न केवल अधिक महिला सदस्यों की आवश्यकता पर बल्कि महिलाओं को नेतृत्व के अधिक अवसर और भूमिका देने की आवश्यकता पर भी जोर दे रहे हैं। लेकिन जब एक महिला, जो सभी बाधाओं को पार कर रो इ में सर्वोच्च स्थान पर पहुंच गई है, तो यह इसी को परिलक्षित करता है, इस कदम से विश्वसनीयता बढ़ेगी और इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ना निश्चित है।

ताज़ा घटनाक्रम में, जोन्स विशुद्ध व्यापारिक दृष्टिकोण से महिला सदस्यता की तरफदारी कर रही हैं और इसे बाजार में उस हिस्सेदारी के रूप में लेती हैं जिसका प्रदर्शन संतोषजनक नहीं है । ''जब बाजार में किसी वस्तु की हिस्सेदारी आशा के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर रही हो तो अपनी कंपनी में हम क्या करेंगे? हम अपनी व्यावसायिक योजना में परिवर्तन कर उसे सुधारेंगे। इसी तरह, आइए हम इस अवसर का लाभ उठाते हुए रोटरी में लैंगिक अनुपात में संतुलन बनाने प्रयास करें'', हाल ही में उन्होंने एक सम्मेलन में कहा।

तुलना और सामान्यीकरण निंदनीय हैं, लेकिन हमें स्वीकार करना होगा कि ज्यादातर सफल महिला नेताओं के नेतृत्व की एक अलग शैली रही है। जिसका प्रदर्शन कुछ सर्वश्रेष्ठ महिला राजनीतिक नेताओं द्वारा किया गया। न्यूज़ीलैंड की जेसिका आर्डर्न अपनी विशिष्ट शासन प्रणाली से स्वतंत्र दुनिया की चहेती बन गई हैं, जो सभी धर्मों, क्षेत्रों और संस्कृतियों का सम्मान करती हैं। कोविड महामारी से निपटने में चहुँ ओर उनकी प्रशंसा हुई है। जर्मनी की एंजेला मर्केल एक अन्य आदर्श नेता हैं। वो साधारण महिला नहीं हैं, जर्मनी के चांसलर के रूप में उनका चौथा कार्यकाल है और पाँचवीं बार चांसलर बनने के अनुमान को उन्होंने खारिज कर दिया है जब सितंबर 2021 में उनका कार्यकाल समाप्त होगा।

2005 के बाद से इस महिला ने अपने कार्यालय को जो दिया उसे देखकर आश्चर्य होता है... सर्वोत्कृष्ट प्रशासनिक और नेतृत्व कौशल; धैर्य और दृढ़ संकल्प, जुनून और करुणा, समानता और समावेश जब उन्होंने जनमत के विरुद्ध जा कर फैसला किया कि जर्मनी सीरियाई शरणार्थियों की एक बड़ी तादाद को अपनाएगा, और भी बहुत कुछ।

अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने ब्रिटेन के पांच प्रधानमंत्रियों, चार फ्रांसीसी राष्ट्रपतियों, सात इतालवी प्रधानमंत्रियों और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन के साथ भी कार्य किया है। फिर भी अपने बढ़िया ट्रैक रिकॉर्ड के बावजूद, मर्केल को अक्सर अपने समकक्ष पुरुषों के समक्ष, लगातार अपने आप को बार बार प्रमाणित करना पड़ा है, जो उन्हें नीचा दिखाने या अपमानित करने की कोशिश करते रहे हैं । मर्केल के साथ मीटिंग में व्लादिमीर पुतिन अपने लैब्राडोर को साथ लाये थे, जबकि उनका कुत्तों से भय सर्वविदित है ;

डोनाल्ड ट्रम्प और इटली के सिल्वियो बर्लुस्कोनी ने अपनी नापसंद जाहिर करने के लिए उन्हें 15 मिनट तक इंतजार करवाया और खुद फ़ोन पर बात करते रहे! जैसे ही महामारी शुरू हुई, 23 मार्च को, मर्केल भी अपनी शॉपिंग टोकरी में कुछ टॉयलेट पेपर, टॉयलेटरीज़ और वाइन की चार बोतलों के साथ अन्य के साथ कतार में लगी हुई नज़र आई थीं ।

एक रासायनिक भौतिकविज्ञानी, बिना किसी खंडन या अतिशयोक्ति के, उनका महामारी से निपटने में उनका प्रबंधन अद्भुत था। ''अनाकर्षक'' माने जाने वाली, मर्केल फैशन या दिखावे में विश्वास नहीं करती थीं; एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने आपने वही सूट दुबारा क्यों पहना है, क्या उनके पास नए सूट नहीं थे, तो उन्होंने बड़ी तसल्ली से जवाब दिया: ''मैं एक सरकारी कर्मचारी हूं, मॉडल नहीं।'' हाल ही में जब उन्होंने पार्टी के शीर्ष पद का त्याग किया तो जर्मन वासियों ने अपनी बालकनियों में खड़े रह कर पूरे छह मिनट तक ताली बजाई थी। जर्मनी तो दूर, पूरी दुनिया में मर्केल जैसा नेता मिलना मुश्किल होगा।

रशीदा भगत

Governors Council

RI Dist 2981	DG R Balaji Babu
RI Dist 2982	DG K S Venkatesan
RI Dist 3000	DG A L Chokkalingam
RI Dist 3011	DG Sanjiv Rai Mehra
RI Dist 3012	DG Alok Gupta
RI Dist 3020	DG Muttavarapu Satish Babu
RI Dist 3030	DG Shabbir Shakir
RI Dist 3040	DG Gajendra Singh Narang
RI Dist 3053	DG Harish Kumar Gaur
RI Dist 3054	DG Rajesh Agarwal
RI Dist 3060	DG Prashant Harivallabh Jani
RI Dist 3070	DG CA Davinder Singh
RI Dist 3080	DG Ramesh Bajaj
RI Dist 3090	DG Vijay Arora
RI Dist 3100	DG Manish Sharda
RI Dist 3110	DG Dinesh Chandra Shukla
RI Dist 3120	DG Karunesh Kumar Srivastava
RI Dist 3131	DG Rashmi Vinay Kulkarni
RI Dist 3132	DG Harish Motwani
RI Dist 3141	DG Sunnil Mehra
RI Dist 3142	DG Dr Sandeep Kadam
RI Dist 3150	DG Nalla Venkata Hanmanth Reddy
RI Dist 3160	DG B Chinnapa Reddy
RI Dist 3170	DG Sangram Vishnu Patil
RI Dist 3181	DG M Ranganath Bhat
RI Dist 3182	DG B Rajarama Bhat
RI Dist 3190	DG B L Nagendra Prasad
RI Dist 3201	DG Jose Chacko Madhavassery
RI Dist 3202	DG Dr Hari Krishnan Nambiar
RI Dist 3211	DG Dr Thomas Vavanikunnel
RI Dist 3212	DG P N B Murugadoss
RI Dist 3231	DG K Pandian
RI Dist 3232	DG S Muthupalaniappan
RI Dist 3240	DG Subhasish Chatterjee
RI Dist 3250	DG Rajan Gandotra
RI Dist 3261	DG Fakir Charan Mohanty
RI Dist 3262	DG Saumya Rajan Mishra
RI Dist 3291	DG Sudip Mukherjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

रो ई निदेशकों

आमने-सामने

हमारे ज़ोन के सभी क्लबों और मंडलों को उनके द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए और मुस्कुराते हुए अपनी सेवा देने वाले उन सभी रोटेरियनों को सलाम। वे यह संदेश देते है कि अभूतपूर्व चुनौतियों के बीच भी रोटरी के लिए और रोटरी के माध्यम से हमारा काम जारी रहता है। हम एक झटके में दुनिया तो नहीं बदल सकते; लेकिन हम इसे एक बेहतर जगह बना सकते है। चूंकि हम वर्तमान रोटरी वर्ष की अंतिम तिमाही में प्रवेश करने जा रहे है तो चलिए हम सभी अभी इसी वक्त से अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन करने पर ध्यान केंद्रित करें।

जल लगातार एक कीमती वस्तु बनता जा रहा है। दुनिया के अधिकतर क्षेत्र पानी की कमी का सामना कर रहे है। सुरक्षित जल और बुनियादी स्वच्छता की कमी खराब स्वास्थ्य और बीमारियों की ओर ले जाती है। हमारे समुदाय को एक बेहतर जगह बनाने हेतु काम करने का अर्थ है मूल बातों से शुरुआत करना। हम जल और स्वच्छता से शुरूआत करते है। स्वच्छ जल एक ऐसी चीज़ है जिसे हम हल्के में लेते है लेकिन समस्त भारत के गांवों में हजारों लोगों के पास स्वच्छ, सुरक्षित जल तक पहुंच नहीं है। महिलाओं और युवतियों को जल की अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हर दिन कुछ किलोमीटर चलना पड़ता है। पानी के बिना हम साक्षरता या सकारात्मक स्वास्थ्य की बात कर ही नहीं सकते।

संवहनीयता जल और स्वच्छता परियोजनाओं पर काम करने की कुंजी है। बुनियादी जरूरतों को पूरा करना महत्वपूर्ण है लेकिन लोगों के व्यवहार को बदलने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। हमारे ज़ोन के रोटेरियन WinS में जबरदस्त काम कर रहे है - शौचालय का निर्माण, हैंडवाश स्टेशनों की स्थापना, प्रशिक्षण, स्वच्छता शिक्षा प्रदान करना और मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन सहित उचित स्वच्छता सुविधाओं को सुनिश्चित करना।

चूंकि हम विश्व रोटरेक्ट सप्ताह मनाते है तो हमारा ध्यान रोटरेक्ट को मजबूत, प्रभावी और जीवंत बनाने पर केंद्रित होना चाहिए। रोटरेक्ट की मजबूती के लिए उसकी जड़ें मजबूत होनी चाहिए और ये जड़ें क्लबों में निहित है। क्लब तब ही मजबूत बनेंगे जब उसकी नींव मजबूत हो। एक मजबूत नींव रोटरेक्ट क्लबों को विकसित होने, जीवंत और रोमांचक बनने में मदद करेगी। पारदर्शी संवैधानिक दस्तावेज, स्पष्ट नेतृत्व भूमिकाएं, सुनियोजित क्लब बैठकें, सदस्यों को व्यस्त रखने की एक अच्छी रणनीति और सामंजस्यपूर्ण कार्य रोटरेक्ट क्लब की सफलता सुनिश्चित करने की कुंजी हैं। रोटरी - रोटरेक्ट साझेदारी परामर्श से लेकर नेतृत्व विकास तक, सेवा परियोजनाओं और अन्य गतिविधियों पर एक साथ काम कर सकती है।

हमारे ऋषि कहते है, ''जो हम दूसरों को देते है, वहीं हमें मिलता है।'' अपने जीवनकाल में हम ऐसी कई परिस्थितियों का सामना करते है जब हम अपने कठिन समय से बाहर निकलने के लिए दूसरों की दया और उदारता पर निर्भर होते है। हमारे अच्छे समय में हम दूसरों से जैसा व्यवहार करते है उसी से यह निर्धारित होता है कि हमारे कठिन समय में हमारा भाग्य कैसा होगा। रोटेरियन होना सौभाग्य की बात है क्योंकि जरूरत के समय वे मददभरा हाथ आगे बढ़ा सकते है। ज़िंदगियाँ बदलने के लिए रोटरी हमें जो अवसर देती है चलिए उनका लाभ उठाएं। रोटरी का आनंद लें।

डॉ भरत पांड्या

रो ई निदेशक, 2019-21

का संदेश

आइए जल चुनौती का सामना करें

स्वच्छ जल सभी जीवों के लिए एक बुनियादी आवश्यकता है। जब लोगों के पास स्वच्छ जल तक पहुंच होती है, तो वे स्वस्थ और लाभप्रद जीवन जीते है। लेकिन भारत में जलजनित बीमारियों के कारण लाखों लोगों की मृत्यु हो जाती है। इस गंभीर मुद्दे को संबोधित करने के लिए, रोटरी क्लब कुओं का निर्माण करते है, वर्षा जल संचयन प्रणाली (RWH) स्थापित करते है, और सुरक्षित एवं स्वच्छ शौचालय प्रदान करके स्वच्छता सुविधाओं में सुधार करते है।

हमने W-A-T-E-R को एक परिवर्णी शब्द के रूप में परिभाषित किया है: W - जलोत्सरण क्षेत्र विकास; A - पक्षसमर्थन/जागरूकता/सक्रियता; T - जल निकायों का परिवर्तन/कायाकल्प; E - कुशल RWH और R - घटाना/ पुनर्प्रयोग/ सम्मान/ पुनर्प्राप्ति/ पुनर्भरण/ जल पुनर्चक्रण।

रोटरी लक्ष्य

अगले पांच वर्षों में, रोटरी 500 मिलियन एकड़ भूमि की सिंचाई हेतु 10,000 रोधक बांधों का निर्माण और पांच मिलियन पेड़ लगाकर वनीकरण को तेज; 10,000 बड़े जल-निकायों का कायाकल्प; 50,000 शहरी RWH संरचनाओं का निर्माण; और 25,000 गाँवों को नेट ज़ीरो (आत्मनिर्भर गाँव) बनाने की कोशिश करेगी।

हम 150,000 स्कूलों में एमएचएम, बीसीसी और स्वच्छता शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा देने की कोशिश करेंगे। हम 5,000 गांवों को ओडीएफ-प्लस बनाने का लक्ष्य रखेंगे और स्कूलों, स्वास्थ्य सेवा केंद्रों, आंगनवाड़ियों, घरेलू शौचालयों की रेट्रोफिटिंग, ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन और समुदायों में एक व्यवहारिक बदलाव की शुरूआत करने के लिए स्वच्छता कवरेज का विस्तार करने की कोशिश करेंगे। रोटरी का लक्ष्य निम्नलिखित हासिल करना है:

- भारत सरकार के जल जीवन मिशन के तहत नल के जल कनेक्शन वाले 1,000 गाँव
- ग्राम पंचायतों/गांवों में 500 सामुदायिक शौचालय
- अस्थिर आबादी जैसे कि गांवों, कस्बों एवं शहरों में प्रवासी श्रमिकों और पर्यटकों के उपयोग के लिए 500 सार्वजनिक शौचालय खंडों का निर्माण
- स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं के लिए 500 WASH परियोजनाएं ताकि सुरक्षित जल, मरीजों और कर्मचारियों के लिए सुलभ शौचालय, हाथों की स्वच्छ धुलाई की अवसंरचना और अभ्यास प्रदान किया जा सकें।

स्वच्छता संकट

पूरे भारत में 344 मिलियन लोग खुले में शौच करते है। विश्व बैंक का अनुमान है कि देश में 21 प्रतिशत संचारी रोग असुरक्षित जल और स्वच्छता अभ्यासों की कमी से जुड़े है। सिर्फ भारत में ही प्रतिदिन पांच साल से कम उम्र के 500 से अधिक बच्चे दस्त से मरते है। तो, दोस्तों एक खड़ी चढ़ाई करने के लिए आइए अपनी कमर कस लें।

कमल संघवी

रो ई निदेशक, 2019-21

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPE Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
PRID C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RID Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RID Kamal Sanghvi	RI Dist 3250
RIDE A S Venkatesh	RI Dist 3232
RIDE Dr Mahesh Kotbagi	RI Dist 3131

Executive Committee Members (2020–21)

DG Sanjiv Rai Mehra Chair – Governors Council	RI Dist 3011
DG Sudip Mukherjee Secretary – Governors Council	RI Dist 3291
DG Sangram Vishnu Patil Secretary – Executive Committee	RI Dist 3170
DG Prashant Harivallabh Jani Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3060
DG S Muthupalaniappan Member – Advisory Committee	RI Dist 3232

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website: www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

पोलियो-मुक्त भारत की 10 वीं वर्षगांठ का समारोह

रशीदा भगत

जब रो इ मंडल 3232 के रोटरी क्लब ऑफ मद्रास ने पोलियो-मुक्त भारत की 10 वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक पावर-पैक वर्चुअल मीटिंग आयोजित की थी जिसके सभापति IPPC के अध्यक्ष माइक मेकगवर्न थे, वहां इसके दिग्गज दिवंगत पूर्व अध्यक्ष क्रिस चितले की अनुपस्थिति महसूस हो रही थी। रोटरी द्वारा पोलियो उन्मूलन अभियान की घोषणा करने से पहले ही, रोटरी क्लब मद्रास और तमिलनाडु के कुछ अन्य क्लबों के समर्पित रोटेरियनों के समूह के साथ, चितले ने उस क्षेत्र से पहले लाल खसरा और फिर पोलियो उन्मूलन के लिए टीकाकरण अभियान की शुरुआत कर दी थी।

रोटरी के पोलियो उन्मूलन परियोजना की समीक्षा करते हुए; इसने किस प्रकार कार्य किया, धनराशि एकत्र की और दुनिया के बच्चों की सहायता की, साथ ही आज कोविड महामारी के दौरान रोटरी के समक्ष क्या चुनौतियां हैं, मेकगवर्न ने कहा: ''क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि आज 19 मिलियन लोग इस पृथ्वी पर सहजता से चल रहे हैं जो अन्यथा पोलियो से लकवाग्रस्त हो चुके होते? हम नहीं जानते कि वे कौन लोग हैं लेकिन यह हम में से कोई भी हो सकता था।''

बाकी बचे हुए दो स्थानिक राष्ट्रों पाकिस्तान और अफगानिस्तान के आंकड़ों का विश्लेषण करते हुए, उन्होंने कहा पाकिस्तान से अच्छी खबर है, जहां 2019 में पोलियो वायरस से संक्रमण 147 था वो 2020 में 84 तक आ गया था। हालांकि अफगानिस्तान में, 2019 में ये मामले 29 थे जो 2020 में बढ़ कर 59 तक पहुँच गए, पर वैश्विक स्तर पर इन दोनों देशों में इस पोलीयो वायरस के मामले 176 से घटकर 140 रह गए। ''यह 20 प्रतिशत की गिरावट है। और अगर आप कोरोना महामारी के इस वर्ष की चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में देखें तो मेरे लिए यह एक चमत्कार ही है।''

लेकिन दुर्भाग्य से, 28 देशों से आई रिपोर्ट के अनुसार वैक्सीन से व्युत्पन्न पक्षाघात के 1,000 मामले पाए गए थे।

उन्होंने कहा कि हमारे पास हर्षित होने का कारण है, अगर भारत और पाकिस्तान में पोलियो के मामलों का तुलनात्मक विश्लेषण करें, तो 2009 से भारत में 10 साल से कोई भी मामला सामने नहीं आया है। 2009 में, भारत में लगभग 700 पोलियो

रुखसार खातून, भारत में पोलियोवायरस से ग्रसित आखिरी छोटी बच्ची।

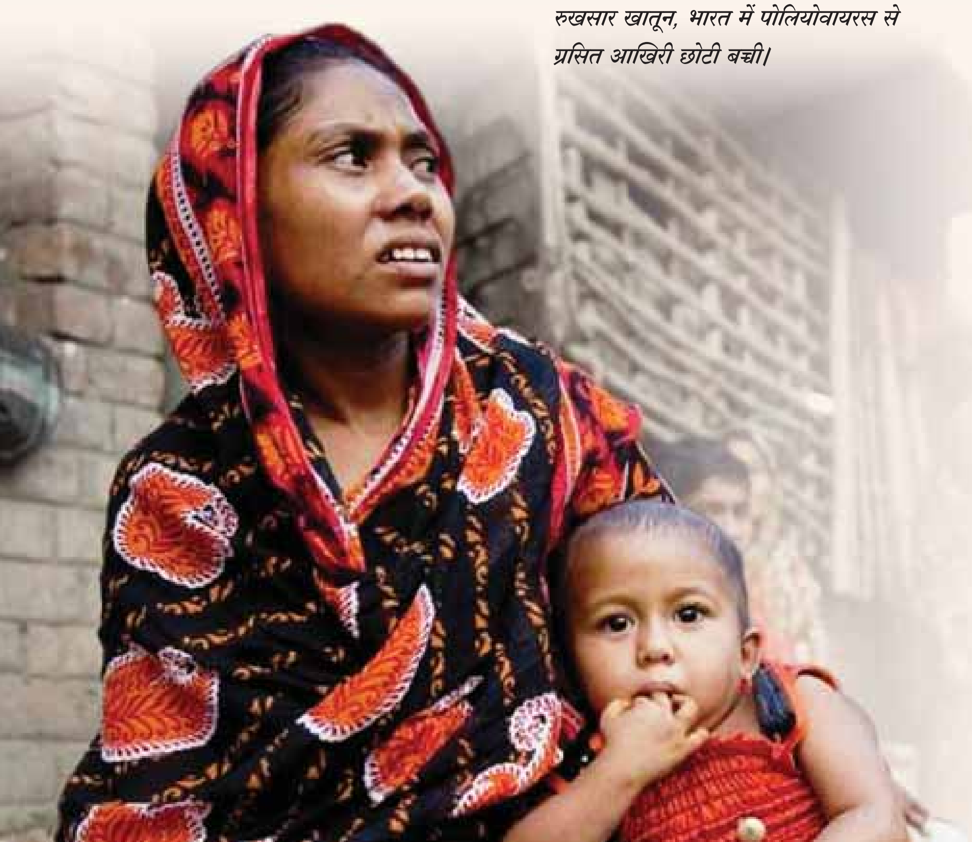

हम निरंतर, धैर्यपूर्वक काम कर रहे हैं, इसके लिए हमने बहुत कुछ दिया है ...इसकी 10 वीं सालगिरह मनाने के लिए आप सभी को धन्यवाद, जो आपने भी यह सुनिश्चित किया कि भारत की अंतिम पोलियो रोगी रुखसार ही रहेगी।

IPPC चेयर माइक मेकगवर्न

2011-12 में रो ई अध्यक्ष रहते हुए भारत को पोलियो मुक्त करना संभवतः मेरी सबसे यादगार उपलब्धि रही। रोटेरियनों ने सरकार के साथ मिल कर यू पी और बिहार जैसे कठिन राज्यों के दूर दराज क्षेत्रों में, जिन जगहों तक पहुँचने के लिए नदियों पर पुल नहीं थे वहाँ नाव की सहायता से पहुंचे, दुर्गम पहाड़ों पर चढ़े, मगरमच्छों और बाघों का जोखिम उठा कर कार्य किया ... और फिर वो चमत्कार हुआ जिसकी आशा किसी को नहीं थी!

PRIP कल्याण बेनर्जी

दाएं से: RIPE शेखर मेहता, पूर्व IPPC अध्यक्ष रॉबर्ट स्कॉट, INPPC अध्यक्ष दीपक कपूर, PRIP कल्याण बेनर्जी और स्वर्गीय PRID वाई पी दास। (फाइल फोटो)

रोगी थे, लेकिन 2010 में केवल 40 रह गए थे और जनवरी 2011 में, पश्चिम बंगाल में हावड़ा की रहने वाली रुखसार खातून, भारत की अंतिम रोगी थी। ''2017 में, पाकिस्तान का परिदृश्य करीब करीब भारत के 2004-05 जैसा ही था, पहले तो पोलियो के मामलों में काफी कमी आ गई, फिर अचानक से इसमें वृद्धि दर्ज की गई थी।''

2019 में पाकिस्तान में भी ऐसा ही हुआ। ''लेकिन TRF ट्रस्टी अजीज मेमन के नेतृत्व में, पाकिस्तान ने लड़ना जारी रखा, वही हुआ जो भारत में हमने देखा था। जहां पूरे वर्ष के दौरान उस देश में 80 रोगी पाए गए थे, वहीं पिछले छह महीनों में यह संख्या घटकर 24 रह गई, और पिछले तीन महीनों में, मामले 4 से 2 और 2 से गिरकर शून्य हो गए और 2021 में अभी तक कोई भी मामला दर्ज नहीं हुआ है। यह वास्तव में एक शुभ संकेत है, पाकिस्तान पोलियो उन्मूलन के लिए अत्याधिक प्रयास कर रहा है।''

राष्ट्रपति भवन, दिल्ली में भारत के राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद एक बच्चे को पोलियो ड्रॉप पिलाते हुए।

अफगानिस्तान के बारे में, आईपीपीसी अध्यक्ष ने कहा ''हमारी चुनौती उन क्षेत्रों में हैं जो सरकार विरोधी तत्वों के नियंत्रण में हैं। दो साल से वो क्षेत्र घर-घर टीकाकरण के लिए नहीं खोले गए। विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ दोनों ही तालिबान से इस सम्बन्ध में बात कर रहे हैं और जल्द ही हम इसमें प्रगति की आशा करते हैं। हमारे पास कुछ अच्छी खबरें ज़रूर हैं, लेकिन अभी तक इनकी पुष्टि नहीं हुई है। सच तो ये है कि जब तक वे क्षेत्र हमारी पहुँच के बाहर रहेंगे, हमें पोलियो से निजात नहीं मिलेगी। कोविड ने हमें चुनौती दी लेकिन साथ ही अवसर भी दिए और पहले से मौजूद हमारे पोलियो नेटवर्क की सहायता से कोविड-19 पर निगरानी रखने में, प्रयोगशाला, इत्यादि से काफी मदद मिली।''

लेकिन अन्य संगठनों द्वारा कोविड की जिम्मेदारी उठाने के साथ ही, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में घर-घर पोलियो टीकाकरण अभियान पुनः आरम्भ हो गया। अफ्रीकी क्षेत्रों और अन्य जगहों पर वैक्सीन से उपजे मामलों पर भी ध्यान दिया गया। ''लगभग 1,000 वैक्सीन-व्युत्पन्न मामले पाया जाना चिंता का विषय हैं क्योंकि वे मामले वाइल्ड पोलीयो वायरस मामलों के समान ही पक्षाघात का कारण बन सकते हैं। एक नए वैक्सीन नोवेल ओरल पोलियो वैक्सीन 2

रोटरी के EndPolio कार्यक्रम का प्रभाव

चार्ट और तथ्यों की एक संक्षिप्त श्रृंखला के माध्यम से, आईपीसीसी अध्यक्ष माइक मेकगवर्न ने दुनिया भर में पोलियो उन्मूलन पर रोटेरियन द्वारा किए गए कार्यों के प्रभाव को सरल भाषा में परिभाषित किया था।

- आज 19 मिलियन लोग पृथ्वी पर चल रहे हैं, जो अन्यथा पोलियो वायरस के कारण लकवाग्रस्त हो सकते थे
- हर साल अनुमानित 650,000 रोगी इस की चपेट में आने से बच रहे हैं।
- 1988 से अभी तक तीन बिलियन बच्चों को मौखिक पोलियो ड्रॉप्स दिए गए हैं।
- 2019 में, 40 मिलियन से अधिक देशों में 430 मिलियन बच्चों को पोलियो वैक्सीन दिया गया, जिसमें 1.2 बिलियन खुराक में मौखिक पोलियो वैक्सीन का उपयोग किया गया,
- पिछले चार साल से अफगानिस्तान और पाकिस्तान के अलावा इस दुनिया में वाइल्ड पोलियो वायरस का एक भी रोगी दिखाई नहीं दिया है ।
- रोटरी ने पोलियोप्लस कार्यक्रम के माध्यम से अन्य टीका निवारणीय रोगों में सुरक्षात्मक सहायता की है और इबोला और कोविड -19 दोनों से निपटने में विश्व की सहायता की है।

(nOPV 2) पर प्रयोग चल रहे हैं, जो आनुवांशिक रूप से अधिक संतुलित है। नैदानिक परीक्षणों में उत्साहजनक परिणाम मिले हैं और हमें उम्मीद है कि यह सफल रहेगा।'' मेकगवर्न ने कहा।

''इस काम को अपने सहयोगियों के साथ करने और दुनिया की सरकारों से वकालत करने की आवश्यकता'' पर ज़ोर देते हुए, उन्होंने एक स्क्रीनशॉट साझा किया जिसमें भारत के राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद पिछले महीने राष्ट्रपति भवन में एक बच्चे को पोलियो ड्रॉप्स देते हुए नज़र आ रहे थे, और महामारी शुरू होने से ठीक पहले, रो ई अध्यक्ष होल्गर नैक और टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष के आर रवींद्रन ने टीआरएफ ट्रस्टी अजीज मेमन के साथ पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान से मुलाकात की थी और पाकिस्तान में पोलियो उन्मूलन कार्य में हुई प्रगति पर चर्चा की थी।

सरकारों के साथ की गई वकालत बहुत मदद करती है, और रोटरी द्वारा की गई वकालत और प्रयासों के लिए धन्यवाद है, जिसकी वजह से यूके, यूएस, जापान, मोनाको, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया की सरकारों ने इस कार्यक्रम के लिए एक महत्वपूर्ण राशि का योगदान दिया है।

रोटेरियनों से वैक्सीन व्युत्पन्न मामलों को रोकने के लिए आग्रह किया और ''जैसा कि मैं कहता हूं, *शॉट इन द आर्म,* टीका लगवाने के लिए प्रोत्साहित करें, मेकगवर्न ने कहा कि ''रोटेरियनों को बच्चों के माता पिता से अपने बच्चों को टीका लगवाने के लिए लगातार प्रयास करना होगा। दुनिया के सभी बच्चों के प्रति ये हमारा दायित्व है। हम निरंतर, धैर्यपूर्वक काम कर रहे हैं, इसके लिए हमने बहुत कुछ दिया है ...इसकी 10 वीं सालगिरह मनाने के लिए आप सभी को धन्यवाद, जो आपने भी यह सुनिश्चित किया कि भारत की अंतिम पोलियो रोगी रुखसार ही रहेगी।''

सभा को संबोधित करते हुए, PRIP कल्याण बेनर्जी ने कहा कि पोलियो-मुक्त भारत के एक दशक पूर्ण होने पर जश्न मनाना ही चाहिए। ''मैंने 1960 और 1970 के दशक में खसरा और पोलियो जैसी बीमारियों को नियंत्रित करने और इनके उन्मूलन में लगे रहने के लिए रोटरी क्लब मद्रास की सदैव प्रशंसा की है, उस समय क्रिश चितले इन प्रयासों का नेतृत्व कर रहे थे।'' वो बॉब स्कॉट और मेकगवर्न के साथ IPPC में थे। ''उस अवसर को पाकर हम सभी खुश थे और जो कुछ भी बन पड़ा हमने किया।

बेनर्जी ने पीडीजी और नाइजीरिया पोलियोप्लस कमेटी के चेयरमैन तुनजी फुनशो का जिक्र करते हुए, जिन्होंने *Time 2020* की दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में जगह बनाई थी, उन्होंने

भारत से पोलियो का सफाया किसी चमत्कार से कम नहीं है, लेकिन किसी भी आकलन से अनुमान लगाएं तो भी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को कम से कम 400 मिलियन डॉलर का फायदा तो हुआ ही है। कोई भी व्यक्ति रोटरी को धन सर्जक के रूप में नहीं पहचानता, लेकिन रोटरी ने काम तो यही किया है!

वायरोलॉजिस्ट जैकब जॉन

गेट्स फाउंडेशन से 1 मिलियन डॉलर का पहला अनुदान

टीआरएफ के पूर्व ट्रस्टी अध्यक्ष और पूर्व आईपीसीसी अध्यक्ष बॉब स्कॉट का परिचय करवाते हुए, रोटरी क्लब मद्रास के पूर्व अध्यक्ष एनके गोपीनाथ ने बताया कि कई साल पहले, जब स्कॉट जापान में एक पोलियोफंड जुटाने के लिए आयोजित रात्रिभोज पर आमंत्रित थे, उनके साथ तत्कालीन रो ई अध्यक्ष विल्फ विल्किंसन, वर्तमान आईपीसीसी अध्यक्ष माइक मेकगवर्न और यूनिसेफ, डब्ल्यूएचओ के प्रतिनिधि साथ ही बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के ट्रस्टि मौजूद थे ''बॉब को गेट्स फाउंडेशन से एक बहुत ही महत्वपूर्ण कॉल आई जिसने ये पुष्टि की कि 100 मिलियन डॉलर की पहली किश्त टीआरएफ के खाते में इलेक्ट्रॉनिक रूप से पहुँच चुकी है। इस की घोषणा बॉब ने की और सफलता की कामना के साथ ग्लास उठा कर टोस्ट किया था।''

यह गेट्स फाउंडेशन के साथ रोटरी संबंधों की शुरुआत थी और जैसा कि आप जानते हैं, मेकगवर्न ने अभी बैठक में घोषणा की थी, पिछले सप्ताह में पोलियो फंड में उनका कुल योगदान 1 बिलियन डॉलर को पार कर गया है!

कहा: ''वह नाइजीरिया के टीकाकरण अभियान के हीरो में से एक हैं और इसे पोलियो मुक्त करने में मदद कर रहे हैं। मैं उन्हें सन 2000 से जानता हूं, जब मैं रो ई अध्यक्ष प्रतिनिधि के रूप में उनकी डिस्ट्रिक्ट कांफ्रेंस में गया था।''

उन्होंने स्मरण किया कि टीआरएफ ट्रस्टी के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान, ''जब नाइजीरिया में एक नए राष्ट्रीय पोलियोप्लस अध्यक्ष की आवश्यकता थी, तो उस समय मैं दोनों पूर्व रो ई अध्यक्ष राजा साबू और जोनाथन माजियाबे के संपर्क में था और

उनसे तुनजी की कई योग्यताओं के बारे में चर्चा की और फिर उन्हें नाइजीरिया का अध्यक्ष बनाने के लिए टीआरएफ अध्यक्ष विल्फ विल्किंसन को राजी किया। और उन्होंने तो पासा ही पलट दिया, एक संकटग्रस्त राष्ट्र में बोको हराम चरमपंथियों की समस्या से लेकर इबोला बीमारी तक कई समस्याओं को अत्यंत विषम परिस्थितियों में कुशलतापूर्वक सुलझाया। और उस ज़िम्मेदारी का निर्वहन उन्होंने सफलतापूर्वक किया।''

बेनर्जी ने कहा कि ''2011-12 में रो ई अध्यक्ष के रूप मेरी सबसे यादगार उपलब्धि, उस वर्ष भारत को पोलियो मुक्त करने के लिए उसका नेतृत्व कर रहा था। हमारे उत्साही और युवा रोटेरियनों ने सरकार के साथ मिल कर यूपी और बिहार के दूरवर्ती क्षेत्रों में जा कर, जो सबसे कठिन राज्य थे, हमने कार्य संपन्न किया। मुझे याद है कि जिन जगहों तक पहुँचने के लिए नदियों पर पुल नहीं थे हमने नाव से पार किया, दुर्गम पहाड़ों पर चढ़े वो भी मगरमच्छों और बाघों दोनों का जोखिम उठा कर ... हाँ, वास्तव में बाघ, ... और फिर एक ऐसा चमत्कार हुआ जिसकी कल्पना किसी ने भी नहीं की थी!''

इंडियन नेशनल कमिटी के अध्यक्ष पीडीजी दीपक कपूर द्वारा किये गए उत्कृष्ट कार्यों के अलावा, ''हमारे पास एक अद्भुत व्यक्ति डॉ जैकब जॉन का मार्गदर्शन भी था, जो समय समय पर हमें सलाह देते रहते थे कि काम कैसे किया जाए।'' भारत सरकार इतनी खुश हुई कि उन्होंने न केवल रोटरी की मदद और भूमिका को स्वीकार किया बल्कि भारत के स्वास्थ्य मंत्री व्यक्तिगत रूप से हमें धन्यवाद देने के लिए इवान्स्टन आए थे। बेनर्जी ने कहा कि ''आज उन के सानिध्य में उन शानदार पलों को याद करना एक अद्भुत अनुभव है, जिन्होंने हमारे उस प्रयास में हमारा नेतृत्व किया था।''

बॉब स्कॉट ने बताया कि वो और उनकी पत्नी पहली बार जनवरी 1988 में रोटरी क्लब मद्रास आये थे। उसके बाद एक बार फिर भारत आने के दौरान, उनका हावड़ा जाना हुआ था और तब ''रुखसार से मिलना हुआ था जब वो एक छोटी बच्ची थी और सिर हिला हिला कर रो रही थी मानो उसे इस लम्बे और गोरे व्यक्ति द्वारा गोदी में लिया जाना पसंद नहीं हो!''

उन्होंने पूर्व अध्यक्ष एस एन श्रीकांत से कहा, ''जब आपने पहली बार मुझे IPCC अध्यक्ष के रूप में दुनिया भर में EndPolio की मशाल ले जाने के लिए संपर्क किया था, तो एक सतर्क व्यक्ति होने की वजह से, मैं थोड़ा झिझक रहा था, लेकिन आप भी लगातार प्रयास करते रहे और मुझे राजी करके ही माने। वह मशाल आज दुनिया भर में प्रज्जवलित हो रही है, जिसमें कनाडा का मेरा क्लब भी शामिल है

जहाँ हमने एक विशेष रात्रिभोज का आयोजन किया था और कुछ धनराशि जुटाई थी।''

प्रख्यात वायरोलॉजिस्ट डॉ जैकब जॉन ने कहा कि भारत से पोलियो का सफाया किसी चमत्कार से कम नहीं है, लेकिन किसी भी आकलन से अनुमान लगाएं तो भी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को कम से कम 400 मिलियन डॉलर का फायदा तो हुआ ही है। कोई भी व्यक्ति रोटरी को धन सर्जक के रूप में नहीं पहचानता, लेकिन रोटरी ने काम तो यही किया है!

डॉ फुनशो ने साबू और बेनर्जी दोनों को जो ''मेरे नाइजीरिया पॉलिओप्लस समिति का अध्यक्ष बनने से भी काफी पहले से अफ्रीका के मित्र रहे हैं'' अफ्रीका को वाइल्ड पोलीयो वायरस से बचाने में उनकी हर मदद के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि ''2016 में नाइजीरिया को पोलियो मुक्त करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, हमें सलाह देने में भारत के रोटेरियनों ने बड़ी भूमिका निभाई है। हमारी पीठ पर साबू और बेनर्जी दोनों का हाथ था, जब भी हमने आवाज़ दी, अपनी शल्य चिकित्सकों

पोलियो फंड किस प्रकार खर्च किए जाते हैं

आईपीपीसी के अध्यक्ष माइक मेकगवर्न ने कहा कि रोटरी द्वारा खर्च किये गए पैसे और क्षेत्रवार धनराशि आवंटित किये जाने के सम्बन्ध में, पारदर्शी होने के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि हाल ही में टीआरएफ ट्रस्टियों ने एंड पोलियो कार्यक्रम के लिए 100 मिलियन डॉलर के आवंटन को मंजूरी दी थी। जुलाई 2021 में अतिरिक्त 50 मिलियन और आवंटित किये जाएंगे। अफ्रीका, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में इसकी लगभग 45 प्रतिशत धनराशि खर्च की जा रही है, जो कि बहुत महत्वपूर्ण और संवेदनशील क्षेत्र हैं, और बजट का 25 प्रतिशत टीकाकरण पर खर्च किया जाता है। जून 2021 के अंत तक, 150 मिलियन डॉलर खर्च किए जा चुके होंगे।

''लेकिन 36 साल पहले 1985 में जब हमने इसकी शुरुआत की थी, तब से आज तक खर्च हुए पैसे? पाकिस्तान के लिए हमने 291 मिलियन (13 प्रतिशत) खर्च किए; नाइजीरिया में 282 मिलियन डॉलर (12 प्रतिशत); WHO-AFRO के लिए 230 मिलियन डॉलर (10 फीसदी), अफगानिस्तान में 207 मिलियन (9 फीसदी) और भारत में 181 मिलियन डॉलर (8 फीसदी) हैं।''

1985 से पोलियो उन्मूलन पर खर्च किए गए 3 बिलियन डॉलर में से, रोटरियनों ने 2 बिलियन एकत्रित किये थे जबकि हाल ही में गेट्स फाउंडेशन का योगदान 1 बिलियन को पार कर गया था।

रोटरी क्लब मद्रास के सदस्य, क्रिस चितले, एक रोटरी बैठक को संबोधित करते हुए; तत्कालीन तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री डॉ एच वी हांडे बाएं से दूसरे स्थान पर बैठे हैं।

*रो ई अध्यक्ष गैरी हुआंग 2015 में साओ पाउलो कन्वेंशन में पोलियो फ्लेम के साथ। **बाएं से:** पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, कोरीना, रोटरी क्लब मद्रास के अध्यक्ष एस एन श्रीकांत और सचिव एन के गोपीनाथ।*

की टीम के साथ पोलियो की सुधारात्मक सर्जरी के लिए वो हाज़िर हो जाते थे।''

रोटरी क्लब मद्रास के अध्यक्ष कपिल चितले ने गर्व से घोषणा की, कोविड -19 टीकाकरण कार्यक्रम के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के लिए उनके क्लब को तमिलनाडु के स्वास्थ्य विभाग के साथ साझेदारी में काम करने और सहायता के लिए नोडल क्लब के रूप में चुना गया था ।

मेकगवर्न के साथ प्रश्नोत्तर सत्र का संचालन पूर्व अध्यक्ष श्रीकांत ने किया और उनके अध्यक्ष वर्ष के दौरान क्लब द्वारा शुरू किए गए EndPolio मशाल कार्यक्रम की एक वीडियो फिल्म चलाई और इस उद्यम में उनकी मदद और सहयोग करने के लिए उन्होंने पूर्व अध्यक्ष गोपीनाथ को धन्यवाद दिया। यह फिल्म रो ई के साओ पाओलो कन्वेन्शन में दिखाई गई थी और अभी तक 35 देशों का दौरा कर चुकी इस फिल्म ने पोलियो समाप्त करने के लिए 10 मिलियन डॉलर से अधिक एकत्रित करने में मदद की है। रोटरी क्लब मद्रास के अग्रणी मार्गदर्शकों के प्रयासों को याद करते हुए, जिन्होंने लाल खसरा और पोलियो उन्मूलन अभियान का नेतृत्व किया था, कोल्ड चेन की चुनौतियों का सामना करने के लिए कहते हुए वो बोले कि इस राज्य के रोटरियनों को धन्यवाद है, तमिलनाडु भारत में पोलियो मुक्त होने वाला पहला राज्य था।

11 वर्षिय रुखसार खातून शाहपारा गाँव, हावड़ा में अपने घर पर।

उस ज़ूम इवेंट में सभी की आँखों तारा रुखसार रही, जो अब एक किशोरी हो चुकी है। क्लब के अध्यक्ष चितले ने घोषणा की कि पोलियो मुक्त भारत की 10 वीं वर्षगांठ के अवसर पर, क्लब ने उसे एक टैबलेट भेंट किया है, जो उसके पास भेजा जाएगा। बैठक में RIDE ए एस वेंकटेश, TRF ट्रस्टी अज़ीज मेमन और गीता मानेक और PRID पी टी प्रभाकर ने भाग लिया।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी क्लब मद्रास को कोविड टीकाकरण के लिए केन्द्रीय क्लब चुना गया

रशीदा भगत

रोटरी क्लब मद्रास (RCM), रो ई मंडल 3232, को तमिलनाडु सरकार द्वारा राज्य में कोविड टीकाकरण के कार्य में सहायता करने हेतु केन्द्रीय क्लब के रूप में चुना गया है।

क्लब के अध्यक्ष कपिल चिताले को लिखे एक पत्र में, तमिलनाडू स्वास्थ्य सचिव जे राधाकृष्णन ने कोविड-19 टीके की खुराक की खरीदी और वितरण में सरकार की सहायता करने के लिए क्लब को आमंत्रित किया। क्लब से टीके के उचित भंडारण हेतु कोल्ड चेन की आवश्यकता की पूर्ति हेतु मदद करने और साथ ही साथ वास्तविक टीकाकरण कार्यान्वयन और इस विशाल सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के संचालन में सहायता करने का अनुरोध कीय गया।

बाएं से : रोटेरियन डॉ अनुराधा गणेशन, रोटेरियन डॉ गौतमदास उडिपी ; तमिल नाडु स्वास्थ्य सचिव डॉ जे राधाकृष्णन, रोटेरियन विवेक हरिनारायण और रोटरी क्लब मद्रास के अध्यक्ष कपिल चितले।

यह याद रखने योग्य बात है कि रोटरी क्लब मद्रास ने 1980 और 90 के दशक में अपने पूर्व अध्यक्ष और चेन्नई के प्रख्यात वास्तुकार एस एल चितले (जिन्हें क्लब में क्रिस चितले के रूप में जाना जाता था) के नेतृत्व में कुछ उत्साही रोटेरियनों के एक समूह के साथ विदेशों से आने वाले पोलियो के टीके को उचित तापमान में रखकर उसकी गुणकारिता को बनाए रखने के लिए जमीन आसमान एक करके एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

यह सब इन रोटेरियनों एवं तमिलनाडु के अन्य रोटरी क्लबों के रोटेरियनों और अन्य लोगों द्वारा किए गए कार्यों की वजह से, एवं तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डॉ एच वी हांडे की अध्यक्षता में तमिलनाडू स्वास्थ्य विभाग के साथ घनिष्ठ रूप से समन्वित साझेदारी, साथ ही सीएमसी, वेल्लोर, में वायरोलॉजी के प्रोफेसर डॉ जैकब जॉन द्वारा लगातार दी गई सलाह की वजह से संभव हो पाया कि तमिलनाडु भारत का पहला पोलियो-मुक्त राज्य बना, जैसा कि भारत के पोलियो-मुक्त होने की 10वीं वर्षगांठ का जश्न मनाने के लिए हाल ही में आयोजित किए गए एक कार्यक्रम में इसके सदस्यों में से एक ने बताया।

दिलचस्प रूप से, तमिलनाडु उन राज्यों में से भी एक है जहाँ अग्रिम पंक्ति के स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा आगे आकर कोविड-19 का टीका लगवाने को लेकर प्रतिरोध देखने को मिल रहा है। 2000 के दशक के प्रारंभ में, महाराष्ट्र और यूपी सहित भारत के कुछ सबसे पिछड़े क्षेत्रों, जहाँ पोलियो के टीके की बूंदों के बारे में बहुत सारी गलत धारणाएं थी, में पीआरआईडी अशोक महाजन के नेतृत्व में रोटरी के पक्ष समर्थन के प्रयासों के परिणामस्वरूप माता-पिता भी टीके के लिए राज़ी हो गए थे। रोटरी को तब स्थानीय उलेमाओं और अन्य धार्मिक हस्तियों का समर्थन प्राप्त हुआ। महाजन याद करते हुए कहते है: मैंने सभी धर्मगुरुओं से स्पष्ट रूप से पूछा था कि 'क्या आप हमारे बच्चों को पोलियो जैसी गंभीर बीमारी से बचाने में हमारा साथ देंगे?' और उन्होंने सर्वसम्मति से 'हां' कहा था।

तमिलनाडू सरकार के साथ-साथ अन्य राज्य सरकारें भी कोविड टीकाकरण के लिए सीएसआर फंड जुटाने हेतु रोटरी की ओर देख रही है और ''हम ऐसा करने के लिए बहुत मेहनत करेंगे'', महाजन ने आगे कहा।

RCM अध्यक्ष चितले ने आगे कहा कि कोविड टीकाकरण हेतु तमिलनाडु का केन्द्रीय क्लब होने के नाते, ''हम जल्द ही रो ई मंडल 3232 के अन्य क्लबों और राज्य के अन्य मंडलों के डीजीयों के साथ कार्य योजना तैयार करेंगे। हमारे पूर्व अध्यक्ष विवेक हरिनारायण के प्रयासों की बदौलत ही यह साझेदारी संभव हो पाई है।'' ■

चुनौती और अवसर

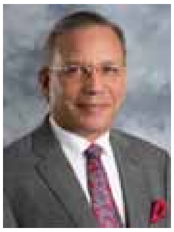

एक वर्ष पूर्व इसी महीने में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड-19 को महामारी घोषित किया था। जब मैं इस लेख को लिख रहा हूँ, बढ़ती मौतें, चौपट अर्थव्यवस्थाएं, और असंख्य तरीकों में हमारे समाजों में बदलाव लाते हुए कोरोनावायरस का कहर जारी है। इसने गरीबों को असंगत रूप से ठेस पहुंचाई है और असमानताओं को बदतर बनाया है।

जहाँ कुछ देशों ने अन्य देशों की अपेक्षा इस घातक बीमारी को नियंत्रित करने में बेहतर प्रदर्शन किया है, वहीं टीकों का तेज़ विकास हमें सामाजिक अलगाव की नवीन किन्तु अजीब वास्तविकता के अंत के करीब ला रहा है।

हमारे इतिहास में यह काला अध्याय भी रोटरी के लिए एक अवसर है, क्योंकि यह हमें उस प्रभाव की याद दिलाता है जो हम रोटरी संस्थान के माध्यम से ला सकते है दूसरों की मदद करके और हमारे सर्वोच्च आदर्शों के मुताबिक आचरण करके। यह हमें उस वास्तविक अंतर्राष्ट्रीय भावना की याद दिलाता है जिसे हमें इस पल से उबरने के लिए अपनाना चाहिए।

कोविड-19 महामारी के दौरान, हमने करुणा और बलिदान, दोस्ती और परिहास देखा है। मुझे जॉन एफ कैनेडी का प्रसिद्द कथन याद आ रहा है: ''जब संकट शब्द चीनी में लिखा जाता है तो यह दो शब्द से मिलकर बना होता है: एक खतरे का संकेतक है, और दूसरा अवसर का।''

एक साथ काम करते हुए, हमने कोविड-19 महामारी के अनुकूल होने, अपने समुदायों की देखभाल करने और इतिहास में किए गए शायद सबसे जटिल कार्य का हिस्सा बनने के अवसर का लाभ उठाने के लिए बहुत कुछ किया है - 7 बिलियन लोगों का टीकाकरण।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम पोलियो के उन्मूलन हेतु की गई अपनी प्रतिबद्धता से किसी भी तरह से विचलित होंगे, जो हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है और यह हमारा एकमात्र कॉर्पोरेट कार्यक्रम बना रहेगा ।

इसके विपरीत, पोलियो टीकाकरण और निगरानी जारी रखते हुए, हम कोविड-19 का मुकाबला करने के लिए पोलियो से लड़ने के अपने सभी अनुभवों की मदद ले सकते हैं। वैक्सीन का प्रबल रूप से हो रहे विरोध और गलत सूचना को फैलने से रोकने के लिए हम सभी को अपनी भूमिका निभानी है। हमारे समुदायों में हमारी बात महत्वपूर्ण होगी-हमें जान बचाने के लिए टीकों की शक्ति के बारे में संदेश फैलाने की जरूरत है। हमें सरकारों के साथ मिलकर काम करने और टीकाकरण अभियान में उनका समर्थन करने की आवश्यकता है। हमें जागरूकता बढ़ाने, महत्वपूर्ण व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण देने और सीमावर्ती स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का समर्थन करने के लिए रोटरी शोकेस पर पहले से पंजीकृत 3000 से अधिक परियोजनाओं में और अधिक को जोड़ने की आवश्यकता है।

जैसा कि अरस्तू ने कहा, मनुष्य सामाजिक जीव है, और जहाँ कोविड-19 ने हमें हमारे प्राकृतिक या अभ्यस्त वातावरण से बुरी तरह से वंचित कर दिया, वहीं यह हमें संपर्क स्थापित करने और दूसरों की मदद करने के नए तरीके खोजने से नहीं रोक सका। जैसा कि आप आने वाले महीनों में देखेंगे, रोटरी के सदस्य पहले से ही संस्थान के माध्यम से अपनी मानवीय भावना को प्रसारित करने का साधन ढूंढ रहे है, जो दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए लगातार अनुकूल बन रहा है। इस प्रयास में प्रत्येक रोटेरियन की अपनी भूमिका है और आप देखेंगे कि यदि आप दूसरों की मदद करना और स्थायी परिवर्तन लाना चाहते है तो आप अकेले नहीं हैं।

Ravi

के आर रवींद्रन
फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

रूखसार के लिए साइकिल

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी मंडल 3291, हावड़ा के रोटरी क्लब ने अध्यक्ष डॉ पामेला घोष की अगुवाई में रूखसार खातून को एक साइकिल भेंट की, जो 2011 में पोलिया की चपेट में आने वाला आखरी बच्चा था, इसके बाद 2014 में डब्ल्यूएचओ द्वारा भारत और पूरे दक्षिण पूर्व एशिया को पोलिया मुक्त घोषित कर दिया गया था।

''हमने पोलियो के खिलाफ बच्चों का टीकाकरण जारी रखने के लिए लोगों में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से रूखसार के पैतृक गांव शाहपारा का दौरा किया। वह 18 महीने की थी जब पोलिया ने उसे अपनी चपेट में ले लिया था और वह गहन फिजियोथेरेपी चिकित्सा द्वारा ठीक हुई, पहले उस समय गांव को अस्वच्छ और वैक्सीन-प्रतिरोधी जाना जाता था'' क्लब की सचिव ज्योति भट्टाचार्य ने बताया।

इस उपहार से बच्ची को स्कूल आने-जाने में मदद मिलेगी जो अब 11 साल की है। ■

रोटरी क्लब हावड़ा की अध्यक्ष पामेला घोष और सचिव जोयती भट्टाचार्य (दाएं) के साथ रुखसार खातून।

चमत्कार होते हैं, इसी तरह भारत ने पोलियो के खिलाफ जंग जीती

राजेन्द्र साबू

एक ऐसे समय में जब दुनिया कोविड-19 से लड़ रही है, पोलियो वायरस के उन्मूलन की कहानी यह उम्मीद देती है कि मानव जाति हर कीमत पर प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करेगी। इस साल 13 जनवरी को, भारत ने पोलियो से उन्मूलित होने के दस साल पूर्ण होने का जश्न मनाया, इसी तारीख को 2011 में हावड़ा की दो वर्षीय रुखसार के इस बीमारी से ग्रसित होने वाली आखिरी मरीज होने का पता चला था।

उसके लिए हमने बहुत देर कर दी थी लेकिन उसके बाद भारत एक पोलियो मुक्त देश का दर्जा हासिल करने की राह पर था। 2012 में, भारत सरकार और रोटरी ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में पोलियो शिखर सम्मेलन का आयोजन किया और उद्घाटन से ठीक पहले, विश्व स्वास्थ्य संगठन, जिनेवा से ब्रूस आयलवर्ड ने मंच पर आकर घोषणा की कि भारत को पोलियो स्थानिक देशों की सक्रिय सूची से हटा दिया गया है।

26 मार्च 2014 को थकज द्वारा प्रमाणित करते हुए भारत को पोलियो मुक्त घोषित किया गया। यही कारण है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य ऐतिहासिक कैलेंडर में 13 जनवरी एक यादगार दिन है। यह अनुमान लगाया गया था कि 1988 में, भारत में हर दिन 450 बच्चे पोलियो से प्रभावित होते थे। पोलियो वायरस के संपर्क में आने वाले 200 में से केवल 1 बच्चा लकवाग्रस्त था। अन्य 199 निरोगी पाए गए। विशेषज्ञों की राय यह थी कि पोलियो उन्मूलन के लिए भारत दुनिया का आखिरी देश होगा (यहाँ तक कि 2002 तक में), क्योंकि यहाँ 5 साल से कम उम्र के 170 मिलियन बच्चों की विशाल संख्या, जनसंख्या घनत्व, अस्वास्थ्यकर परिस्थिति, पीने का अशुद्ध जल, और आंत संबंधी रोग आदि थे।

भारत को एक लंबे संघर्ष के बाद पोलियो विजय हासिल हुई थी।

80 के दशक में दुनिया के 122 देशों में पोलियो से प्रभावित 3,50,000 बच्चों के बाद, डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ, सेंटर फॉर डिसीज़ एंड प्रिवेंशन (सीडीसी), बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन और पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान को छोड़कर कई सहयोगियों के साथ रोटरी की वैश्विक साझेदारी के कारण दुनिया पोलियो मुक्त है। अफगानिस्तान और पाकिस्तान को छोड़कर, दुनिया अब तक पोलियो से मुक्त है। रोटरी ने दुनिया भर के देशों के 2.5 बिलियन से अधिक बच्चों का टीकाकरण करने के लिए अनगिनत स्वयंसेवी संघठनों के साथ 1.7 बिलियन डॉलर से अधिक का योगदान दिया है।

रोटरी के पक्ष समर्थन प्रयासों ने भी दानदाता सरकारों द्वारा इस प्रयास में 7.2 बिलियन डॉलर से अधिक जोड़ने के निर्णयों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

यह सब 1977 में शुरू हुआ जब सर क्लेम रेनॉफ, जिन्हें रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया था, ने *रीडर्स डाइजेस्ट* में बड़ी माता के उन्मूलन पर छपे एक लेख को पढ़ा। इसने उन्हें दुनिया के सामने मौजूद एक अन्य स्वास्थ्य चुनौती को स्वीकार करने हेतु प्रेरित किया। अनेक स्वास्थ्य एजेंसियों से चर्चा के बाद, पोलियो को दुनियाभर के बच्चों के लिए सबसे बड़ा खतरा समझा गया।

1979 में, रोटरी ने डॉ अल्बर्ट साबिन द्वारा विकसित OPV (ओरल पोलियो वैक्सीन) की छह मिलियन खुराक प्राप्त करके

फिलीपींस में पोलियो प्रतिरक्षण अभियान की शुरुआत की और उस देश में छोटे बच्चों की कुल आबादी का टीकाकरण किया। प्रोत्साहित होकर रोटरी ने इस खतरनाक बीमारी से दुनिया को मुक्त करने के लिए इस कार्यक्रम को अपनाया।

1988 में विश्व स्वास्थ्य सभा द्वारा सभी देशों को इस लड़ाई में शामिल होने हेतु राजी करने के बावजूद भारत में कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए। राज्यसभा के तत्कालीन महासचिव और रोटरी के वरिष्ठ नेता स्वर्गीय सुदर्शन अग्रवाल ने संसद के कुछ सदस्यों को दोनों सदनों में यह सवाल पूछने हेतु प्रेरित किया कि भारत पोलियो उन्मूलन में क्यों पिछड़ रहा है जबकि कई देश बहुत आगे निकल चुके है।

उचित श्रेय वर्तमान केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ हर्षवर्धन को जाना चाहिए जिन्होंने अपने योगदान से पोलियो आंदोलन की दिशा बदल दी। यह एक ऐसा कारक था जिसने भारत को अपने उन्मूलन लक्ष्य तक पहुंचने में मदद की। 1994 से पहले भारत सरकार के स्तर पर नौकरशाही राष्ट्रीय प्रतिरक्षण दिवस (एनआईडी) की रणनीति में विश्वास नहीं करती थी जिसे चीन और ब्राजील जैसे बड़े आबादी वाले देशों सहित अन्य देशों द्वारा सफलतापूर्वक अपनाया गया था।

डॉ हर्षवर्धन ने 2 अक्टूबर, 1994 को दिल्ली में टीकाकरण अभियान की पहल करते हुए उसे 'पल्स पोलियो कार्यक्रम' का नाम दिया। टीकाकरण दिवस के नजदीक आने से पूर्व सूरत में स्थानीय महामारी का अचानक नज़र आना वाकई में दिल्ली पर एक बहुत बड़ा संकट था। हालांकि, डॉ. हर्षवर्धन आगे बढ़ने का दृढ़ निश्चय कर चुके थे। सभी रोटेरियनों और अन्य हितधारकों ने सक्रिय भागीदारी का आश्वासन दिया। मास्क पहनकर दिल्ली सरकार के स्वास्थ्यकर्मी रोटेरियनों के समर्थन के साथ एक ही दिन में 12 लाख बच्चों को पोलियो और प्लेग दोनों से बचाने के लिए उन तक पहुँचे।

तत्कालीन नवनियुक्त केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ए आर अंतुले ने अवसर का लाभ उठाते हुए सभी राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों की एक बैठक बुलाई जहाँ मैं उनके सामने अपनी प्रस्तुति दे सका। इसके परिणामस्वरूप छखऊ मनाने की योजना को अपनाया गया। यह योजना में निर्णायक परिवर्तन लाने वाला कदम था। यह भी तय किया गया कि इस कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार को संचालन करना होगा, जो किया भी गया। रोटरी ने सम्पूर्ण पोलियो वैक्सीन स्टॉक की आपूर्ति की जिम्मेदारी ली और देश में डब्ल्यूएचओ और यूनिसेफ की गतिविधियों को वित्तपोषित भी किया।

भारत बहुत भाग्यशाली रहा है कि सत्ता में चाहे किसी भी दल की सरकार हो टीकाकरण के प्रयास साल दर साल जारी रहे है। हालांकि, उत्तर प्रदेश और बिहार में झूठी अफवाहों के कारण अल्पसंख्यक समुदायों द्वारा टीकाकरण का बहिष्कार करने की समस्या आई थी। सरकार ने रोटरी को इन समुदायों के साथ संपर्क विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। नि:शुल्क पोलियो सुधारात्मक सर्जरी और उलेमाओं की मदद लेने जैसे उल्लेखनीय कार्य के माध्यम से इस बाधा को भी पार कर लिया गया।

परिणामस्वरूप अगस्त 2020 में नाइजीरिया और पूरे अफ्रीका को पोलियो मुक्त घोषित कर दिया गया। पोलियो के मामलों वाले अकेले देश अब पाकिस्तान और अफगानिस्तान है। सभी प्रयास उन्हीं पर केंद्रित किए जा रहे है और तीन साल तक शून्य मामले मिलने के बाद पूरी दुनिया को पोलियो मुक्त घोषित किया जाएगा जो चेचक के बाद खत्म होने वाली दूसरी बीमारी होगी।

रोटरी ने दुनिया भर के देशों के 2.5 बिलियन से अधिक बच्चों का टीकाकरण करने के लिए अनगिनत स्वयंसेवी घंटों के साथ 1.7 बिलियन डॉलर से अधिक का योगदान दिया है।

असफलताओं के बावजूद कभी भी संकल्प से पीछे न हटकर एक के बाद एक बाधाओं को पार करते हुए भारत सरकार रोटरी और अन्य सहयोगियों के साथ आगे बढ़ी। निश्चित रूप से, पिछले दशक ने यह साबित किया है कि दृढ़ता, अटलता और मेहनत से पहाड़ों को भी हिलाया जा सकता है।

विक्टर ह्यूगो, जाने-माने कवि और उपन्यासकार ने उचित रूप से कहा था, ''दृढ़ता सभी विजयों का रहस्य है।''

बाएं : पोलियो टीकाकरण अभियान की एक फाइल फोटो। (बाएं से) उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल, आदित्य बिड़ला समूह की सामाजिक पहल अध्यक्ष राजश्री बिड़ला और PRIP राजेंद्र साबू। चित्र में बिनोटा बेनर्जी और पीडीजी रमेश चंदर भी शामिल हैं।

लेखक पूर्व रो ई अध्यक्ष है

© Hindustan Times.

RIPE मेहता ने अपने गवर्नरों से आग्रह किया ''जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा करें''

रशीदा भगत

इस वर्ष आभासी रूप से हुई इंटरनेशनल असेंबली में रो इ के निर्वाचित अध्यक्ष शेखर मेहता ने, रोटरी वर्ष 2021-22 के अपने प्रेसिडेंशियल थीम - *सर्व टू चेंज लाइव्स* का अनावरण करते हुए - आगामी गवर्नरों से अगले 17 महीनों के दौरान सेवा और सदस्यता वृद्धि को अपना मन्त्र बनाने का आग्रह किया। ''जैसा कि हम सभी जानते हैं, आप, ऊर्जा, मूवर्स हैं और मैं शेखर हूं। सेवा और नेतृत्व की यात्रा में आज आप सबसे महत्वपूर्ण कदम उठाने जा रहे हैं। आगामी 17 महीने आपके जीवन के सबसे अद्भुत, सफल और उपयोगी महिने होंगे। इस अवधि के दौरान, रोटरी के हमारे साझा दृष्टिकोण के तहत, मैं आपसे बड़े सपने देखने का आग्रह करता हूं। अपने लक्ष्य निर्धारित करें, उनकी योजना बनाएं और उन्हें प्राप्त करें, सदस्यता में वृद्धि कर रोटरी के प्रभाव को सेवा कार्यों द्वारा दूर दराज तक पहुंचाने के लिए अपने सदस्यों को भी लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें।''

आगामी महीनों में वे सभी एक ''शानदार भूमिका'' निभाएंगे, यह कहते हुए मेहता ने उन्हें बड़ी और अधिक सार्थक सेवा परियोजनाएं करने के लिए प्रोत्साहित किया। ''रोटरी की सदस्यता आज भी हमारी सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है; पिछले 17 वर्षों से हम 1.2 मिलियन पर टिके हुए हैं। आइये, अगले 17 महीनों के दौरान मिल कर, इसे परिवर्तित करें; सदस्यता को 1.3 मिलियन तक पहुंचा कर, रोटरी के इतिहास में आपके पास सबसे महान परिवर्तन करने का अवसर है। जो काम हम पिछले 17 वर्षों में नहीं कर पाए, मैं आपको 17 महीनों में करने की चुनौती देता हूं।''

उन्होंने कहा ''हो सकता है आप कहें, यह बहुत बड़ा सपना है। लेकिन अगर मैं आपसे बड़ा सपना देखने के लिए कहता हूँ, तो मुझे अग्रिम पंक्ति में रह कर इसका नेतृत्व करना होगा।'' जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का हवाला देते हुए, जिन्होंने कहा था कि ''आप चीजें देखते हैं और पूछते हैं क्यों; लेकिन मैं उन चीजों का सपना देखता हूं जो कभी अस्तित्व में थी ही नहीं और पूछता हूँ क्यों नहीं।'' जुलाई 2022 तक रोटरी की सदस्यता को 1.3 मिलियन तक ले जाने का सपना प्रत्येक रोटेरियन से इन 17 महीनों में सिर्फ एक सदस्य लाने के लिए कहकर पूरा किया जा सकता है। ''इस के लिए आपको नेतृत्व कर उदाहरण स्थापित करना होगा और आपके क्लब अध्यक्षों को भी ठीक ऐसा ही करना होगा'', उन्होंने कहा।

इसके बाद मेहता ने अपना उदाहरण दिया कि *स्वयं से ऊपर सेवा* का रोटरी मंत्र उन्होंने किस प्रकार आत्मसात किया था... ''इसने मुझे सिखाया कि मैं दूसरों की देखभाल करूं, दूसरों के साथ साझा करूँ और अपने बारे में सोचने से पहले मैं दूसरों के बारे में सोचूं।'' उनका वो ''रोटरी क्षण'' उनके रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर में शामिल होने के तुरंत बाद आया था - और वे क्लब द्वारा आयोजित एक कृत्रिम अंग शिविर में भाग ले रहे थे। इसमें कैलिपर्स, कृत्रिम अंग और हाथ की साइकिल का वितरण शामिल

RIPE शेखर मेहता और राशी।

बालिकाओं को सशक्त बनाने पर विशेष ज़ोर

आगामी रो इ अध्यक्ष शेखर मेहता ने कहा कि अपने वर्ष के दौरान, रोटेरियन सभी बच्चों तक पहुंचेंगे और उनके बेहतर स्वास्थ्य, पोषण, स्कूलों और स्वच्छता के लिए कार्य करेंगे, ''2021-22 के दौरान लड़कियों को सशक्त बनाने पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। हमारे मुख्य फोकस क्षेत्रों में से एक है विविधता, और हम समानता, समावेश और विविधता के लिए काम करेंगे। लड़कियों को सशक्त बनाना महत्वपूर्ण है क्योंकि दुनिया के कई हिस्सों में लडकियां सुविधाओं से वंचित है। हम सभी रोटेरियन बच्चों के लिए सेवा परियोजनाएँ करेंगे, लेकिन मुख्यतः हमारा ध्यान लड़कियों पर रहेगा और हम लड़कियों की प्रतिकूल परिस्थितियों में कमी लाने के लिए प्रयासरत रहेंगे।''

था। प्रत्येक सदस्य की तरह उन्हें भी एक जिम्मेदारी दी गई थी; साईकिल लेने वाले लाभार्थी के हाथों में पैडल खींचने के लिए पर्याप्त शक्ति भी थी या नहीं। ये जानने के लिए मैं उनको अपना हाथ पकड़ाता और उसे अपनी ओर खींचता था।

पहला प्राप्तकर्ता रेंगते हुए आया क्योंकि उसके पैर नहीं थे और लाभार्थी की तरफ अपना हाथ बढ़ाने से पहले, मेहता बोले, मैं ईमानदारी से कहता हूँ, उसका मैला हाथ पकड़ने की मेरी जरा भी इच्छा नहीं थी लेकिन पकड़ना पड़ा, मैं उसकी सफाई के बारे में और अपने स्वास्थ्य की सोच रहा था। दूसरा और तीसरा हाथ पकड़ते हुए मैं खुद के बारे में ही सोच रहा था। लेकिन छठे या सातवें हाथ के बाद, उनकी दुर्दशा देख कर मेरे मन में उन के प्रति सहानुभूति उपजी और जल्द ही, मुझे लगा कि मैं उनके दर्द, तकलीफ और उनकी चुनौतियों को अपने अंदर महसूस करने लगा था। अचानक मैं स्वयं के बारे में नहीं बल्कि उनके बारे में सोच रहा था और यही वो क्षण था जब मैं अपने रोटरी क्लब के सदस्य से एक रोटेरियन में तब्दील हो गया था।

जैसे जैसे उन्होंने और सेवा परियोजनाओं में भाग लेना शुरू किया और ग्रामीण भारत की यात्रा की, तो मैंने अपने भाइयों की दुर्दशा की सच्चाई को नज़दीक से जाना। उनके घरों में शौचालय नहीं थे। जिस तालाब में नहाते थे उसी का पानी पीते थे। पेड़ की छाँव तले उनका स्कूल हुआ करता था और उनके पास स्कूल परिसर की दीवार ही उनका एक मात्र ब्लैकबोर्ड था । निकटतम स्वास्थ्य केंद्र भी कुछ मील की दूरी पर था जिसमे केवल बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध थीं।

अपने क्लब के माध्यम से, उन्होंने इन गांवों में शौचालय और स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था की और शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दिया और विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया करवाई गईं केवल मेरे समुदाय या शहर में ही नहीं बल्कि पूरे देश में। रोटरी ने मेरे भीतर एक चिंगारी सुलगा दी जिसने खुद से परे देखने और मानवता को गले लगाने का काम किया। सेवा मेरे लिए जीवन जीने का तरीका बन गई और यही दर्शन मेरे जीवन का मार्गदर्शक बन गया: ''सेवा वह किराया है जिसका भुगतान मैं इस धरती पर रहने वाले स्थान का उपयोग करने के लिए करता हूं, और मैं इस धरती का एक अच्छा किराएदार बनना चाहता हूं।''

मेहता ने कहा: ''मुझे विश्वास है कि आप सभी को कभी ना कभी ये अवसर ज़रूर मिला होगा- भूखों को भोजन, बेघरों को घर और दृष्टिहीन को दृष्टि उपलब्ध कराने का अवसर। यह सब छोटी बड़ी परियोजनाओं के माध्यम से संभव हुआ होगा, लेकिन सेवा के आकार से अधिक महत्वपूर्ण सेवा के दौरान किया गया वो व्यवहार ही है जो सेवा को परिभाषित करता है।'' गांधीजी के जीवन से एक उदाहरण देते हुए, उन्होंने कहा कि एक बार ट्रेन में चढ़ते समय गांधीजी का एक जूता गिर गया तो जल्दि से उन्होंने उन्होंने दूसरा जूता भी बाहर फैंक दिया, जब उनके दोस्त ने उनसे इसका कारण पूछा तो महात्मा ने कहा: जिसे एक जूता मिलेगा वो भला किस काम आएगा; इसलिए मैंने दूसरा भी फेंक दिया ताकि उसके काम तो आये। उन्होंने कहा कि यह सेवा के लिए यह उचित व्यवहार था।

दुनिया भर में रोटेरियन और रोटरेक्टर्स द्वारा किये गए अनगिनत कार्यों और उनके परिमाण पर हर्ष प्रकट करते हुए, आगामी अध्यक्ष ने कहा कि उन्होंने हजारों स्कूल, सैकड़ों अस्पतालों का निर्माण किया, सूखाग्रस्त गांवों को पीने का पानी उपलब्ध कराया, शौचालय का निर्माण कर लोगों को गरिमामय जीवन दिया और दिल की सर्जरी करवाकर हजारों बच्चों को जीवन का उपहार दिया।

''नेपाल की एक परियोजना हजारों लोगों का जीवन बदल देती है। अफ्रीका में पारिवारिक स्वास्थ्य

रोटेरियन चुनौती पसंद करते हैं; हालांकि जहाज बंदरगाह में सुरक्षित रहता है लेकिन उसका निर्माण बंदरगाह में खड़े रहने के लिए नहीं हुआ है। उसे सागर में उतरना है।

कार्यक्रम ने लाखों लोगों की सेवा की है। हैती में एक जल परियोजना ने 10 मिलियन से अधिक लोगों का जीवन बदल दिया है। इधर अपने घर भारत में, साक्षरता और शिक्षा के TEACH कार्यक्रम ने लाखों बच्चों के जीवन को प्रभावित किया है।''

हमारी दुनिया में सेवा की आवश्यकता आज और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई थी, उन्होंने आगामी गवर्नरों से आग्रह किया कि वे ऐसी सेवा परियोजनाओं का संचालन करें, जिनका प्रभाव निरंतर पड़ता हो, वे साझेदारी के साथ निष्पादित हों और ऐसी परियोजनाएँ करें जो देश और दुनिया में लोगों का जीवन बदल दें। ''अपने कार्यकाल के अंत में आपको ये संतुष्टि होनी चाहिए कि आपके नेतृत्व और प्रेरणा से रोटेरियनों और रोटरेक्टर्स द्वारा की गई सेवा की वजह से ये दुनिया पहले से बेहतर हुई है।''

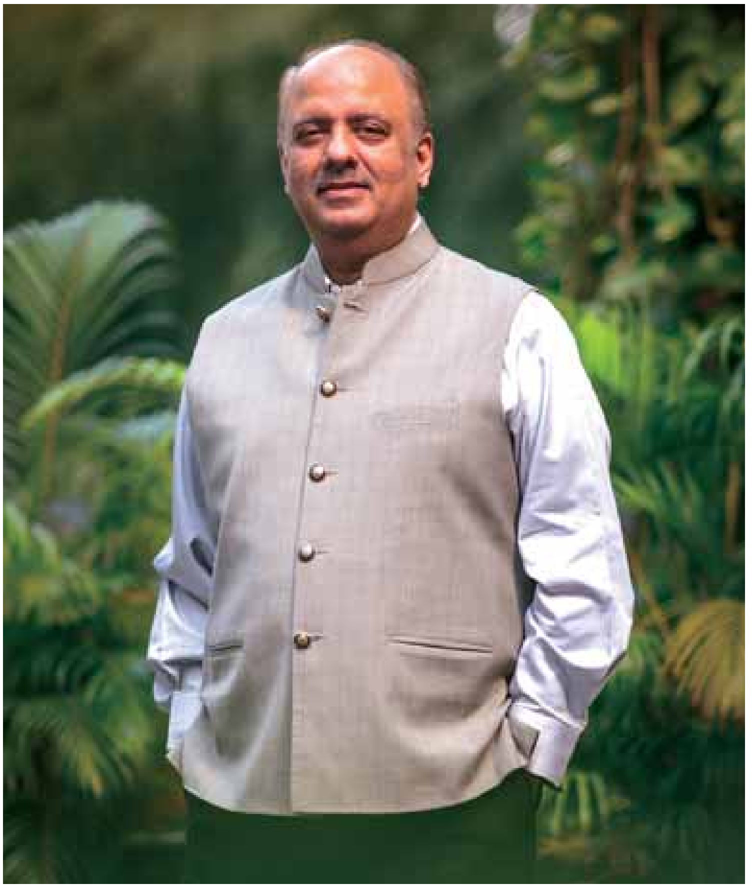

भारत और नेपाल के 31 DGE 'भाग्यशाली' रहे

सभी डीजी गणों के लिए एक वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, इंटरनेशनल असेंबली, का आयोजन मूल रूप से ऑरलैंडो, फ्लोरिडा में होना था, लेकिन कोविड महामारी के कारण आभासी रूप से आयोजित किया गया था जिसे भारत की राजधानी दिल्ली में बड़े पर्दे पर, रोटरी इंटरनेशनल द्वारा प्रसारित किया गया था, 31 आगामी गवर्नर भाग्यशाली रहे क्योंकि उनको शेखर और राशी मेहता और रो ई के वर्तमान निदेशकों भरत पंड्या और कमल संघवी के साथ आगामी निदेशक एएस वेंकटेश और महेश कोटबागी के सानिध्य में इसे देखने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ था।

IA में इंटरनेशनल नाइट की जगमगाहट पिछली शाम की तरह ही लाजवाब रही, आगामी गवर्नरों ने, भारतीय पारंपरिक परिधानों के चटख़ रंगों में सजे-धजे अपने जीवनसाथी के साथ, मुख्य हॉल में प्रवेश किया, जिसकी अगुवाई मेहता, राशी और अन्य वरिष्ठ भारतीय नेताओं संग उनके जीवनसाथियों ने की थी।

आगामी गवर्नरों को जताया गया कि वे कितने ''भाग्यशाली'' थे, आगामी अध्यक्ष केवल 31 के बीच उपस्थित थे, जबकि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उन्हें 500 से अधिक DGEयों के साथ साझा करना पड़ता !

उन्होंने कहा, सबसे महत्वपूर्ण बात, ''ध्यान रखें कि, जब हम दूसरों की सेवा करते हैं और उनका जीवन बदलते हैं, तो हम अपने जीवन में भी परिवर्तन पाते हैं।''

आगामी गवर्नरों को जिन विषयों और मुद्दों पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए, मेहता ने संक्षेप में कहा कि वो हैं ''पोलियो समाप्त करना, कोविड से लड़ना, बड़ी प्रभावशाली परियोजनाओं पर काम करना और हमारी सदस्यता को, जो पहले कभी नहीं रही, 1.3 मिलियन तक पहुंचाना शामिल था। आगे के कार्य ऐसे होने चाहियें जो आप में जोश भर दे। रोटेरियन चुनौती पसंद करते हैं; हालांकि जहाज बंदरगाह में सुरक्षित रहता है लेकिन उसका निर्माण बंदरगाह में खड़े रहने के लिए नहीं हुआ है। उसे सागर में उतरना है। सबसे बड़ा उपहार जो हमें मिला है वह है लोगों के बारे में सोच कर उनका जीवन परिवर्तित करने का, अगर हम अपने हाथ बढ़ा कर, उनके दिलो-दिमाग तक पहुंच सकें तो प्रगति और विकास का जादू नज़र आने लगेगा। आइये मिल कर इस का प्रयास करें।'' ■

TRF Awards for Rotary Year 2019–20

Zone - 4		
Award Category	**Awardee**	**District**
Highest Contribution to Annual Fund, Rank 1	Harjit Singh Talwar	3141
Highest Contribution to Annual Fund, Rank 2	Mohan S Chandavarkar	3142
Highest Contribution to Endowment Fund, Rank 1	Harjit Singh Talwar	3141
Highest Contribution to Polio Fund, Rank 1	Anish Shah	3060
Highest per capita APF Contribution to TRF – Rank 1	Harjit Singh Talwar	3141
Highest per capita APF Contribution to TRF – Rank 2	Mohan S Chandavarkar	3142
Highest Total Contribution to TRF – Rank 1	Harjit Singh Talwar	3141
Highest Total Contribution to TRF – Rank 2	Ravee Dhotre	3131
Highest Donor Participation (%-wise)	Anish Shah	3060
100% Club Participation	Mohan S Chandavarkar	3142
Zone - 5		
Highest Contribution to Annual Fund, Rank 1	Sameer Hariani	3190
Highest Contribution to Annual Fund, Rank 2	Joseph Mathew	3181
Highest Contribution to Endowment Fund, Rank 1	Sivanarayana Rao Pandi	3150
Highest Contribution to Polio Fund, Rank 1	Chandramohan Govindarajulu	3232
Highest per capita APF Contribution to TRF – Rank 1	Sameer Hariani	3190
Highest per capita APF Contribution to TRF – Rank 2	Joseph Mathew	3181
Highest Total Contribution to TRF – Rank 1	R Madhav Chandran	3201
Highest Total Contribution to TRF – Rank 2	Chandramohan Govindarajulu	3232
Highest Donor Participation* (%-wise)	Zameer Pasha; Sameer Hariani; A Karthikeyan; A K Natesan	3000, 3190 3202, 2982
100% Club Participation	Zameer Pasha; A K Natesan; Girish Ratnakar Masurkar	3000, 2982, 3170
Zone - 6A		
Highest Contribution to Annual Fund, Rank 1	Debashish Das	3240
Highest Contribution to Endowment Fund, Rank 1	Kiran Lal Shrestha	3292
Highest Contribution to Polio Fund, Rank 1	Debashish Das	3240
Highest per capita APF Contribution to TRF – Rank 1	Debashish Das	3240
Highest Total Contribution to TRF – Rank 1	Kiran Lal Shrestha	3292
Highest Donor Participation (%-wise)	Kiran Lal Shrestha	3292
100% Club Participation	Debashish Das	3240

All India Trophies

Nitish Laharry Trophy for All India Highest Total Contribution to TRF — RID 3141

Usha and Raja Saboo Trophy for All India Highest Annual Fund Contribution to TRF — RID 3141

Binota and Kalayan Banerjee Trophy for All India Highest Endowed Fund Contribution to TRF — RID 3141

Highest All India Polio Fund Contribution to TRF — RID 3060

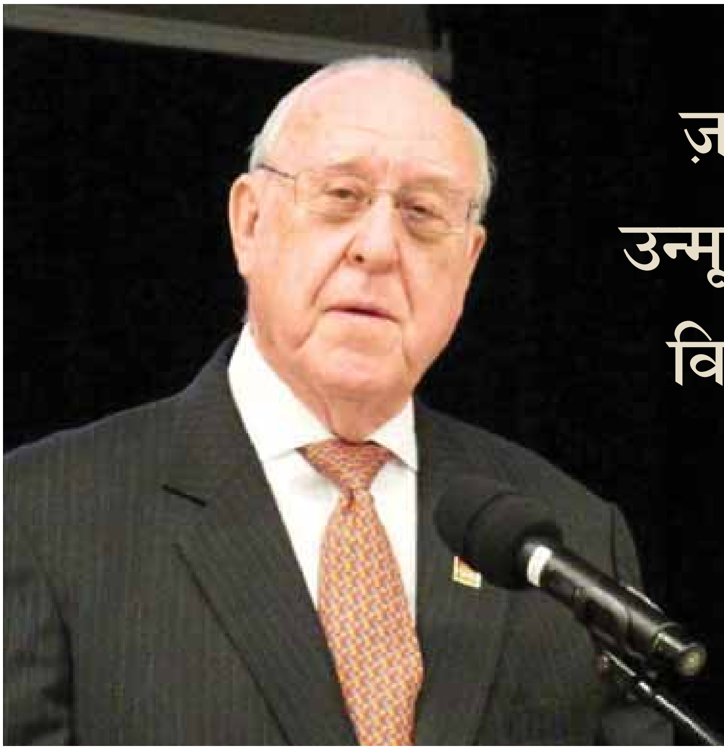

ज़ाम्बिया में मलेरिया उन्मूलन TRF का पहला विस्तारित कार्यक्रम है

टीम रोटरी न्यूज़

दुनिया को अब रोटेरियनों की सेवा की आवश्यकता पहले से कई अधिक है। इसे हमारे साहस, आशावाद, आदर्शवाद की आवश्यकता है। इसे हमारे द्वारा प्रदान की जाने वाली सहिष्णुता, सहयोग, और आशा की आवाज की आवश्यकता है। इसे एक ऐसे संगठन के उदाहरण की आवश्यकता है जिसने यह साबित किया हो कि सभी देशों के नागरिक सफलतापूर्वक एक साथ मिलकर साहचर्य के साथ काम कर सकते है'', नवनिर्वाचित टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष जॉन जर्म ने अंतर्राष्ट्रीय सभा को संबोधित करते हुए कहा जो इस साल आभासी हो गई है।

मदर टेरेसा ने एक बार कहा था, ''मैं दुनिया को नहीं बदल सकती, लेकिन मैं पानी में एक पत्थर डालकर कई लहरें पैदा कर सकती हूं।''

नवनिर्वाचित गवर्नरों को यह याद दिलाते हुए कि टीआरएफ ''हम में से प्रत्येक की अच्छा करने में मदद करता है - चाहे पोलियो वायरस का उन्मूलन हो, रोटरी शांति केंद्रों के माध्यम से अगली पीढ़ी के शांति और संघर्ष समाधान विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करना हो, या मंडल और वैश्विक अनुदान हो'', उन्होंने कहा वैश्विक अनुदान के माध्यम से रोटेरियन दुनिया भर में स्थानीय समुदाय की जरूरतों को पूरा कर रहे है। ''1 जुलाई 2021 से शुरूआत करते हुए, रोटरी संस्थान पर्यावरण की रक्षा करने हेतु की जाने वाली परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए वैश्विक अनुदान आवेदनों को स्वीकार करेगा।''

वैश्विक अनुदानों के विकास का समर्थन करने के लिए, न्यासी कई विकल्पों पर ध्यान से विचार करने के बाद संस्थान के दीर्घकालिक वित्तीय स्वास्थ्य को पुन: संतुलित करते हुए उसमें सुधार कर रहे है।

उदाहरण के लिए, वैश्विक अनुदान स्वीकृतियों हेतु अतिरिक्त 4.4 मिलियन डॉलर प्रदान करने के लिए परिचालन लागत को कम करते हुए अन्य बदलाव किए गए, ''जो इस रोटरी वर्ष के लिए मूल रूप से निर्धारित किए गए बजट से अधिक था। हमने वैश्विक अनुदान के लिए उपलब्ध राशि को बढ़ाने के लिए अगले वर्ष के विश्व कोष मिलाप हेतु कई बदलाव किए है।''

जर्म ने कहा कि आने वाले वर्ष में रोटरी की पहुंच का विस्तार करने में मदद करने के लिए, टीआरएफ ने तीन प्राथमिकताओं को निर्धारित किया था।

''हमारी पहली प्राथमिकता बेशक पोलियो को समाप्त करना है।

हमारी दूसरी प्राथमिकता 2025 तक 2.025 बिलियन डॉलर की अक्षय निधि तैयार करते हुए वार्षिक निधि और पोलियोप्लस के योगदान को बढ़ाना है। उसके लिए हमने 410 मिलियन डॉलर का व्यापक धन जुटाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।''

इन लक्ष्यों का विभाजन इस प्रकार था:

- पोलियोप्लस के लिए 50 मिलियन डॉलर जिसे बाद में कुल 150 मिलियन डॉलर तक लाने के लिए गेट्स फाउंडेशन द्वारा दोगुना मिलान किया जाएगा। यदि प्रत्येक क्लब केवल 1,500 डॉलर का योगदान दे, तो यह लक्ष्य पार किया जा सकता है। अपने स्वयं के मंडलों को उनके उपलब्ध मंडल नामित कोष का 20 प्रतिशत योगदान करने हेतु प्रोत्साहित करने से इस कार्यक्रम को नेतृत्व और गति मिलेगी।
- वार्षिक कोष के लिए 125 मिलियन डॉलर। वार्षिक कोष के लिए नए सदस्यों को रोटरी परोपकार की मजबूत संस्कृति से परिचित कराने की आवश्यकता है जो ''हर एक रोटेरियन, हर साल'' नारा में सन्निहित है। इसलिए डीजीईयों को इस कोष में योगदान करने हेतु प्रत्येक क्लब और प्रत्येक क्लब में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होगी।

- इसका लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप से दिए गए उपहारों और नई प्रतिबद्धताओं हेतु अक्षय निधि के लिए 95 मिलियन डॉलर जुटाना भी है।
- और फिर अन्य प्रत्यक्ष उपहारों के लिए 40 मिलियन डॉलर।
- इन सब से 410 मिलियन डॉलर की एक विशाल राशि इकट्ठा होगी।

टीआरएफ की तीसरी प्राथमिकता अनुदानों के औसतन प्रभाव में सुधार लाना है। ''रोटेरियन, भावी सदस्य, परोपकारी व्यक्ति और हमारे साथी हमारे कार्यक्रमों के औसतन प्रभाव को जानना चाहते है। जहाँ पोलियोप्लस प्रतिबद्धताओं का प्रभाव स्पष्ट है, वहीं हमें अपने अन्य कार्यक्रमों के प्रभाव को निर्धारित करने हेतु अगले स्तर पर जाने की आवश्यकता है।''

इस प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए, इस रोटरी वर्ष में प्रोग्राम्स ऑफ़ स्केल शुरू किया गया। यह आशाजनक, रोटेरियन के नेतृत्व वाले, साक्ष्य-आधारित कार्यक्रमों के निधियन के लिए एक प्रतिस्पर्धी अनुदान कार्यक्रम है जो पहले ही प्रभावी परिवर्तन लाने में सफलता का प्रदर्शन कर चुके है। ये अनुदान तीन से पांच साल तक चलने वाली दीर्घकालिक गतिविधियों का समर्थन करते है। ''इन प्रोग्राम्स ऑफ स्केल के माध्यम से, हम एक साथ सीखने, अपने मिशन को पूरा करने, और नया बदलाव लाने के लिए रोटरी की शक्ति का प्रदर्शन करने के नए तरीके खोजना चाहते है।''

70 प्रस्तावों को प्राप्त करने और उनकी समीक्षा करने के बाद, शीर्ष आवेदनों का गहन विश्लेषण पूरा हुआ, और प्रोग्राम ऑफ स्केल के पहले प्राप्तकर्ता जाम्बिया मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम था।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य जाम्बिया के दो प्रांतों में स्थित 10 लक्षित मंडलों में मलेरिया की घटनाओं को 90 प्रतिशत तक कम करते हुए इस देशव्यापी रणनीति में महत्वपूर्ण योगदान देना है। सिएटल, वाशिंगटन, के पास मौजूद रोटरी क्लब ऑफ फेडरल वे के नेतृत्व में रो ई कई अफ्रीकी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोगियों के साथ काम करते हुए इस कार्यक्रम के निधीयन के साथ इसे लागू करेगा। जहाँ टीआरएफ का योगदान 2 मिलियन डॉलर का होगा, वहीं अन्य इस परियोजना की 6 मिलियन की कुल लागत में से 4 मिलियन डॉलर का योगदान कर रहे है। यह परियोजना 1.3 मिलियन लोगों तक पहुंचेगी।

''ज़ाम्बिया में, मलेरिया बीमारी और मृत्यु का एक प्रमुख कारण है, और रोटरी और हमारे साथी इसे बदलने वाले है। इस तरह की बड़े पैमाने की सेवा परियोजनाएं हम सभी को रोटरी के हर स्तर पर प्रेरित करती है ताकि हम जो भी करते है उसके बारे में रचनात्मक ढंग से सोचें और जितना बड़ा प्रभाव ला सकते हो उतना लाएं।''

जर्म ने कहा कि एक पूर्व रोटरी अध्यक्ष ने कहा था कि हमें एक कुशल हृदय के साथ रोटरी से संपर्क करने की आवश्यकता है। और इससे उनका तात्पर्य यह था कि ''हमें अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को तथ्यात्मक कार्यवाही के साथ जोड़ना होगा। केवल पहले या केवल दूसरे के साथ काम करना पर्याप्त नहीं होता। आपको दोनों की आवश्यकता होती है। मेरे लिए, वह कुशल हृदय रोटरी संस्थान है। यह हमारे संगठन में जान डालता है; इसकी निरंतर धड़कन रोटेरियनों को मानव सेवा हेतु सर्वोत्तम प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करती है।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

दिल्ली के एक स्कूल में ई-लर्निंग लैब का उद्घाटन किया गया

टीम रोटरी न्यूज़

(बाएं से दाएं) राकेश सिंह सी एस आर प्रमुख दाना निगम, डीजीई अनूप मित्तल, डीजीएन अशोक कांतूर और, क्लब अध्यक्ष अनिल साहनी।

डाना केयर फाउंडेशन से प्राप्त सीएसआर ग्रांट से रोटरी क्लब दिल्ली पंचशिला पार्क, रो ई मंडल 3011 के द्वारा शाहपुर के गर्ल्स प्राइमरी स्कूल में ई-लर्निंग लैब का उद्घाटन किया गया। इस परियोजना से प्रत्येक वर्ष 250 से अधिक विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा।

एक्टिविटी रूम में विभिन्न लर्निंग साफ्टवेयर के अलावा, क्लब ने स्कूल के बच्चों के लिए 10 कम्प्यूटर टैबलेट, बच्चों की किताबें, क्राफ्ट सामग्री, ड्राइंग बुक, कलर स्टिक, खिलौने, पजल बोर्ड एवं संबंधित सामग्रियों को दान किया क्योंकि इससे उनकी सीखने की क्षमता में वृद्धि होगी। क्लब सीएसआर-टीआरएफ के अध्यक्ष अविनाश गांधी और वोकेशनल सर्विसेज डायरेक्टर वाई. के. कपूर के प्रयासों से इस परियोजना को डिजाइन और लान्च किया गया था। क्लब के उपाध्यक्ष डॉ सरोज सागर के पोते प्रग्यात कर्ण ने 10 कम्प्यूटर दान किए जो नवीनम सॉफ्टवेयर से सुसज्जित थे। डीजीएन अशोक कन्टूर, क्लब अध्यक्ष अनिल साहनी और क्लब के अन्य सदस्यों की उपस्थिति में ई-लर्निंग लैब का उद्घाटन डीजीई अनूप मित्तल के द्वारा किया गया। ■

डाकोजू दम्पति ने गोवा में सामुदायिक परियोजनाएं हाथ में लीं

रशीदा भगत

यह 44,000 पुस्तकों के सफर की दिलचस्प कहानी है, जिन्होंने सुदूर अमेरिका स्थित अटलांटा से टूटीकोरिन बंदरगाह तक समुद्री मार्ग से यात्रा ज्ञरीशश और वहां बंदरगाह से सड़क मार्ग से होते बेंगलुरु पहुँची।

इसकी शुरुआत 2018 में हुई जब रविशंकर डाकोजू रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड्स के अध्यक्ष थे (रो ई मंडल 3190 से), और उनका परिचय अटलांटा के डॉ विजय राघवन से हुआ था, जो भारत के दिवंगत राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के नज़दीकी मित्र थे।

राघवन उनके संगठन *वी सर्व फाउंडेशन* के माध्यम से कलाम के ज्ञान बांटने के सपने और सम्पूर्ण विश्व से शिक्षा के अभाव को दूर करने/ की कमी को मिटाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

2018 में इधर भारत में, डाकोजू अपने क्लब की प्रतिष्ठित परियोजना - 126 रोटरी हैप्पी स्कूल में पूरी शिद्दत से लगे हुए थे, और साक्षरता की कोई भी पहल करने के लिए किताबें उसका एक अनिवार्य हिस्सा हैं। इसलिए डाकोजू और उनकी पत्नी पाओला ने, इस मिशन का बीड़ा उठाया और अटलांटा से भारत तक इन पुस्तकों को जहाज द्वारा लाने का लगभग ₹8 लाख का खर्च उनकी संस्था *पाओला डाकोजू रविशंकर फाउंडेशन* ने वहन किया।

बेंगलुरु से, इन पुस्तकों को तब इस युगल ने भारत के विभिन्न हिस्सों में भेजा था; सिर्फ एक शर्त थी इस आश्वासन के साथ कि इन पुस्तकों का उचित उपयोग किया जाएगा और उनमें निहित ज्ञान के माध्यम से जन सामान्य के जीवन को समृद्ध किया जाएगा।

इस युगल की सर्वाधिक पसंदीदा परियोजनाओं में से एक, रोटरी फाउंडेशन को ₹100 करोड़ दान करके, जिसने दो साल पहले न केवल रोटरी दुनिया में बल्कि पूरे भारत में सुर्खियां बटोरीं थी, वो मणिपुर में स्कूल और लाइब्रेरी के निर्माण में व्यस्त हैं। पुस्तकों के इस भंडार से, करीब 5,000 पुस्तकें मणिपुर के संगाई गांव में भेजी गईं, जिन्हें सनबर्ड ट्रस्ट के सोनल सेठीने प्राप्त किया था, जो राज्य में अपनी परियोजनाओं के लिए डाकोजूस के साथ साझेदारी कर रहे हैं, वे इस पुस्तकों को कई खुले पुस्तकालयों में वितरित किए जाने के लिए

रविशंकर डाकोजू, रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्डस के पूर्व अध्यक्ष और उनकी पत्नी पाओला, डी जी संग्राम पाटिल की उपस्थिति में रोटरी क्लब पंजी के अध्यक्ष कार्लिटो मार्टिंस को सम्मानित करते हुए।

इतने सारे चोर जेल में हैं क्योंकि उनके पास केवल यही कौशल है। और यह तथ्य कि वो जेल में रह चुके हैं उनके सामाजिक बहिष्कार का कारण बनता है। इसलिए, हम केंद्रीय कारागार में एक कौशल केंद्र स्थापित कर रहे हैं।

रविशंकर डाकोजू

गोवा के सीएम डॉ प्रमोद सावंत किताबों को केंद्रीय पुस्तकालय के प्रतिनिधि को सौंपते हुए।

हैं। इसी प्रकार से, रो इ डिस्ट्रिक्ट 3190 में बेंगलुरु और उसके आसपास के कई स्कूलों, अनाथालयों, वृद्धाश्रमों और अन्य पुस्तकालयों में भी लगभग 25,000 पुस्तकों का वितरण किया गया।

शेष बची 11,500 पुस्तकों के लिए सही घर ढूंढनेके लिए, डाजोकु ने रो ई मंडल 3170 के पीडीजी जोरसन फर्नांडीस से संपर्क किया, जो इस युगल के उसी जुनून ''निस्वार्थ रूप से समाज को वापस देना का अनुकरण करते हैं। फर्नांडिस डीजीई गौरीश धोंड, रो ई मंडल 3170, रोटरी क्लब पणजी के सदस्य के संपर्क में आए, जो गोवा में जनवरी 1963 में चार्टर्ड किये गए क्लब के पहला सदस्यों था। धोंड ने डाकोजू को आश्वासन दिया कि इस उदार उपहार को प्राप्त करने के लिए गोवा एक आदर्श स्थान होगा क्योंकि यह नहीं है केवल भारत में सबसे अधिक साक्षर राज्यों में से एक है, लेकिन इसके लोगों में पढ़ने की ज़बरदस्त आदत भी है।

रोटरी क्लब पणजी के अध्यक्ष कार्लिटो मार्टिंस ने तुरंत प्रतिक्रिया दिखाई और यह परस्पर सहमत भी हो गए कि इन पुस्तकों का वितरण पणजी स्थित सेंट्रल लाइब्रेरी के माध्यम से वितरित किया जा सकता है। 30 जनवरी को, क्लब का 59 वां चार्टर दिवस था और उस दिन, मंडल 3170 के डीजी संग्राम पाटिल की आधिकारिक यात्रा के दौरान, पणजी की सेंट्रल लाइब्रेरी को किताबें सौंपने का निर्णय लिया गया। इस आयोजन की अध्यक्षता गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने की, जो रोटरी क्लब पणजी के मानद सदस्य हैं।

डीजी पाटिल ने रोटरी क्लब पणजी के पुस्तकें भेंट करवाने के लिए किए गए प्रयास की सराहना की और डाकोजू को उनके उदारता के लिए धन्यवाद दिया। मुख्यमंत्री ने इस युगल को भी धन्यवाद दिया और रोटेरियनों द्वारा की जा रही समाज की निस्वार्थ सेवा के लिए उनकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उदारता से प्रदान की गई 10,500 पुस्तकों का अधिकतम लाभ उठाने के लिए, उन्हें 11 सरकारी पुस्तकालयों और पूरे गोवा राज्य भर में गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित 140 पुस्तकालयों में वितरित की जाएंगी।

बैठक को संबोधित करते हुए डाकोजू ने कहा कि वह और उनकी पत्नी पाओला अत्यंत प्रसन्न थे कि गोवा जैसे क्षेत्र में पुस्तकों को अपनी सहीजगह मिल गई थी, जहां लोगों में पढ़ने की आदत अपेक्षाकृत अधिक है। उन्होंने कहा कि इस महीने की शुरुआत में, रोटरी क्लब कुडाल में भी 1,000 से अधिक किताबें वितरित की गईं ।

बाद में डाकोजू ने *रोटरी न्यूज* को बताया कि उन्होंने गोवा के सीएम को आश्वासन दिया है कि उनका फाउंडेशन गोवा में दो और परियोजनाएं करेगा। पहला, PDG फर्नांडीस और रोटरी कुंकली की साझेदारी में किया जाता है, जिसका उद्देश्य कैदियों को कुशल बनाना है। ''इतने सारे चोर जेल में हैं क्योंकि उनके पास केवल यही कौशल है। और यह तथ्य कि वो जेल में रह चुके हैं उनके सामाजिक बहिष्कार का कारण बनता है। इसलिए, हम केंद्रीय कारागार में एक कौशल केंद्र स्थापित कर रहे हैं, जो कि सीएम के निर्वाचन क्षेत्र में स्थित है, जहां जेल के कैदियों को फाइलें बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। हमने एक प्रतिबद्धता भी दी है कि हम उनके द्वारा बनाई गई सभी फाइलों को खरीद लेंगे।'' उम्मीद है कि जब कैदी जेल में अपने कार्यकाल पूर्ण करने के बाद समाज में लौटेंगे, तो उनके पास सम्मानजनक जीवनयापन करने के लिए यहां सीखे गए कौशल के अनुरूप एक उपयोगी व्यवसाय होगा।

डाकोजू ने कहा क्योंकि स्कूल का निर्माण भी उनके दिल के करीब है, उन्होंने सरकार की साझेदारी में एक स्कूल बनाने के लिए स्वेच्छा से सहमति दी जिसके लिए उनका फाउंडेशन एक एकड़ जमीन दान करेगा। ''लेकिन एक चर्चा के बाद, पहले हम वरिष्ठ नागरिकों के लिए घर बनाने के लिए सहमत हुए। जैसा कि आप जानते हैं, यह भी मेरे दिल का करीबी विषय है। इसलिए, हम तो भूमि दान करेंगे और हमारा फाउंडेशन, रोटरी क्लब पणजी और रो ई मंडल 3170 के सहयोग से आवासों का निर्माण करेंगे।'' इस जुलाई में डीजीई गौरीश धोंद के इंस्टालेशन के अवसर पर RIPE शेखर मेहता की उपस्थिति में इस घर की परियोजना की आधारशिला रखने का विचार है, उन्होंने कहा। ■

दिल्ली ने की IA की मेज़बानी

ऊपर: 2021-22 के DG।
नीचे: बाएं से: RIDE ए एस वेंकटेश, RID कमल संघवी और RIPE शेखर मेहता।
दायें: (बाएं से) RIDE गण महेश कोटबागी, ए एस वेंकटेश और पीडीजी रवि वडलामणि।

***ऊपर से:** (बाएं से): टीआरएफ ट्रस्टी गुलाम वाहनवती, माधवी, RID भरत पांड्या और PRID मनोज देसाई।*
राशी मेहता, सुसेन नेक और रोटेरियन निक क्रयसिच, RIPN जेनिफर जोन्स के पति।
RIPE शेखर मेहता, RID भरत पांड्या की उपस्थिति में IA का उद्घाटन करते हुए, चित्र में राशी और माधवी भी शामिल है।

ऊपर: IA में रो ई नेता।

दाएं: रो ई मंडल 3232 के DGE श्रीधर और उनकी पत्नी पुनीता के साथ RIDE ए एस वेंकटेश (बाएं)।

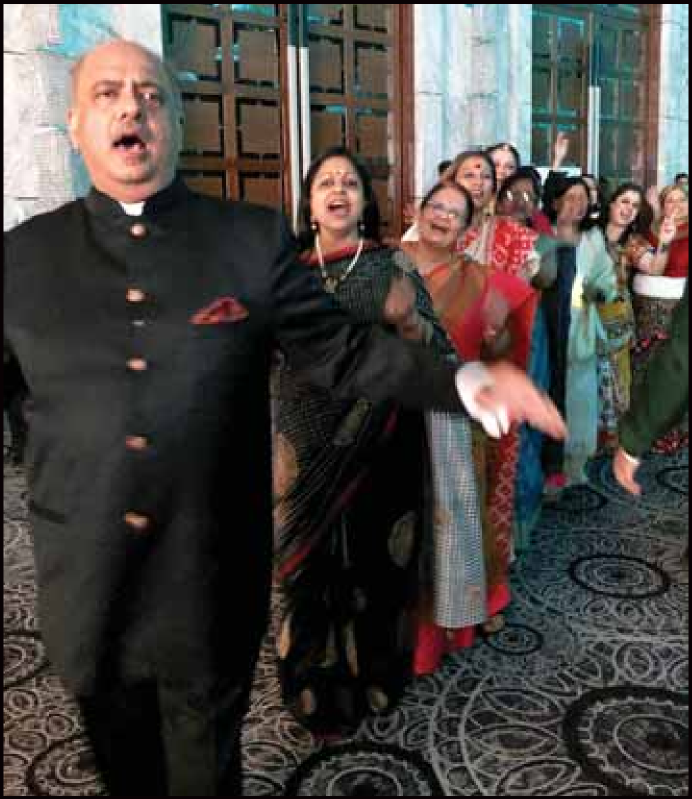

ऊपर बाएं से: *RID पांड्या, PDG रंजन ढींगरा के साथ।; DGE यों के साथ उनके जीवन साथी।; RIPE मेहता उनके साथ राशी और माधवी, प्रतिनिधियों के साथ IA समारोह में।*

नीचे: *DGE डॉ राजेश सुभाष (3204), परिमलादेवी और DGE के शनमुगासुंदरम (3203) के साथ एक सेल्फी लेते हुए, डॉ दिशमा सुभाष और DGE एस बालाजी (2981)।*

दक्षिणावर्त ऊपर से: *RIPE मेहता, राशी, RID पांड्या, माधवी, डॉ अमिता और RIDE महेश कोटबागी।*
RIDE कोटबागी, (बाएं से) पीडीजी गण प्रशांत देशमुख (3131), बीना और आशीष देसाई (3054)।
PDG जितेंद्र ढींगरा (बाएं से दूसरे), और रितु (दाएं), DGE अजय मदन और सविता (3080)।
PRID मनोज देसाई और RIDE वेंकटेश।

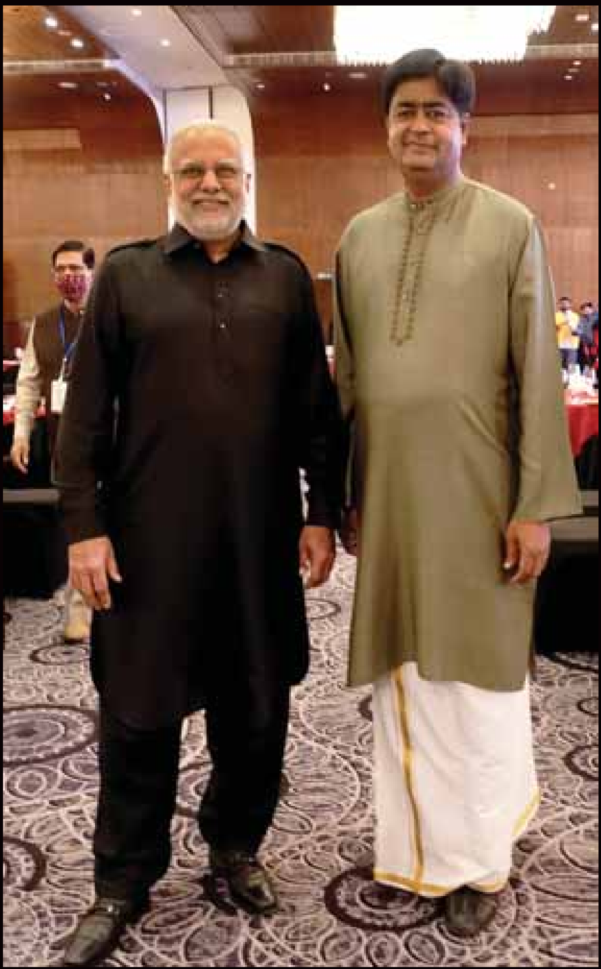

चित्र: रशीदा भगत
रूपरेखा एस कृष्णप्रतीश

रो ई की एकता, विविधता, समावेश नीति का हिस्सा बनें

टीम रोटरी न्यूज़

रोई अध्यक्ष होल्गर नेक सभी रोटेरियनों से रो ई की विविधता और सभी का सम्मान करने की प्रतिबद्धता में शामिल होने का आग्रह करते है।

2019 में, रो ई बॉर्ड ने विविधता, निष्पक्षता और समावेश (DEI) कथन को अपनाते हुए विविधता और समावेश की नीति को आगे बढ़ाने के लिए अपना दृष्टिकोण और प्रतिबद्धता व्यक्त की जिसके चलते इसने हाल ही में व्यवसाय परामर्श समूह PwC में विशेषज्ञों को नियुक्त किया ताकि DEI को रोटेरियनों के साझा अनुभवों का हिस्सा बनाने की संभावनाओं और अभ्यासों को विकसित किया जा सकें।

''जब हम इस काम को शुरू कर रहे है, रोटरी का नेतृत्व इस बात को लेकर एकमत है कि रोटरी ऐसी बातों या व्यवहार को बर्दाश्त नहीं करती जो उम्र, जातीयता, नस्ल, रंग, क्षमता, धर्म, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, संस्कृति, लिंग, यौन अभिविन्यास, या लिंगवाद पहचान में पक्षपात, भेदभाव, पूर्वाग्रह या घृणा को बढ़ावा देता है'', रो ई अध्यक्ष नेक कहते है। रोटरी में नस्लवाद, होमोफोबिया, ट्रांसफोबिया, लिंगभेद, जातिवाद या उम्रवाद के लिए कोई जगह नहीं है। ''हम यह नहीं मानते कि यह एक राजनीतिक रुख है बल्कि यह मानते है कि हमें अपने संगठन में इन मुद्दों पर खुलकर चर्चा करनी चाहिए'', उन्होंने आगे कहा।

रोटरी का नेतृत्व इस बात को लेकर एकमत है कि रोटरी ऐसी बातों या व्यवहार को बर्दाश्त नहीं करती जो जातीयता, धर्म, लिंग, या लिंगवाद पहचान में पक्षपात, भेदभाव, पूर्वाग्रह या घृणा को बढ़ावा देता है।

होल्गर नेक
रो ई अध्यक्ष

विविधता रोटरी के मुख्य मूल्यों में से एक है और इसका जबरदस्त विस्तार एवं विभिन्न प्रकार के अनुभव, संस्कृतियां और दृष्टिकोण जिनका प्रतिनिधित्व इस संगठन में किया जाता है इसे अद्भुत बनाते है।

लक्ष्य सभी सदस्यों और प्रतिभागियों का समर्थन करना है - विशेष रूप से उन समुदायों का जिन्हें पारंपरिक रूप से संगठन में कम आंका जाता है - ''ताकि वे हमारे क्लबों, कार्यक्रमों और हमारे नेतृत्व पदों को उन स्थानों के रूप में देखें जहाँ उनका स्वागत किया जाता हो और उनके जीवंत अनुभवों के सभी पहलुओं का जश्न मनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हो।''

''हम जानते है कि इस यात्रा में समय लगेगा और यह चुनौतीपूर्ण वार्तालापों, गहन आत्म-चिंतन और खोज एवं विकास के नए अवसरों की ओर ले जाएगा। जब हमारे कार्य रोटरी के आदर्शों को प्रतिबिंबित नहीं करते तब हम सभी को सम्मानपूर्वक बोलने और खुद को एवं एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराने के लिए सशक्त महसूस करना चाहिए। इस साझी यात्रा का हिस्सा बनने के लिए अधिक अवसरों की तलाश करें। हम दुनिया भर के अपने सदस्यों से सहभागिता, सहयोग और उनके विचार चाहते है क्योंकि हम यह दिखाने का प्रयत्न करते है कि जब हम विविधता और सभी के लिए सम्मान हेतु अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखते है तो क्या कुछ संभव हो सकता है'', वह कहते है। ■

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP

Statement about ownership and other particulars about *Rotary Samachar* to be published in the first issue of every year after the last day of February

1. Place of Publication	:	Chennai - 600 008
2. Periodicity of its publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
4. Publisher's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
5. Editor's Name	:	Rasheeda Bhagat
Nationality	:	Indian
Address	:	25, Jayalakshmipuram 1st Street Nungambakkam Chennai - 600 034
6. Name and address of individual who owns the newspaper and partner or shareholders holding more than one percent of the total capital	:	Rotary News Trust Dugar Towers, 3rd Floor 34, Marshalls Road Egmore Chennai - 600 008

I, P T Prabhakar, declare that the particulars given are true to the best of my knowledge and belief.

Chennai - 600 008
1st March, 2021

sd/-
P T Prabhakar

सपनों को जीना

निर्वाचित अध्यक्ष शेखर मेहता विशाल योजनाओं का निर्माण करने से नहीं घबराते । टीम के साथ मिल कर, उन्हें मूर्त रूप देने का उनका अलग ही अंदाज़ है

रोटरी पत्रिका के साथ एक घंटे चले साक्षात्कार के दौरान, शेखर मेहता ने कम से कम दर्जन बार सपने देखने का ज़िक्र किया। टूटे दिलों को जोड़ने के सपने। दुनिया से पोलियो उन्मूलन का सपना। भारत में 2026 तक साक्षरता दर 95 प्रतिशत तक पहुंचाने का सपना, वो भी एक ऐसे देश में जहां 4 में से 1 व्यक्ति पढ़ नहीं सकता।

''सपनों का बड़ा होना ज़रूरी है ताकि लोग सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित हों'', वे कहते हैं। ''एक बार गांधी ने कहा था कि यदि आप को अपना लक्ष्य पता चल गया है, तो साधन उपलब्ध हो जाएंगे। मेरा सम्पूर्ण रोटरी जीवन कमोबेश ऐसा ही रहा है।''

मेहता की परवरिश एक ऐसे घर में हुई जो सेवा के लिए प्रतिबद्ध रहा है; उनके माता-पिता दोनों ही लायंस क्लब इंटरनेशनल के सदस्य थे। कम उम्र में ही उन्होने सीखा कि सेवा संगठन किस प्रकार भलाई कर सकते हैं, जब उनके मित्र चितरंजन चौधरी ने उन्हें रोटरी सदस्य बनने के लिए कहा, तो मेहता सहजता से से हामी भर दी। हालांकि उस समय वे केवल 25 साल के थे, शीघ्र ही उन्हें रोटरी के भीतर अतिरिक्त भूमिकाएं दी गईं - उनका आदर्श वाक्य था कि अगर किसी ने पूछा तो वो हां कहेंगे उसके बाद टीम बनाने के लिए दूसरों को सहयोग के लिए आमंत्रित करेंगे। वे टीम के योगदान को बहुत महत्व देते हैं।

यह केवल बड़े सपने देखने का ही नहीं, बल्कि सपनों को साकार करने का सामर्थ्य भी रखते हैं। या तो पहले मैं इसे कर चुका हूँ या मेरे पास इस के लिए कोई योजना है; अन्यथा, मैं इसे करने के लिए दूसरों से नहीं कहता, वह कहते हैं। भारत में वह ऑपरेशन आईसाइट यूनिवर्सल के निदेशक हैं, वे शेल्टरबॉक्स के पूर्व ट्रस्टी रह चुके हैं (उन्होंने 2004 में हिंद महासागर में आये सुनामी तूफ़ान से प्रभावित परिवारों के लिए लगभग 500 घरों के निर्माण में सहायता की थी), और हजारों स्कूलों तक पहुंच चुके साक्षरता कार्यक्रम के जनक हैं। फिर भी इस साक्षात्कार के दौरान उन्होंने इन सब का कोई उल्लेख नहीं किया, और जब उपलब्धियों की बात होती हैं, तो वे सदैव ''मैं की अपेक्षा हम'' का प्रयोग करते हैं।

उनकी थीम, *सर्व टू चेंज लाइव्स* (जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा करें), उनके द्वारा किये गए प्रत्येक कार्य में स्पष्टतः परिलक्षित होता है ।

बगल में बैठी पत्नी राशी के साथ शेखर मेहता की, रोटरी के मुख्य संपादक जॉन रेजेक और वरिष्ठ अधिकारी व लेखिका डायना शॉर्बग के साथ नवंबर में मेहता के कोलकाता स्थित निवास पर बातचीत हुई, जहाँ से वे रोटरी क्लब ऑफ़ कलकत्ता-महानगर के सदस्य हैं। हालाँकि चर्चा ज़ूम पर हुई थी और प्रतिभागियों के बीच 8,000 मील का फासला था, लेकिन मेहता का संदेश और उत्साह, इतना भावोत्तेजक और दिल के करीब लग रहा था मानो हम सब इवान्स्टन में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय के भीतर, निर्वाचित अध्यक्ष के कार्यालय में साथ साथ बैठे हों। अंत में, हम में से हर एक यही सोच रहा था कि हमारे सपने कितने विशाल और साहसिक हो सकते हैं।

आपको कब एहसास हुआ कि रोटरी में एक सदस्य के रूप में आप कुछ महत्वपूर्ण निष्पादित कर सकते हैं?

मेरी दीक्षा ही चुनौतियों के साथ हुई थी। 25 साल का था मैं जब एक मित्र ने मुझसे पूछा कि क्या मैं रोटरी में शामिल होना चाहता हूं, उसके बाद अपने क्लब में प्रवेश लिया था। पहले महीने में ही मुझे विज्ञापनों की बिक्री के माध्यम से धन जुटाकर एक स्मारिका प्रकाशित करने के लिए कहा गया था। मुझे इसका कोई पूर्व अनुभव नहीं था। लेकिन जब मुझसे पूछा गया, तो मैंने कहा ठीक है। कई लोगों ने मेरी मदद की और अकस्मात् ही यह बहुत सफल हो गया। हमने काफी पैसा जुटाया था और सबने बधाई दी, वाह, शेखर, बढ़िया काम किया! तीन महीने बाद, मुझे क्लब बुलेटिन का संपादक बनने के लिए कहा गया। वह काम मुझे बहुत अच्छा लगा था! अगर कभी भी मुझे क्लब स्तर पर एक और काम करने के लिए कहा जाए, तो मैं यही काम पसंद करूंगा। आप सूचनाओं का तंत्रिका केंद्र बन जाते हैं; हर जानकारी आप से हो के गुजरती है। आपको पता रहता है कि क्लब में और उस के आस-पास क्या हो रहा है, रोटरी में इतना अधिक संलिप्त रहने की कई वजह थीं और उनमें से एक वजह बुलेटिन के साथ जुड़ाव थी।

कुछ समय बाद, हमने एक कृत्रिम अंग शिविर आयोजित किया, जहाँ हम उन लोगों को कृत्रिम अंग लगाने वाले थे जिनके पैर नहीं थे और उन्हें हाथ से चलाने वाली ट्राई साइकिल दी जाने थी। सबको कोई ना कोई कार्य दिया गया था और मुझे यह निर्धारित करने की जिम्मेदारी दी गई थी कि साईकिल लेने वाले के पास पैडल खींचने के लिए हाथों में पर्याप्त शक्ति भी है या नहीं। ये जानने के लिए मैं उनको अपना हाथ पकड़ाता और उसे अपनी ओर खींचता था।

पहले व्यक्ति को मैंने अपनी तरफ आते देखा, लेकिन वह चल नहीं रहा था, वह घिसट कर चल रहा था। जैसे ही उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसे अपनी ओर खींचने के लिए मैंने अपना हाथ आगे किये और मेरी कंपकंपी छूट गई। उसके हाथ बहुत मैले थे और मैं उन्हें छूना नहीं चाहता था। चौथा व्यक्ति कोढ़ी था, लेकिन मेरे पास कोई और विकल्प नहीं था: मुझे हर हाथ को थामना था। लेकिन सातवें या आठवें हाथ के बाद मैं अपनी झिझक तो भूल गया बल्कि मैं उनकी दुर्दशा के बारे में सोचने लगा था। मेरे ख़याल से उस वक़्त मेरे भीतर कुछ परिवर्तन

हुआ और मैं एक रोटेरियन में तब्दील हो गया: मुझे अनुभव हो गया था कि वो कैसा महसूस करते होंगे।

आपने रोटरी में बड़े स्तर की ज़िम्मेदारियाँ उठाने का प्रयास किया या बड़े स्तर की ज़िम्मेदारीयों ने आपको ढूंढ निकाला ?

मैंने रोटरी में कभी कुछ नहीं मांगा और नाही कभी के लिए मना किया। हर व्यक्ति से मैं यही बात कहता हूँ : एक रोटेरियन एक स्वयंसेवक है, और स्वयंसेवक होने का तात्पर्य है, हां, मैं कुछ करना चाहता हूं। अगर आप ना कहते हैं या मना करते हैं तो आप स्वयंसेवक कैसे हुए?

जब आपको पता चला कि आप रोटरी के अध्यक्ष बनने जा रहे हैं, उस समय आपकी प्रतिक्रिया क्या थी?

तत्काल प्रतिक्रिया? बहुत अच्छा लगा था। हाँ, जोश में आ कर मै उछला नहीं। जब भी मेरे कन्धों पर जिम्मेदारियां आती हैं, उन्हें मैं सेवा का एक बड़ा अवसर मानता हूं।

इसका एक उदाहरण बताता हूँ। जब मुझे रोटरी निदेशक के रूप में चयनित किया गया था, तो मुझे एक बड़े अभिनंदन कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। भारत में ये आम बात है। लोग मंच पर आते हैं और आपके बारे में अच्छी-अच्छी बातें कहते हैं, आपकी तारीफ़ करते हैं। मुझे काफी झेंप महसूस हुई। मुझे लगा कि इस तारीफ़ को सही साबित करने के लिए मुझे असाधारण कार्य करने होंगे। इसलिए, उस रात, मैंने वो लिखा जिसे अगले दो वर्षों में हासिल करने की आशा की थी। मैं एक ऐसी दुनिया से सम्बन्ध रखता हूँ जहाँ ज़रूरतें बहुत ज़्यादा हैं और काम करने के अवसर ढेर सारे। सुबह 4 बजे तक मैं सोचता रहा, जैसे, भारत में 50 नेत्र अस्पताल खोलना, 5,000 बच्चों के दिल की सर्जरी करना। भारत के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम कहते थे कि सपने वो नहीं होते जो आप सोते समय देखते हैं, बल्कि सपने वो हैं जो आपको सोने नहीं देते। उस दिन उनके कहे शब्द मेरे ज़ेहन में साफ़ साफ़ गूँज रहे थे।

जब लोगों को पता चला कि मैं क्या हासिल करने की योजना बना रहा हूं तो उन्होंने मेरी खिल्ली उड़ाई थी। आप जब भी असाधारण कार्य करने की कोशिश करेंगे तो लोग आप पर हँसेंगे, लेकिन जीत आपकी ही होगी। मुझे ये बताते हुए बेहद खुशी हो रही है, इनमें से कई सपने पूरे हो चुके हैं।

क्या हमें रोटरी अध्यक्ष के रूप में आपके कार्यकाल में सपनों की एक विस्तृत श्रृंखला देखने को मिलेगी?

निश्चित रूप से। अगर ऐसा नहीं होता है, तो सच कहूँ, मैं एक योग्य अध्यक्ष नहीं हूं। और मैं यह भी अच्छी तरह समझता हूं कि जब मैं रोटरी निदेशक था तो मेरा ध्यान सिर्फ भारत पर केंद्रित था। जब मैं रोटरी का अध्यक्ष बनूंगा, तो मेरा ध्यान पूरी दुनिया पर होगा और दुनिया में रोटरी, हर जगह एक जैसी नहीं है।

हमारा संगठन116 वर्ष पुराना हैं जो 200 से अधिक देशों और भौगोलिक क्षेत्रों में विद्यमान है और जिसके पास 1.2 मिलियन नेता हैं - सिर्फ रोटेरियन नहीं बल्कि लीडर्स - हमारे पास एक बीमारी का लगभग उन्मूलन करने की विरासत भी है। हमें ऐसी परियोजनाएं करनी होंगी जिनका प्रभाव राष्ट्रीय स्तर पर पड़े। मैं दुनिया के सबसे बड़े राष्ट्रों में से एक से सम्बन्ध रखता हूँ, और रोटरी के काम का प्रभाव आज राष्ट्रीय स्तर पर देखा जा सकता है। मैं जानता हूँ कि नेपाल में भी राष्ट्रीय स्तर पर इसका प्रभाव हो सकता है। यह बांग्लादेश, पाकिस्तान में भी हो सकता है। और पोलियो का उन्मूलन तो हमने वैश्विक स्तर पर किया है जो अब केवल दो देशों में सिमट कर रह गया है।

रोटरी ने भारत में टीवी के माध्यम से ग्रेड अनुसार स्कूली शिक्षा देने का विचार किया था, प्रत्येक ग्रेड के लिए समर्पित एक चैनल - ग्रेड 3, चैनल 3; ग्रेड 9, चैनल 9. वही पाठ्यक्रम टेलीकास्ट होगा जो पाठ्यक्रम बच्चे को स्कूल में पढ़ाया जायेगा और प्रत्येक पाठ के अंत में एक संदेश कि इसे रोटरी द्वारा संभव किया गया था। प्रतिदिन इसे 100 मिलियन बच्चे देखते; 100 मिलियन बच्चे रोटरी का नाम सुनते और रोटरी की पहचान एक ऐसे संगठन के रूप में स्थापित होती जो दुनिया में भलाई के कार्य करता है।

हमने इसे साढ़े पांच साल में लागू करने की योजना बनाई थी। लेकिन कोविड 19 ने एक अवसर प्रदान किया, सरकार ने भी इसे समर्थन देने में रूचि दिखाई, परिणाम, जिस काम को करने में साढ़े पांच साल लगने वाले थे, हमने साढ़े पांच सप्ताह में कर दिखाया।

इसलिए जब मैं कहता हूं कि हम राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव डाल सकते हैं, मुझे मालूम है हम डाल सकते हैं। रोटरी में यह करने की ताक़त है।

भारत में रोटरी की क्या विशिष्टताएं हैं, और आपके विचार से उन में से किन विशिष्टताओं को रोटरी दुनिया के अन्य क्षेत्रों द्वारा अपनाया जाना चाहिए?

दिल से सोचो पहले, दिमाग से नहीं। उन लोगों की कल्पना करें जिन्होंने सोचा था कि हम पोलियो का उन्मूलन करेंगे, और यदि उन्होंने केवल अपने दिमाग का उपयोग किया होता, तो हम ऐसा कभी भी नहीं कर पाते। यह एक अजीबोगरीब सपना था। क्या आपने कभी ऐसी योजना बनाई है जिसमें कई दशक लगें? उसके बावजूद भी हमारे भीतर ऐसे सपने देखने की हिम्मत है ।

हमें इन परियोजनाओं को हाथ में लेने और जोखिम उठाने के लिए तैयार रहने की जरूरत है। मुझे असफलताओं की ज़रा भी चिंता नहीं है। मैं उन में से हूँ जो 10 सपने देखेगा और केवल छह में

रशीदा भगत

RIPE शेखर मेहता और राशी।

सफल रहेगा बनिस्पत उनके जिनके सिर्फ दो सपने हैं और वो दोनों में सफल होते हैं। यह आंकड़ों और प्रतिशत का खेल नहीं है; इसका सम्बन्ध दुनिया में भलाई के कार्य करने से है। बड़ा सोचें।

अपने कार्यकाल में आप क्या हासिल करना चाहते हैं?

मेरे दो व्यापक लक्ष्य हैं। पहला, हमारी सदस्यता को 1.3 मिलियन तक पहुंचने की आवश्यकता है। 20 वर्षों से यह 1.2 मिलियन पर स्थिर है। इसे बदलने की जरूरत है और ये बहुत मुश्किल नहीं है: अगर प्रत्येक सदस्य सिर्फ एक नए सदस्य को लाये। हममें से प्रत्येक सदस्य ये काम करेगा। और हां, एक सदस्य मैं भी लाऊंगा ।

सेवा को ले कर मैं बहुत संवेदनशील हूँ। सेवा के माध्यम से हमारा संगठन दुनिया में भलाई के काम कर रहा है। आगामी वर्ष में, लड़कियों को सशक्त करने पर ध्यान दिया जाएगा। हम सभी बच्चों को शिक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन लड़कियों पर विशेष ज़ोर रहेगा। हम शौचालय और अन्य सभी स्वास्थ्य-रक्षा सम्बन्धी सुविधाएं प्रदान करने पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। हमें यह समझने की ज़रुरत है कि लड़कियां अधिक असुरक्षित हैं – तस्करी के लिए, विशेष रूप से देह व्यापार में – और यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम उनकी रक्षा करें, उन्हें संरक्षित करें।

क्या रोटरी अध्यक्ष पद के लिए एक वर्ष का समय बहुत कम है?

मैं नहीं समझता कि संगठन में अध्यक्ष बहुत अधिक परिवर्तन करता होगा, और मेरे विचार से अध्यक्ष को ऐसा करना भी नहीं चाहिए। यदि आप पिछले 10 वर्षों पर नज़र डालें, तो यह कहना बहुत मुश्किल होगा है कि कोई बात किसी वर्ष विशेष के दौरान हुई होगी। और मुझे खुशी है कि आप ऐसा नहीं कह पाएंगे, क्योंकि इससे ये स्थापित होता है कि यह पद अध्यक्ष से सम्बंधित नहीं है; बल्कि संगठन के सन्दर्भ में है। एक अध्यक्ष 1.2 मिलियन सदस्यों को प्रेरित कर सदस्यता में वृद्धि करने और अधिक कार्य करने के लिए बहुत कुछ कर सकता है।

क्या रोटरी की अध्यक्षता रोटरी का सर्वश्रेष्ठ कार्य है?

रोटरी में क्लब अध्यक्ष का पद सर्वश्रेष्ठ है। रो इ अध्यक्ष की तुलना में आप क्लब अध्यक्ष के रूप में कहीं अधिक गति से कार्य करते हैं। व्यवहारिक रूप से आपको स्वयं कार्य करने का आनंद मिलता है।

क्या अपनी थीम का सृजन आप आपने स्वयं किया है?

नहीं। मेरा हर काम टीम वर्क से सम्बंधित होता है। मुझे प्रत्येक व्यक्ति से सुझाव लेना पसंद है। कमरे में हम लगभग 10 लोग बैठे थे। वास्तव में यह थीम रोटरी में मेरे सिद्धांतों का प्रतिबिम्ब है। मैं चाहता था कि यह सेवा हो, लेकिन लोगों ने कहा कि थीम में कार्य का आह्वान होना चाहिए। तो ये सेवा से सेवा करना हो गई। और जब आप ऐसा करते हैं, आप जीवन को परिवर्तित करते हैं, भलाई के लिए। तो थीम है: सर्व टू चेंज लाइव्स।

आपके विचार से सबसे बड़ी चुनौती क्या होगी?

एकमात्र चुनौती, यदि कोई है, तो वो होगी महामारी, क्योंकि यह लोगों से मेरी मुलाक़ात में बाधक हो सकती है। मुझे आभासी दुनिया पसंद है, क्योंकि इसके फायदे बहुत हैं। लेकिन रोटरी लोगों का संगठन है। लोगों को लोगों से मिलना होता है। जो प्रभाव मैं व्यक्तिगत रूप से मिल कर पैदा कर सकता हूँ, वो उससे कहीं ज़्यादा होगा जब मैं संदेश टाइप कर रहा होता हूं। तो आइए हम सब कोविड से निजात पाएं और जल्द से जल्द आपस में मुलाक़ात करें।

क्या आप मानते हैं कि परिस्थितियाँ निराशाजनक हैं?

नहीं, बिलकुल नहीं। इस महामारी से अधिक निराशाजनक कुछ नहीं हो सकता, लेकिन हम रास्ता ढूंढ निकालेंगे। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। मेरे क्लब में 90 सदस्य हैं, लेकिन महामारी के दौरान हाल ही में संपन्न हमारी नियमित साप्ताहिक बैठक में 2,400 लोग मौजूद थे। महामारी के बिना, हम ये नहीं कर पाते। तो, निराशाजनक स्थिति? नहीं, वहां तो हमें अवसर मिलते हैं।

© Rotary

रोटरेक्टरों ने करूर युद्ध स्मारक का जीर्णोद्धार किया

वी मुत्तुकुमारन

रोटरेक्ट के एक प्रोजेक्ट ने तमिलनाडु के एक ऐतिहासिक शहर करूर के लोगों को अपनी महान विरासत पर गर्व करने में समर्थ बनाया। यह सब रोटरी क्लब करूर, रो ई मंडल 3000 की एक साप्ताहिक बैठक के साथ शुरू हुआ, जब वे अपनी वार्षिक परियोजनाओं को अंतिम रूप दे रहे थे। ''हम कुछ अतिरिक्त परियोजनाओं को करना चाहते थे जो वास्तव में प्रभाव डाल सकें।'' इसके बाद एक चार-सदस्यीय दल ने शहर से चार किलोमीटर दूर रेयानूर के युद्ध स्मारक का दौरा किया ताकि इस खंडहर संरचना को पहली बार देखा जा सके और ''बिना वक्त गंवाए उसी समय हमने पूरे परिसर कर नवीकरण करने का फैसला किया'' क्लब के अध्यक्ष आर. सबरीश ने बताया।

रोटरेकटरों ने 2डी डिजाइन, 3डी विजुअलाइजेशन, ग्राफिकल ओवरव्यूह और प्रोजेक्ट अनुमान के साथ जिले के कलेक्टर अंनबालागन से मुलाकात की और नवीनीकरण कार्य के लिए आधिकारिक स्वीकृति प्राप्त की। रोटरेकटरों में से एक, वास्तुकार एनसीबी कविअरासु ने फेसलिफ्ट डिजाइन करने एवं नवीकरण के लिए तकनीकी सुविधाएं प्रदान करने की पहल की।

रॉटरेक्ट क्लब करूर के अध्यक्ष आर सबरीश (दाएं) और जिला कलेक्टर टी अंबालागन (दाएं से तीसरा) की उपस्थिति में राज्य के परिवहन मंत्री एम आर विजयभास्कर ने पुनर्निर्मित स्मारक का उद्घाटन किया।

पुनर्निर्मित करूर युद्ध स्मारक।

सबरीश और उनकी टीम ने एशियन फैब्रिक्स से संपर्क किया जो आसानी से उनके सीएसआर के हिस्से के रूप में पूरे ₹3.25 लाख की परियोजना को प्रायोजित करने के लिए सहमत हो गए। मुख्य संरचना, ओबिलिस्टक के गुबंद पर पेंट की एक नई परत चढ़ाई गई और लगभग 660 वर्ग फुट के समस्त परिसर को स्टील राफ्टर्स, फेनसिंग, टाइलें लगाने, सिविल कार्य, सोलर लाइट के कार्यों आदि द्वारा नया मेकओवर प्रदान किया गया। जंगली झाड़ियों, खरपतवार और मलबे को हटाया गया स्थल की सुंदरता को बढ़ाने के लिए फूलों के पौधे लगाए गए। हालांकि, मुख्य आकर्षण शिलालेखों वाले छह स्तंभों को खड़ा करना है जो स्मारक युद्ध स्मारक के पीछे के इतिहास को बताते हैं।

यह युद्ध में मारे सैनिकों की याद में और विजय के प्रतीक के रूप में बनाया गया था जब अंग्रेजों ने द्वितीय आंग्ला-मैसूर युद्ध (1780-1784) के दौरान टीपू सुल्तान से करूर किला हासिल कर उस पर कब्जा कर लिया था। ''दुर्भाग्य से युद्ध में किला नष्ट हो गया था'' सबरीश ने कहा। परिवहन मंत्री एम आर विजयभास्कर ने क्लब के 35वें चार्टर दिवस पर नवीकरण किए गए युद्ध स्मारक का उद्घाटन किया। ■

कोयंबटूर का गियर मैन जिसने निस्वार्थ सेवा की थी

जयश्री

अम्मा, आज आप चिंता ना करें, मैं SSS में नाश्ता कर लूँगा और दोपहर का खाना भी वहीं से पैक करवा लूँगा'', ऐसा एक बैंक कर्मचारी, रामासामी अपनी मां से कहते हैं, जब वो काम पर जाने के लिए निकलते हैं। कोयंबटूर के सिंगनलूर नामक इलाके के अधिकांश घरों में यह एक जाना पहचाना नज़ारा है। शांति सोशल सर्विसेज़ (SSS), 1996 से कोयंबटूर के लोगों के लिए एक वरदान साबित हुई है, जब इसकी स्थापना शांति गियर्स के संस्थापक पी सुब्रमण्यन ने की थी। इस विशाल सुविधा में एक चिकित्सा केंद्र, नैदानिक प्रयोगशाला, रेडियोलॉजी सेंटर, ब्लड बैंक, फार्मेसी, आई केयर सेंटर, पेट्रोल-पंप और एक विशाल कैंटीन है। यह पास में ही एक एलपीजी श्मशान भी चलाता है और शहर भर में इसकी ऑप्टिकल दुकानें हैं।

'मानवता की सेवा ही ईश्वर की सेवा है' यह सुब्रमण्यन का मंत्र था, जिनका पिछले दिसंबर में निधन हो गया। यह इतने लोकप्रिय और परोपकारी थे, कि उनके मृत्युलेख को लोगों द्वारा अपनी लागत पर अखबारों में चलाया गया था और उनकी धर्मार्थ भावना और सेवा को दर्शाते हुए पूरे कोयंबटूर में पोस्टर लगाए गए थे। पूरी तरह से मीडिया शर्मीले और एक बहुत ही छोटे प्रोफ़ाइल वाले आदमी, सुब्रमण्यम सभी प्रचार और पुरस्कार या प्रशस्ति पत्र से दूर रहते थे। SSS कैंटीन के एक स्टाफ सदस्य ने कहा, ''एक ऐसे आदमी के लिए जिसे उन्होंने केवल सुना है और देखा भी नहीं है, सभी लोगों से दुख और श्रद्धांजलि का इतना बड़ा सैलाब आना एक दुर्लभ दृश्य है।''

जबकि कोयंबटूर के ''गियर मैन'' अब इस दुनिया में नहीं रहे हैं, उनकी निस्वार्थ सेवा का मंत्र SSS की हर सेवा सुविधा में परिलक्षित होता है। कम से कम 300 जरूरतमंद लोगों के लिए दोपहर का भोजन मुफ्त में परोसा जाता है और 10,000 लोगों को हर दिन मामूली कीमत पर खाना मिलता है। ऑटोरिक्शा ड्राइवर, इब्राहिम बाशा कहते हैं, ''मैं यहां हर दिन पूरा खाना खाता हूं और इसकी कीमत मुझे सिर्फ ₹10 और रात के खाने की कीमत सिर्फ़ ₹15 देनी पड़ती है।'' दोपहर के खाने में असीमित चावल, सांभर, साग, रसम, वेजिटेबल करी और छाछ शामिल हैं। रात के खाने में इडली/डोसा, सांभर, चटनी जैसी किस्में शामिल हैं; और साथ में पूड़ी, सब्ज़ी; वड़ा या पोंगल की दावत रहती है। चाय की कीमत ₹5 और कॉफी की कीमत मात्र ₹10 है। स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक सफेद चीनी की जगह डेमेरारा चीनी इस्तेमाल की जाती है। पीने के पानी को एक आरओ यूनिट द्वारा फ़िल्टर करके पिलाया जाता है। स्वच्छता कर्मचारी हमेशा ग्रे टी-शर्ट में रहते हैं और उनके संस्थापक का मंत्र उनकी पीठ पर मुद्रित होता है, मुखौटे और दस्ताने पहने हुए , ये सेवादार विनीत रूप से टेबलों को साफ करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

कैंटीन एक साफ़ और स्वस्थ माहौल में पौष्टिक शाकाहारी भोजन परोसता है। कैंटीन के एक कर्मचारी कहते हैं, ''हम मैदा, अजी-नो-मोटो या ऐसी किसी अस्वस्थ सामग्री को शामिल नहीं करते हैं, इसके बजाय बाजरा, ग्राम, अंकुरित अनाजों और रागी का उदारतापूर्वक इस्तेमाल करते हैं। हमारे अय्या (मालिक) विशेष रूप से कहते थे कि केवल स्वस्थ भोजन परोसा जाना चाहिए। वे नहीं चाहते थे कि लोग अस्वस्थ आहार खाने के कारण बीमार हों और इसके इलाज पर अनावश्यक रूप से खर्च करें।''

उनके एक करीबी परिचित रोटेरियन कहते हैं, ''सुब्रमण्यन अक्सर कहते थे, वे सिर्फ अपने आसपास के लोगों के साथ वही सब साझा कर रहे हैं जो कि भगवान ने उनको दिया है।'' यह

फार्मेसी रियायती मूल्य पर दवाई प्रदान करती है।

रोटेरियन अपने नाम को गुप्त रखते हुए आगे कहते हैं, ''हालांकि मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता हूँ और यह भी कि वे इन्सान के रूप में एक नगीना थे, लेकिन फिर भी मैं उनके बारे में मीडिया से बात नहीं करना चाहता, क्योंकि बेशक वह हमें छोड़कर चले गए हैं, लकिन उनकी भावनाओं का मैं आज भी सम्मान करता हूं।''

SSS में काम कर रहे एडमिन मैनेजर का भी यही कहना है, ''हमारे अय्या अपने सिद्धांत के पक्के थे; उनका मानना था कि जो हम अपने दाहिने हाथ से देते हैं, उसकी खबर हमारे बाएं हाथ को भी नहीं होनी चाहिए। हालांकि लोगों ने सुझाव दिया था कि उनकी सेवाओं का प्रचार कई अन्य लोगों को प्रेरित कर सकता है, लेकिन वह फिर भी कहते थे, ''ऐसा मैं अपनी व्यक्तिगत हैसियत से करता हूं। कई और भी लोग हैं जो अपने समुदायों में अच्छा काम कर रहे हैं और एक को दूसरे को दोहराने की कोई जरूरत नहीं है।'''

सुब्रमण्यन एक पहली पीढ़ी के उद्योगपति थे, जब उन्होंने 1960 में शहर में कपड़ा उद्योग क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए एक गियर विनिर्माण इकाई की स्थापना की थी। यह 1972 में एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी – 'शांती गियर्स' में तबदील हो गई, जिसके बाद से वह मकोयंबटूर के गियर मैनफ के रूप में लोकप्रिय हो गए। कंपनी को 2012 में चेन्नई के मुरुगप्पा समूह को बेच दिया गया, ताकि वह पूरी तरह से SSS, यानि कि अपने मनपसंद प्रोजेक्ट पर ध्यान केंद्रित कर सकें, जिसे उन्होंने अपनी पत्नी की याद में स्थापित किया था। विनिर्माण क्षेत्र में उनकी गतिविधियों के अलावा, उनकी समाज सेवा की गतिविधियों ने उन्हें एक मशहूर व्यक्तित्व बना दिया। वह अपनी इस नीति के साथ हमेशा खड़े रहे कि किसी से भी दान के लिए न विनती करनी है, न कभी मांगना है, न ही कभी स्वीकार करना है। व्यापार और उद्योग में उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें इस साल जनवरी में पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया था।

लोग कैंटीन में अपने खाने के ऑर्डर देने के लिए लाइन में खड़े हैं।

ट्रस्ट की अन्य सेवाएं भी गुणवत्ता से समझौता किए बिना कैंटीन की तरह ही किफायती हैं। ''अस्पताल सेवाएं शहर में किसी भी अन्य की तुलना में 50-75 प्रतिशत कम कीमत पर आती हैं। जब भी मैं अपने परिवार को परामर्श के लिए यहां लाता हूं तो डॉक्टर सिर्फ ₹30 चार्ज करता है; मैंने कभी किसी अन्य अस्पताल का दौरा नहीं किया है'', बाशा कहते हैं। श्मशान सेवाएं जरूरतमंदों के लिए मुफ्त और दूसरों के लिए नाममात्र के शुल्क पर हैं। दवाएं बाजार मूल्य से 30 फीसदी कम पर बेची जाती हैं। SSS मेधावी छात्रों को शैक्षिक सहायता प्रदान करता है, सरकारी स्कूलों की मदद करता है और सड़कों के निर्माण में भी सहायता करता है।

पेट्रोल पंप उसी कीमत पर ईंधन बेचने के लिए प्रसिद्ध है, जिस पर स्टॉक की खरीद की जाती है, बाद में कई बार कीमत में वृद्धि के बावजूद। उनके परिचित कहते हैं कि सुब्रमण्यनजी का कहना था, ''मुझे स्टॉक खरीदने से जो कमीशन मिलता है, वह मेरे लिए पर्याप्त है और मैं अनुचित लाभ नहीं कमाना चाहता।'' यह परिचित उनके बारे में आगे कहते हैं, ''वह एक कर्मयोगी थे। हर दिन वह कैंटीन में आते और जब लोग उन्हें पहचाने बिना उनकी सराहना करते तो वह सिर्फ़ मुस्कुराकर रह जाते; लेकिन वह महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया को गंभीरता से लेते थे और हर कमी को तुरंत सुधारते थे। मैं अपने आपको बहुत खुशनसीब मानता हूँ कि मुझे उनका साथ मिला।''

इस इलाके में किराए के लिए एक मकान प्राप्त करना बहुत मुश्किल है, क्योंकि लोग शायद ही कभी यहां से शिफ्ट होते हैं। उन्हें अपने पड़ोस के SSS की सभी सेवाओं से फायदा लेने की इतनी आदत जो हो गई है। उनके गुजर जाने के बाद भी वह हजारों लोगों के दिलों में, हर एक भोजन में और हर किसी के विचारों में रहते हैं, रामासामी कहते हैं। ■

ट्रस्ट का पेट्रोल बंक।

कोविड ने भारतीय फार्मा के लिए अवसर खोलें

इन्फोसिस के गैर-कार्यकारी अध्यक्ष, नंदन निलेकनी

वी मुत्तुकुमारन

कोविड टीकाकरण मुहिम के दौरान बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं के साथ कोई समझौता नहीं किया जाएगा और केंद्र सरकार सख्त वैज्ञानिक मानदंडों और प्रोटोकॉल का पालन करेगी, भारत सरकार के नियोजन निकाय, नीति आयोग, के सीईओ अमिताभ कांत ने कहा।

स्वास्थ्य कर्मियों, अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं, नागरिक सुरक्षा बलों जैसे कि पुलिस कर्मियों और होमगार्ड, 50 वर्ष की आयु से ऊपर सहरुग्णता से पीड़ित लोगों और अंतर्निहित बीमारियों वाले युवा लोगों को प्राथमिकता दी जाएगी, उन्होंने आभासी रोटरी संस्थान में कोविड-19: महामारी चुनौती को प्रबंध करने के तरीके पर आयोजित एक पैनल चर्चा में कहा।

उन्होंने आश्वासन दिया कि यह प्रौद्योगिकी मंचों और डिजिटल इंटरफेस के महत्व के साथ टीकाकरण अभियान का एक क्रमबद्ध, सहज रोलआउट होगा। हम कोविड कोल्ड चेन स्थापित करेंगे और सरकारी मेडिकल डिपो और स्टोर को मजबूत करेंगे।

अपोलो हॉस्पिटल्स के अध्यक्ष डॉ प्रताप रेड्डी

Wockhardt समूह के सीईओ रोटेरियन हाबिल खोराकीवाला, जिन्होंने भारत में स्वास्थ्य सेवा के खर्च को पुनः संरचित करने की मांग की, के शब्दों को दोहराते हुए कांत ने कहा कि सार्वजनिक स्वास्थ्य पर जीडीपी का 2 प्रतिशत से भी कम खर्च हो रहा है, सरकार को इसे 5 प्रतिशत तक बढ़ाना चाहिए साथ ही बच्चों के पोषण स्तर को बढ़ाने पर भी समान ध्यान देना चाहिए। इसकी तुलना में, पश्चिमी देश अपने सकल घरेलू उत्पाद का 10-12 प्रतिशत खर्च करते है और अमेरिका स्वास्थ्य सेवा पर 18 प्रतिशत खर्च कर रहा है।

आयुष्मान भारत योजना के तहत, भारत सरकार ने 150,000 क्लीनिकों में से 50,000 स्वास्थ्य और कल्याण क्लीनिकों की स्थापना की है और प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (PMJJBY), जो दुनिया की सबसे बड़ी नकदीहीन बीमा योजना है, में 500 मिलियन भारतीय शामिल है जो सूची में शामिल अस्पतालों में जाकर निःशुल्क इलाज प्राप्त कर सकते है। एम्स के निदेशक डॉ रणदीप गुलेरिया ने कहा कि कोविड के टीकों पर वैश्विक डेटा को विभिन्न स्ट्रैन को भी ध्यान में रखना चाहिए जैसा कि हाल ही में यूके में पाया गया है।

जहाँ यूके उत्परिवर्ती स्ट्रैन के कारण पूर्ण रूप से अपनी टीकाकरण रणनीति को संशोधित कर रहा है, हमें स्पुतनिक और ज़ाइडस कैडिला द्वारा बनाए जा रहे टीकों सहित देश के लिए अनेक नए टीकों को अपनाने हेतु खुले विचार रखना चाहिए ताकि एक बड़ी आबादी का टीकाकरण किया जा सकें, डॉ गुलेरिया ने कहा। हमें एक आक्रामक दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता है एवं भावी महामारियों को रोकने के लिए संभावित उत्परिवर्तन के लिए जीनोमिक निरीक्षण में निवेश करने की आवश्यकता है।

भारत अनूठा है

खोराकीवाला के एक प्रश्न पर कि क्या यूके की तरह ही महामारी के मामलों में अचानक उछाल आ सकता है, डॉ गुलेरिया ने भारत में इस तरह की संभावना को नकार दिया क्योंकि हमने वृहद स्तर पर अपने आरटी-पीसीआर परीक्षण दरों में वृद्धि की है और पाया कि चुनावी राज्यों में भी कोविड के मामलों में हाल ही में कोई वृद्धि नहीं हुई। हमें अनहोनी के प्रकोप को रोकने के लिए निगरानी रखनी होगी। उन्होंने कहा कि प्रदूषण को कम करने के लिए एक बहुपक्षीय दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, विशेष रूप से इंडो-गंगेटिक बेल्ट में, क्योंकि यह फेफड़ों की सूजन के कारण उच्च मृत्यु दर से जुड़ा हुआ है, उन्होंने कहा।

डिजिटल मंच

कोविड टीके के लिए एक विशाल आधारभूत संरचना सुनिश्चित करने हेतु, भारत सरकार ने CoWin एप विकसित किया है, जो एक डिजिटल इंटरफ़ेस है, ताकि टीके की अंतिम चरण की डिलीवरी सुनिश्चित की जा सके, और हितधारकों की अपनी स्टॉक सूची पर नियंत्रण रखने के साथ-साथ टीका लगवा चुके लोगों पर नज़र रखने में मदद की जा सकें, इन्फोसिस के गैर-कार्यकारी अध्यक्ष, नंदन निलेकनी ने कहा। टीका मुहिम के अंत में, हमें अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने हेतु सक्षम बनना होगा, और लोगों को स्वतंत्र रूप से यात्रा करने योग्य बनाना होगा। सरकार

टीका लगवा चुके लोगों के लिए एक डिजिटल टीका प्रमाणपत्र जारी करेगी, उन्होंने कहा।

इस महामारी ने हमें इन्फोसिस के अधिकांश कार्यालयों में एक मिश्रित कार्य मॉडल लाने हेतु प्रोत्साहित किया, जिसके अंतर्गत 240,000 कर्मचारियों की संख्या में से एक तिहाई कर्मचारी अपने घर से काम कर रहे है, उन्होंने कहा। India Inc अपने कार्यालय को नए सिरे से डिजाइन करने, "नए सामान्य"के लिए अपने कर्मचारियों को प्रवीण बनाने के साथ अतिरिक्त कार्यों को समाप्त करके व्यावसायिक प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करने की प्रक्रिया में है।

ज़ाइडस कैडिला हेल्थकेयर एक डीएनए मंच पर आधारित कोविड टीके के विकास के लिए नैदानिक परीक्षण के तीसरे चरण में है और एक बार इसके पूर्ण होने पर, हम सरकार को एक साल में 150 मिलियन खुराक वितरित करेंगे, इसके सीएमडी पंकज पटेल ने कहा। टीके के विकास के लिए दुनिया की नज़र भारतीय कंपनियों पर है क्योंकि हमारे पास एक बहुत बड़ा बाजार है। हमें कोविड के लिए सही उपचार प्रक्रिया की भी आवश्यकता है, जिस पर हम काम कर रहे है, उन्होंने कहा। हालांकि भारत में एक सक्रिय सरकार के साथ एक अच्छा पारिस्थितिकी तंत्र है, वैज्ञानिक प्रतिभा का दोहन किया जाना चाहिए ताकि हम दुनिया में एक परिवर्तन ला सकें, उन्होंने कहा।

चिकित्सा स्वचालन

अपोलो हॉस्पिटल्स की 24x7 हेल्पलाइन कोविड रोगियों को परामर्श प्रदान करती है और इससे कमजोर लोगों की घबराहट दूर करने में मदद मिलती

नीति आयोग, के सीईओ अमिताभ कांत

है, इसके संस्थापक-अध्यक्ष डॉ प्रताप रेड्डी ने कहा। इस अस्पताल की श्रृंखला में कोविड रोगियों के लिए विशेष रूप से होटल के 3,000 कमरे और 40,000 बिस्तरों की व्यवस्था है, उन्होंने कहा। 2021 में रोग की रोकथाम पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए और भारत 4 बिलियन डॉलर के वैश्विक चिकित्सा पर्यटन में हिस्सेदारी हासिल कर सकता है क्योंकि चेन्नई के अस्पतालों द्वारा पेश की जाने वाली कम लागत के साथ गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाओं में पश्चिम के कई रोगियों ने रुचि दिखाई है।

निकट भविष्य में, स्वचालन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), रोबोटिक सर्जरी और 3 डी प्रिंटिंग रोजमर्रा की आम बातें होंगी, उन्होंने कहा और चेतावनी दी कि 80 प्रतिशत वैश्विक मौत गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) से जुड़ी होती है और भारत में इस मृत्यु दर का एक बड़ा हिस्सा मौजूद है क्योंकि यहाँ 25-40 आयु वर्ग के लोगों में दिल का दौरा, आघात, और एनसीडी आम बात है।

वित्तीय प्रोत्साहन

टीकाकरण अभियान का एक आर्थिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए, आदित्य बिड़ला समूह के अध्यक्ष और अर्थशास्त्री अजीत रानाडे ने कहा कि 500 मिलियन खुराकों, जिसमें प्रत्येक की लागत ₹200-300 है, के साथ स्वयं की आपूर्ति श्रृंखला और स्वयंसेवक वाले एक बड़े पैमाने के इस कार्यक्रम से भारतीय अर्थव्यवस्था को ₹1.4 लाख करोड़ का वित्तीय प्रोत्साहन मिलेगा। हम संक्रमण के वक्र को उल्लेखनीय रूप से अच्छी तरह समतल करने में सक्षम हैं, लेकिन हमें अपने उपचार और रोकथाम के प्रयासों में ढील नहीं देनी चाहिए, उन्होंने कहा।

उपभोक्ताओं के विश्वास को बढ़ावा देना व्यावसायिक गतिविधि को फिर से सक्रिय करने की कुंजी है, लेकिन चालू वित्त वर्ष में (जो मार्च 2021 में समाप्त हो रहा है) हमें नकारात्मक वृद्धि दर के साथ संघर्ष करना होगा, उन्होंने कहा।

110 मिलियन बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन योजना, जिसके अंतर्गत ताजा तैयार भोजन परोसा जाता है, की तरह ही हम भारत के कुपोषित बच्चों को एक गिलास दूध प्रदान कर सकते है क्योंकि यहाँ दुनिया में सबसे अधिक 180 मिलियन टन दूध का उत्पादन होता है। एक अन्य चिंताजनक कारक 200

AIIMS के निदेशक डॉ रणदीप गुलेरिया

मिलियन से अधिक बुजुर्ग है, जो सरकार स्वास्थ्य देखभाल खर्च पर अपनी प्राथमिकता को परिवर्तित करके और औद्योगिक एवं सेवा अर्थव्यवस्था से संसाधन जुटाकर प्रदान कर सकती है, रानाडे ने कहा।

चर्चा को संक्षेपित करते हुए, खोराकीवाला ने कहा कि भारत कोविड के बाद की दुनिया में नवीन अवसरों का लाभ उठाने में शीर्ष स्थान पर है क्योंकि इसे केवल आने वाले कल की दोबारा से कल्पना करने और दोबारा उसका सर्जन करने की आवश्यकता है।

हर साल स्वास्थ्य देखभाल पर 4 ट्रिलियन डॉलर खर्च करने के बावजूद, जब महामारी ने दस्तक दी थी तब दुनिया तैयार नहीं थी और 50 मिलियन लोग प्रभावित हुए थे। वैश्विक अर्थव्यवस्था ने पिछले नौ महीनों में 10 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान झेला है, लेकिन अच्छी खबर यह है कि जहाँ पहले कई अन्य बीमारियों के टीके बनाने में हमें वर्षों लगे, कोविड के टीकों को विकसित करने में हमें एक साल से भी कम समय लगा है। ■

Wockhardt समूह के सीईओ हाबिल खोराकीवाला

यह हमारी कार्य योजना है।

हमारी प्राथमिकता

हम अपनी पहुँच बढ़ा रहे हैं

Rotary

सभी तरह के नेतृत्वकर्ताओं का स्वागत कर रहे है

हर पृष्ठभूमि से कार्यवाही करने वाले लोग हर समुदाय में मौजूद होते है। हालाँकि रोटरी परिवर्तन लाने में अग्रणी नेताओं के लिए बनी है, फिर भी जिन लोगों का हमने सर्वेक्षण किया उनमें से केवल 35 प्रतिशत ✻ ही रोटरी को अपने जैसे लोगों के एक संगठन के रूप में देखते है। और यह पर्याप्त नहीं है।

हमें लोगों को जोड़ने, विकास करने, और परिवर्तन का नेतृत्व करने के लिए अधिक स्वागत योग्य जगह बनने हेतु प्रतिबद्ध होना चाहिए। उन संगठनों के साथ नई साझेदारियों और सहयोग की तलाश करें जो समुदाय और दुनिया भर में काम करने के लिए प्रतिबद्ध हो। उस मूल्य को प्रदर्शित करें जो हम प्रदान करते है - और नए लोगों और रोटरी में उनके तरीके की मदद करें।

हम क्या करेंगे

ऐसे प्रतिभागी मॉडल विकसित करें जो विविध दर्शकों के लिए अपील करते है

लचीले कार्य मॉडलों का सृजन करें

दुनियाभर में हमारी साझेदारियों को मजबूत करने के लिए रोटरी साहचर्य का समर्थन करें

हमारी सामाजिक मीडिया उपस्थिति और पहुँच के स्रोतों को अपडेट करें

आपका क्लब क्या कर सकता है

साझा करें
आपके कार्यवाही करने वाले लोगों की कहानियाँ
(*My Rotary* पर ब्रांड सेंटर पर जाएं)

प्रोत्साहित करें
नवप्रवर्तनशील क्लबों और लचीले विकल्पों को

पहुँचें
हिस्सेदारों और साझेदारियों के लिए नए समूहों तक

अपडेट करें
आपके क्लब की वेबसाइट और सामाजिक मीडिया को

✻2015 जनरल पब्लिक ग्लोबल सर्वे

और अधिक जानना चाहते है?

पूरा एक्शन प्लान rotary.org/actionplan पर पढ़ें

© Rotary

रोटरी स्थायी वैश्विक शांति में निवेश करती है

किरण ज़ेहरा

PRID लैरी लन्सफोर्ड, रोटरी शांति केंद्र के अध्यक्ष।

द ओडिसी नामक आभासी ज़ोन इंस्टीट्यूट में एक पैनल चर्चा को संबोधित करते हुए रो ई निदेशक पीटर काइल ने कहा, ''रोटरी संयुक्त राष्ट्र बनाने वाले मूल दस्तावेजों को तैयार करने में मदद करने में सहायक थी।'' उन्होंने 1921 से घटित प्रमुख घटनाओं को याद किया जब स्कॉटलैंड के एडिनबर्ग में 12वें रोटरी सम्मेलन में रोटरी ने अपने संविधान में शांति और सद्भावना को बढ़ावा दिया था। 1945 में अमेरिका द्वारा सैन फ्रांसिस्को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किए जाने के बाद, रो ई अध्यक्ष रिचर्ड एच वेल्स के नेतृत्व में ग्यारह रोटेरियनों ने कार्यसूची को निर्देशित किया और युद्धरत पक्षों के बीच विवादों को सुलझाने में मदद करने के लिए प्रस्तावों को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र का जन्म हुआ।

काइल कहते है पोलियो से लड़ाई में मिली सफलता ने ''रोटरी को अंतर्राष्ट्रीय समस्या-समाधान क्षेत्र में जबरदस्त विश्वसनीयता और प्रभुत्व दिलाया है। हम अक्सर यह शिकायत करते है कि दुनिया पोलियो उन्मूलन में रोटरी की भूमिका के बारे में नहीं जानती। पूरी दुनिया को जानने की आवश्यकता नहीं है! नीति निर्माताओं और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों - उन्हें जानने की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र और अन्य वैश्विक संगठनों के प्रमुख नीति निर्माताओं के साथ हमारा संबंध पोलियो की वकालत के लिए महत्वपूर्ण था। हमें उन रिश्तों को अधिक गहरा और विस्तारित करना चाहिए।''

विभिन्न मुद्दों पर जब काइल ने कहा कि ''वैश्विक शांति से जुड़ी किसी भी बात में रोटरी की भागीदारी होगी क्योंकि शांति हमारे डीएनए में है'', आर्थर मैटी, रोमानिया में स्विस राजदूत, ने कहो ''शांति हमारे देश के संविधान का भी हिस्सा है और यह रोटरी के डीएनए के समान है''। यह समझाते हुए कि स्विट्ज़रलैंड शांति में निवेश क्यों कर रहा है, उन्होंने कहा ''हम लोगों के लिए शांति का निर्माण करने के अधिक अवसर पैदा करना चाहते है क्योंकि दुनिया के किसी भी हिस्से में होने वाली हिंसा न केवल मुश्किलें लाती है बल्कि उस राज्य या देश की अर्थव्यवस्था को भी बर्बाद कर देती है, जिससे निरपवाद रूप से ऐसी तरंगे निर्मित होती है जो हम सभी को प्रभावित करती है।''

रोटरी के पास शांति को लेकर व्यावहारिक ज्ञान इतना अधिक है कि ''हमें खुद से पूछना चाहिए कि शांति को बढ़ावा देने के लिए हम इन संसाधनों का बेहतर उपयोग कैसे कर सकते हैं। जिनेवा में हमारे पास एक रोटरी पीस इनक्यूबेटर है जिसमें 50 से अधिक रोटरी शांति निर्माता, रोटेरियन और रोटरेकटर मिलकर शांति परियोजनाओं के लिए 20 वैश्विक अनुदान तैयार करने हेतु एक साथ काम कर रहे है'', मैटी ने कहा।

रोटरी शांति केंद्र के अध्यक्ष, PRID लैरी लन्सफोर्ड ने कहा कि ''रोटरी के शांति कार्यक्रमों की एक महान विरासत है। भारतीय रोटेरियनों को गर्व होना चाहिए कि 20 साल पहले, PRIP राजेंद्र साबू इस कार्यक्रम के वास्तुकारों में से एक थे, जिसके आज दुनिया में सात केंद्र मौजूद है।'' उनमें से पांच मास्टर कार्यक्रम की पेशकश करते है, जबकि अन्य दो शांति निर्माण में डिप्लोमा प्रदान करते है। ''इसकी शुरुआत के बाद से 1,300 शांति निर्माताओं ने हमारे कार्यक्रमों के माध्यम से स्नातक किया है जो 115 देशों में शांति और विकास की पहलों पर काम कर रहे है और हमने देखा है कि 1,300 पूर्व छात्रों में से 93 प्रतिशत शांति और विकास से जुड़ी नौकरियों में काम कर रहे है'', उन्होंने आगे कहा।

ज़ोन 5, 6, 7 और 8 को बधाई देते हुए, लन्सफोर्ड ने कहा, ''शांति छात्रवृत्ति के लिए निर्णायक दौर के लिए चुने गए 170 व्यक्तियों में से

नौ व्यक्ति आपके ज़ोन से है – चार भारत से, तीन नेपाल से और दो श्रीलंका से। हम आशा करते है कि प्रत्येक रोटेरियन हमारे शांति कार्यक्रम के एक मजबूत समर्थक होंगे। मैं आप सभी से आग्रह करूंगा कि आप यह निर्धारित करे कि आपके संपर्क में मौजूद लोग रोटरी शांति केंद्रों का समर्थन कैसे कर सकते है'', उन्होंने कहा।

यूएन पीस बिल्डिंग आर्किटेक्चर रिव्यू के लिए इंडिपेंडेंट एमीनेंट पर्सन्स की एक सदस्य के रूप में, अमेरिका में तंजानिया की राजदूत लिबरेटा मुलामुला ने उन अंतर्निहित कमजोरियों और भिन्नताओं के बारे में बात की जिन्हें संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए वैश्विक शांति और विकास के निर्वाह हेतु समीक्षा प्रक्रिया में संबोधित किया जा रहा है। उन्होंने याद दिलाया कि विकास के बिना शांति कायम नहीं रह सकती, और विकास के लाभों के संरक्षण के लिए स्थायी शांति आवश्यक है। ''युद्ध झेल रही एक दुनिया किसी भी देश या सरकार के कंधों पर छोड़े जाने वाला एक भारी बोझ है और इसी बात में मुझे इस बैठक की प्रासंगिकता नज़र आती है।''

रो ई निदेशक पीटर काइल

शांति में निवेश करने के लिए रोटरी की आवश्यकता पर पूछे गए एक सवाल का जवाब देते हुए, अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की न्यायाधीश और पूर्व रोटरी विद्वान सिल्विया एलेजांद्रा फर्नांडीज डी गुरमेन्दी ने कहा, ''चाहे आप एक शिक्षक, राजनायिक या एक सीईओ हो, शांति सभी के हित में और सबकी जिम्मेदारी होती है। यह एक कपोल कल्पना की तरह लग सकता है क्योंकि हर बार जब हम शांति या युद्ध के बारे में बात करते है, तो हम इसे एक ऐसी चीज समझते है जो हमसे बहुत दूर है। युद्ध वास्तविक है, न केवल उन लोगों के लिए जो लड़ रहे है बल्कि हमारे लिए भी।''

RIPE शेखर मेहता के सहयोगी PRIP ब्रायन स्टाइल्स ने अपनी समापन टिप्पणी में संयोजक RID कमल संघवी को धन्यवाद दिया कि ''वह उन वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं जिनके पास शांति का अनुभव और उसे स्थापित करने का जुनून है एवं उन अंतर्राष्ट्रीय राजनायिकों को एक साथ लाए है जिन्होंने शांति के क्षेत्र में काम किया है।'' ■

TRF की मदद से अच्छे कार्य

रोटरी ने असम मेडिकल कॉलेज अस्पताल को 2 रोबोट दान किए

टीम रोटरी न्यूज़

पीडीजी कल्पना खुंद (बाएं) की उपस्थिति में असम के सी एम सर्बानंद सोनोवाल ने AMCH प्रमुख डॉ संजीब काकाती को रोबोट ड्राइविंग ऐप सौंपा।

असम के मुख्यमंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने असम मेडिकल कालेज अस्तपताल के प्रमुख संजीब काकाती को 2 रोबोट सौंपे। इन रोबोटों को जिनका उपयोग मरीजों को भोजन और दवा वितरित करने के लिए किया जाएगा, उन्हें रोटरी क्लब ढाका रॉयल, रो ई मंडल 3281 के सहयोग से एक वैश्विक अनुदान योजना की पहल के रूप में रोटरी क्लब डिब्रूगढ़, रो ई मंडल 3240 द्वारा प्रायोजित किया गया था।

यंत्रबोट नाम के इस रोबोट को आईआईटी गुवहाटी के टेक्नालॉजी इन्क्यूबेशन सेंटर के द्वारा डिजाइन और विकसित किया गया था। इस वैश्विक अनुदान के तहत, तीन अन्य अस्पतालों को भी इस तरह के उपकरण दिए जाएंगे। दर्शकों को संबोधित करते हुए, श्री सोनोवाल ने आत्मनिर्भर भारत मिशन और महामारी से लड़ने की दिशा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इसकी पहल के बारे में प्रकाश डाला।

उन्होंने मानवता के प्रति रोटरी की सेवाओं की सराहना की और उन्होंने रोटेरियन को अपने काम में शिक्षा, खेल और संस्कृति पर अधिक ध्यान देने हेतु प्रोत्साहित किया। खाद्य प्रसंस्करण राज्यमंत्री रामेश्वर तेली ने जिले के अस्पतालों में कोविड संरचना को प्रदान करने के लिए रोटरी की प्रशंसा की। ■

भविष्य में डिजिटल दुनिया का ही विस्तार होगा

वी मुत्तुकुमारन

बार्कलेज़ बैंक के सीईओ अशोक वासवानी

क्या आप महामारी के बाद अधिक डिजिटल भुगतान कर रहे हैं और क्या आप भविष्य में भी ऐसा करना जारी रखेंगे? क्या आपने मैलवेयर, हैकिंग और अन्य इलेक्ट्रॉनिक धोखाधड़ी के खिलाफ अपने मोबाइल फ़ोन और कंप्यूटर को साइबर सुरक्षा दी है? वर्चुअल रोटरी इंस्टीट्यूट के दो सत्रों में पैनलिस्ट ने कहा, भारत इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन के साथ-साथ डिजिटल तकनीकियों में भी आमूल बदलाव देख रहा है, क्योंकि यह हमारे मोबाइल एप्स पर सिर्फ कुछ बटनों के दबाकर किया जा सकता है। लेकिन सरकार, बैंकिंग क्षेत्र, वित्तीय संस्थानों और भुगतान कंपनियों के सामने लगातार एक चुनौती है कि वे डिजिटल अर्थव्यवस्था के लिए एक विश्वसनीय, सुरक्षित और विश्वास योग्य संरचना स्थापित कर सकें।

फ्रांस के एटीओएस के मुख्य डिजिटल अधिकारी फिलिप मैरीन

डिजिटल उद्योग पर यूरोपीय नज़रिया देते हुए फ्रांस के एटीओएस के मुख्य डिजिटल अधिकारी और सीएसआर हेड फिलिप मैरीन ने कहा, आजकल ऑनलाइन शॉपिंग का धमाका हो रहा है, जिसमें उपभोक्ता एक नए और आसान भुगतान अनुभव का आनंद ले रहे हैं। कोरोनावायरस के बाद, हमने धोखाधड़ी का पता लगाने और रोकथाम के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का फ़ायदा उठाते हुए, डिजिटल लेनदेन के सुरक्षा पहलुओं में कई सुधार किए हैं।

इस डिजिटल समाधान का वैश्विक कार्बन उत्सर्जन कम करने में कम से कम 15-20 प्रतिशत तक हाथ हो सकता है। मैरीन ने कहा, कई बार इस तरह के लेनदेन में कुछ समस्याएँ हो सकती हैं, लेकिन यह कार्बन तटस्थ दुनिया की ओर बढ़ने में एक विश्व-व्यापी समाधान है। यूरोप ने जलवायु परिवर्तन पर मपेरिस-समझौतेफमें कहा है, कि 2050 तक कार्बन तटस्थता हासिल करने के लिए वह मजबूती से प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि एटीओ जैसी कंपनियां वैश्विक समाधानों पर संयुक्त शोध के माध्यम से सामूहिक प्रयास कर रही हैं, जो हमें एक बेहतर माहौल तक ले जाएँगी।

डिजिटल प्लेटफार्मों पर डेटा का आदान-प्रदान करते समय भरोसा और विश्वास सुनिश्चित करने के लिए यूरोप में नए मानक विकसित किए जा रहे हैं। साथ ही, ई-कचरे को कम करने के लिए निर्माताओं और खुदरा विक्रेताओं के बीच घनिष्ठ संबंधों के साथ उत्पादों का पुनर्नवीनीकरण किया जा रहा है। उन्होंने कहा, कार्बन उत्सर्जन को कम करने और कंपनियों और उनके भागीदारों के बीच एक भरोसेमंद पारिस्थितिकी तंत्र निर्माण करने के लिए मक्वांटम-कंप्यूटिंगफमें अनुसंधान के माध्यम से नए डिजिटल समाधानों का पता लगाया जा रहा है।

बदलाव का वर्ष

बार्कलेज़ बैंक के सीईओ अशोक वासवानी ने कहा, फ्रंटएंड कंपनियों, स्टार्टअप्स, वित्तीय संस्थानों और भुगतान फर्मों के पास, विभिन्न भुगतान नेटवर्क और उभरते नए फिनटेक संरचना का फ़ायदा उठाते हुए तेजी-से विकास हासिल करने का अब एक शानदार अवसर है।

डिजिटल ट्रांजैक्शन, जिसकी पिछले कुछ सालों में नाममात्र की यानि कि 3-5 प्रतिशत ही विकास दर थी, 2020 में अचानक बढ़कर 20-25 प्रतिशत हो गई, जो कि एक इंफ्लेक्शन ईयर रहा है और इसकी गति और तेजी से बढ़ती जा रही है।

डिजिटल अर्थव्यवस्था के चार प्रमुख हितधारक हैं: उपभोक्ता और छोटे व्यवसाय; सरकार और नियन्त्रक; बैंक और वित्तीय संस्थान; और नेटवर्क कंपनियाँ। नकदी की शारीरिकता कम होने के साथ-साथ, डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से नकदी का चलन तेज़ी से बढ़ेगा। सुविधा के स्तर के साथ-साथ हमें धोखाधड़ी और घोटालों के बारे में भी चिंता करनी होगी तथा यहाँ नियंत्रकों की भूमिका ख़ास हो जाएगी, उन्होंने कहा। बैंकों को ऐसे सिस्टम स्थापित करने होंगे जो लचीले हों और अपने डेटा सर्वर और नेटवर्क पर साइबर हमलों को रोक सकें। वासवानी ने आगे कहा, डिजिटल एडवांस और इनोवेशन नए-नए समाधानों को जन्म देंगे और कई नेटवर्क और पेमेंट कंपनियाँ इस नई वेव-तकनीक का लाभ उठा पाएँगी।

बार्कलेज बैंक प्रत्येक लेनदेन के लिए डिजिटल रसीदों पर जोर दे रहा है और अगर कोई खरीदारी के लिए क्रेडिट या डेबिट कार्ड का उपयोग करता है, तो क्यूआर कोड के आधार पर और एक द्वण-स्तर के डेटा के माध्यम से वापसी प्रक्रिया के तहत पता चलेगा कि आपने सुपरमार्केट से क्या खरीदा था। इससे कंपनियाँ एनालिटिक्स के जरिए ग्राहकों की पसंद और मार्केट के झुकाव को जान सकेंगी, इस तरह बिजनेस मॉडल की एक नई लाइन को जन्म दे सकेंगी। सोडेक्सो बीआरएस इंडिया के सीईओ, अनीश सरकार ने कहा, नकदी से निपटने का डर और लॉजिस्टिक्स की बढ़ती लागत से समाज के सभी वर्गों को पहले की तुलना में काफी अधिक गति से डिजिटल भुगतान अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

उन्होंने आगे कहा, अकेले मोबाइल फ़ोन से भुगतान में, जो कि डिजिटल लेनदेन का एक हिस्सा है, अगले पांच वर्षों में 60 प्रतिशत से अधिक वृद्धि होने की उम्मीद है, जो हमारी अर्थव्यवस्था में एक प्रतिमान बदलाव है। सरकार ने कहा, डिजिटल भुगतान के इतने बड़े पैमाने पर विस्फोट और भारत एक बहुत ही कम बैंकोंवाला देश होने के कारण, फिनटेक डीलरों को विकास के इस विशाल अवसर से भरपूर लाभ होगा।

बैंक शाखाओं को अलविदा

अगले 5-6 साल में बैंक अपनी ज्यादातर शाखाओं को बंद कर देंगे, क्योंकि ग्राहकों को ट्रांजैक्शन के लिए उनसे मिलने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, व्यक्तिगत बैंकिंग आपके मोबाइल ऐप्स पर सिर्फ़ कुछ बटनों के दबाने मात्र से ही हो जाया करेगी, उन्होंने कहा। नियन्त्रकों को यह सुनिश्चित करने के लिए जांच करनी चाहिए कि विभिन्न वित्तीय संस्थाएँ और बैंकिंग क्षेत्र ग्राहकों की ज़रूरतों का उचित तरीके से प्रबंधन और समाधान करें।

'पेटीएम' के सीईओ वरुण श्रीधर और मएऐजिस स्कूल ऑफ डाटा साइंसेजफ के सीईओ भूपेश दहिया ने बताया कि बाजार में नए खिलाड़ियों को मुनाफा कमाने के लिए अपने कारोबारी वॉल्यूम को बढ़ाना होगा, हालाँकि आज उपभोक्ताओं के पास डिजिटल-पेमेंट-प्लेटफॉर्म्स के ज्यादा विकल्प मौजूद हैं। डाहेरिया ने कहा, इन सब में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा साइंसेज की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि डिजिटल नेटवर्क खेल के नियमों का पालन करें और साइबर सुरक्षा को उपकरणों, डेटा सर्वर, क्लाउड और नेटवर्क सिस्टम तक बढ़ाया जा सके। एटोस इंडिया के एचआर हेड और वीपी, नासिर शेख ने पैनल डिस्कशन को नियंत्रित किया। ■

TRF की मदद से अच्छे कार्य

होशियारपुर में 40 मरीजों का मुफ्त कॉर्निया प्रत्यारोपण किया गया

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब प्लानो मैट्रो, टेक्सास, रो ई मंडल 5810 की भागीदारी में रोटरी क्लब होशियारपुर मिडटाउन, रो ई मंडल 3070 द्वारा प्रायोजित अपने प्रमुख प्रोजेक्ट 'मिशन गिव लाइट टू साइट' के तहत कॉर्नियल ब्लांइडनेस वाले 40 मरीजों का सर्जिकल उपचार किया गया। क्लब ने इस वैश्विक अनुदान परियोजना को क्रियान्वित करने के लिए गुरू का लंगर आई हॉस्पिटल, चंडीगढ़ और शकीन आई एंड डेंटल हॉस्पिटल, अमृतसर के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

रोटरी क्लब होशियारपुर मिडटाउन की सचिव परवीन पालिआल ने बताया कि ''इन कॉर्नियल सर्जरी के सभी खर्चों को हमारे क्लब के द्वारा वहन किया गया था।'' ज्यादातर मरीज पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और जम्मू-कश्मीर से आए थे। क्लब लोगों को आंखे दान करने एवं दूसरों को आंखों की रोशनी प्रदान करने हेतु जागरूकता शिविरों को आयोजित कर रहा है। ■

कर्नाटक में प्रोजेक्ट रीसाउंड का लक्ष्य है बहरापन मिटाना

टीम रोटरी न्यूज़

जीवन में पहली बार, 12 वर्षीय नम्रता अपने आस-पास की आवाज़ें सुन सकती थी, जिसमें इंसानों की आवाज़ भी शामिल थी, जब रोटरी बैंगलोर ब्रिगेड्स, रो ई मंडल 3190 के प्रोजेक्ट रीसाउंड के तहत उसे श्रवण यंत्र दिया गया, ''छह साल की उम्र में उसके जन्मजात बहरापन के बारे में पता चला, वह देरी से निदान और उपचार में देरी का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जो उसके जीवन को प्रभावित करता है। उनके चेहरे पर चमक देखने की अलग ही खुशी थी। क्लब के अध्यक्ष अश्वनी किंजर ने कहा।''

''दूसरों की तरह बोलने के लिए, नम्रता को महीनों तक घर और स्कूल में भाषण चिकित्सा और प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी। श्रवण यंत्र ने उसके जीवन में एक नया बदलाव लाया है'', डॉ एम पी रघु, अध्यक्ष, प्रोजेक्ट रिज़र्व कमेटी। क्लब इस परियोजना के माध्यम से शहरी और ग्रामीण कर्नाटक में वंचित परिवारों के श्रवण-बाधित बच्चों के जीवन में बदलाव करना चाहता है। उन्होंने कहा, हमने पांच-स्तरीय कार्रवाई योजना तैयार की है। पहला कदम बच्चों की स्क्रीनिंग और उपचार प्रदान करना है। गंभीर मामलों के लिए जहां श्रवण यंत्र और चिकित्सा की आवश्यकता होती है, हमने आवश्यक सहायता का विस्तार करने के लिए एक बहरापन नियंत्रण और रोकथाम ट्रस्ट फंड की स्थापना की है। हमारा उद्देश्य इन बच्चों को मुख्यधारा के स्कूलों में भेजना है और उन्हें अपने साथियों की तरह एक सामान्य जीवन जीने में सक्षम बनाना है।''

बच्चों का पार्क

स्थानीय विधायक रामालिंगा रेड्डी, डीजी बी एल नागेंद्र प्रसाद और कमांडेंट एम वी रामकृष्ण प्रसाद के साथ, क्लब ने पांच रोटरेक्ट क्लबों, कर्नाटक राज्य पुलिस और दो निजी फर्मों की साझेदारी में क्लब द्वारा बनाए गए बच्चों के पार्क का उद्घाटन किया।

केएसआरपी कोरमंगला स्थित पार्क क्रिस्टीन कलारवा मक्कल्या उद्यान वन अब इस आवासीय कॉलोनी में रहने वाले लगभग 500 बच्चों की हँसी और खुशी की

नम्रता और उसकी माँ प्रोजेक्ट रेसाउंड के लॉन्च पर, जहाँ उसे श्रवण यंत्र भेंट किया गया। डी जी बी एल नागेंद्र प्रसाद (बीच में) और रोटरी बैंगलोर ब्रिगेडस के अध्यक्ष अश्वनी किंजर (दाएं से दूसरे) भी चित्र में मौजूद हैं।

किलकारियों से गूंज रहा है। क्लब के सचिव रवि जेराई पुनर्नवीनीकरण टायर के साथ बनाए गए उपकरण की योजना बनाने और निष्पादन में सहायक थे और पार्क में लगाए गए पौधे और फलों के पेड़ की खरीद में सहायता की।

एलपीजी आयरन किट

अपनी आजीविका बेहतरी पहल के तहत, क्लब ने कई लाभार्थियों को एलपीजी आयरन किट वितरित किए, जो जीवन यापन के लिए कपड़े प्रेस करते हैं। यह गैस बॉक्स धुएं से भरे, कोयले से चलने वाले पारंपरिक लोहे के लिए एक पर्यावरण के अनुकूल विकल्प है। यह कम तनाव प्रदान करता है, 50 प्रतिशत अधिक कुशल है और कार्यकर्ता के लिए अधिक समय बचाता है, किंगर ने कहा। डीजी प्रसाद ने डीजीई फ़ज़ल महमूद की मौजूदगी में लाभार्थियों को आयरन किट भेंट कर पहल की।

प्राप्तकर्ता उतना ही भुगतान करता है जितना कि वह कर सकता है, और शेष राशि क्लब द्वारा अपने सदस्यों, मित्रों और शुभचिंतकों से दान के माध्यम से वहन की जाती है। ■

रोटरी क्लब बैंगलोर ब्रिगेडस द्वारा कोरामंगला में विकसित किया गया पार्क।

कोलकाता इंटरेक्टर्स द्वारा एक 'स्ट्रीट लाइब्रेरी'

टीम रोटरी न्यूज़

इंटरेक्टर्स डिवाइन सोशल वेल्फेर सोसाइटी को किताबें दान करते हुए।

सिल्वर पॉइंट स्कूल के इंटरेक्ट क्लब (कोलकाता रोटरी क्लब द्वारा गठित, एशिया का सबसे पुराना क्लब) ने iLead (यूजीसी के द्वारा मान्यता प्राप्त एक ख्यातिलब्ध उच्च शिक्षण संस्थान) के सहयोग से अपने स्कूल परिसर में एक निशुल्क स्ट्रीट लाइब्रेरी की स्थापना की। रो ई मंडल 3291 के डीजी सुदीप मुखर्जी ने iLead के अध्यक्ष प्रदीप कुमार चोपड़ा के साथ उद्घाटन समारोह में भाग लिया।

निशुल्क स्ट्रीट लाइब्रेरी की स्थापना करने का मुख्य उद्देश्य सभी आयु-वर्ग के स्थानीय लोगों के लिए किताबें एवं ज्ञान साझा करने हेतु एक आकर्षक मंच प्रदान करना था जो लोग महंगी किताबें खरीदने के खर्च को वहन नहीं कर सकते परन्तु वे किताबें पढ़ने के शौकीन हैं, उत्साही पुस्तक-प्रेमी हैं, - रोटरी क्लब कोलकाता, यूथ सर्विसेज के चेयरमैन देबाशीष बिस्वास ने कहा। इंटरेक्शन क्लब की टीचर और कॉर्डिनेटर श्रीमती रत्ना चंदा रॉय ने कोविड के समय के दौरान इंटरेक्टर्स के द्वारा की गई परियोजनाओं की श्रृंखला के बारे में एवं 2021 के लिए अन्य परियोजनाओं के बारे में बात की जिसमें कम से कम 500 लाभार्थी होंगे। स्थानीय लोगों ने इस केंद्र की बहुत प्रशंसा की जो कि स्ट्रीट लाइब्रेरी को उनके लिए उपलब्ध कराएगा। डीजी मुखर्जी ने इंटरेक्टर्स के प्रयासों की सराहना की और इस कार्यक्रम में स्कूल के इंटरेक्शन क्लब के द्वारा डिवाइन सोशल वेयफेयर सोसायटी को जो कि सरकार द्वारा पंजीकृत एक एनजीओ है और गरीब एवं झुग्गी-झोपड़ियों के बच्चों की शिक्षा में सहयोग देने हेतु काम करता है, अंग्रेजी, गणित, सामान्य ज्ञान, विज्ञान और कहानियों की 600 से अधिक किताबों को दान किया।

अन्य लोग जिन्होंने इस उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लिया, उनमें शामिल हैं: सुलगना दाऊ, जिला इंटरेक्ट चेयरपर्सन, सिल्वर पॉइंट स्कूल के सचिव बानी रॉय चौधरी, पूर्णेंदु रॉय चौधरी, स्कूल के ट्रस्टी सदस्य एंव रो ई मंडल 3291 के जोनल सेक्रेटरी देबाशीष विश्वास। ■

ज़ोन इंस्टीटयूट ने गुमनाम नायकों को सम्मानित किया

किरण ज़ेहरा

रोटरी क्लब के प्रमुख क्षेत्रों - आर्थिक विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा, जल और स्वच्छता के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले पांच व्यक्तियों को रोटरी इंस्टीटयूट में प्रशस्ति पत्र और प्रत्येक को ₹1 लाख के नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

अयप्पा मसागी जिन्हें पानी की कमी को दूर करने और समुदायों हेतु जल दक्षता में सुधार करने के उनके किए गए कार्यों के लिए 'वाटर गांधी' के रूप में भी जाना जाता है, एवं जादव पेयेंग जो 'वन मैन ऑफ इंडिया' के रूप में लोकप्रिय हैं और एक पर्यावरण कार्यकर्ता हैं, एवं कुलविंदर कौर मिन्हास जो कि सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षाविद, जिन्होंने अपने झुग्गीवाला स्कूल के द्वारा लुधियाना में झुग्गी-झोपड़ी के बच्चों की सेवा करने के लिए अपने टीचिंग करियर को छोड़ दिया था, एवं तस्लीमा नसरीन, एक ट्रांसजेंडर महिला जिनहोंने अपने स्टार्टअप हलाल कैटरिंग के लिए जो कि एक फूड केटरिंग व्यवसाय है, पूरी तरह से ट्रासजेंडरस के द्वारा संभाला एवं चलाया जाता है, और डॉ अभिजीत सोनवणे जो कि पुणे के गरीब और सड़क पर रहने वाले लोगों को मुफ्त चिकित्सा प्रदान करते हैं, उन सभी को रोटरी हीरो अवार्ड से सम्मानित किया गया।

कुलविंदर कौर मिन्हास

डॉ अभिजीत

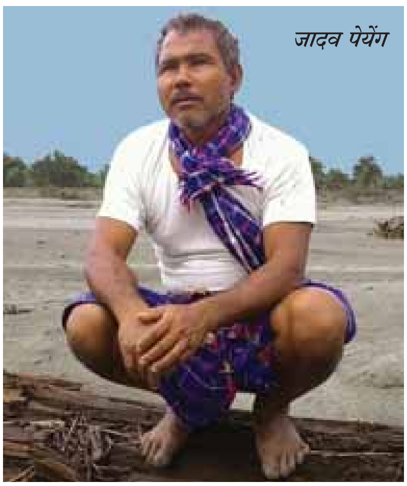
जादव पेयेंग

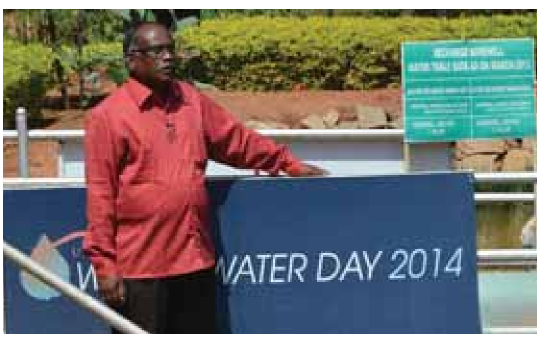

अयप्पा मसागी

लैंगिक समानता

''मेरे लिए महिला सशक्तीकरण का अर्थ उन कुछ समस्याओं/मुद्दों पर ध्यान देने के बारे में है जिनका सामना यहां हम अपने देश में कर रहे हैं, इस आशा में कि लोग ज्यादा सीखेंगे, अपने को शिक्षित करेंगे और उम्मीद है कि इस दिशा में कदम उठाएंगे'' जय मदान, एक लाइफस्टाल कोच ने वर्चुअल रोटरी इंस्टीटयूट में संबोधित किया। उन्होंने लैंगिक समानता के बारे में जागरूकता बढ़ाने पर जोर दिया और बताया कि लैंगिक पक्षपात एक सार्वभौमिक समस्या है। उन्होंने कहा कि ''मुखर बनें और अपने व्यवहार में आक्रामक न बनें। सवाल पूछें और उन समस्याओं के बारे में बात करें जिनका सामना महिलाओं को अपने घरों एवं कार्यस्थल पर करना पड़ता है।'' उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं को उनके अधिकारों एवं अवसरों के प्रति संवेदनशील बनाने के साथ उन्हें सशक्त बनाने में लंबा रास्ता तय करना होगा।

लड़कों को अधिक सम्मानजनक होना सिखाया जाना चाहिए बजाय लड़कियों को रूढ़िवादिता से जूझने के। ''हमें महिलाओं को एक समान मंच पर लाना ही होगा। चाहे वह पैसे के लिए काम करती हो या अपने जुनून के लिए या घर पर रहना चाहती है, हमें उसकी पसंद (विकल्प) का सम्मान करना चाहिए और उसके प्रति सही व्यवहार व्यवहार करना चाहिए'' उन्होंने कहा और कहा कि महिला को सम्मान देने की शुरूआत घर से ही करें। ''अपने बच्चों को सिखाएं कि वे अपनी मां का उतना ही सम्मान करें जितना वे अपने पिता का करते हैं। कई मामलों में पिता प्रदानकर्ता (भरण-पोषणकर्ता) हो सकते हैं लेकिन सभी मामलों में मां ही पालनहार होती है।'' ■

THE ODYSSEY
ROTARY INSTITUTE 20-21

महामारी एक नए नैतिक आदेश को जन्म देगी

वी मुत्तुकुमारन

जब कोई व्यक्ति शक्तिशाली पद पर पदस्थ है तो वह किस तरह से नैतिक मूल्यों को बनाए रख सकता है अर्थात किस तरह से नैतिक मूल्यों को संरक्षित रख सकता है? ''इस प्रश्न का एकमात्र उत्तर जो मैं देने में सक्षम था, वह है भारतीय शब्द ''संगत'', यही वह है जिसके आसपास या साथ आप होते हैं। यह एक शक्तिशाली आइडिया (विचार) है, लेकिन इसके लिए यह अधिक महत्वपूर्ण है कि आप सही माहौल बनाएं और अपने आसपास के लोगों के प्रति खुले एवं सहज रहें ताकि वे आपकी गलतियों को आपको बता सकें। आपकी तरफ से नैतिक विफलता से बचने के लिए आपको दोस्तों के रूप में सच बोलने वालों की आवश्यकता हैफ्फ हार्वर्ड बिज़नेस स्कूल के डीन नितिन नोहरिया ने कहा। वह वर्चुअल रोटरी इंस्टीट्यूट में रो ई मंडल 3141, संदीप अग्रवाल की अध्यक्षता में 'मोरल ह्यूमिनिटी' के सत्र में बोल रहे थे।

अपने आसपास सच्चे दोस्तों और साथियों के बीच रहना और उनकी आलोचना के प्रति खुले हुए रहना ही ''एकमात्र व्यवस्थित सुरक्षा है जिसे मैंने ऐसे लोगों में देखा है जो लोग समय के दौरान शक्तिशाली पदों और उच्च पदों पर रहते हुए भी पूर्ववत नैतिक रूप से विनम्र बने रहे हैं'' श्री नोहरिया ने कहा। इस महामारी के समय में कुछ मूल्य विफलताएं अधिक गंभीरता से उजागर हुईं लेकिन ''एक शाश्वत आशावादी होने के नाते मेरा यह मानना है कि इस तरह की नैतिक विफलताएं यदि अब और अधिक प्रकट होती हैं तो इससे उबरने के अवसर भी हैं।''

उन्होंने बताया कि रोटरी का फोर-वे टेस्ट असाधारण है और अगर इसे हम आज लागू करें तो दुनिया बहुत ही बेहतर हो जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि ''कोविड ने समाज की इतनी असमानताओं और अन्याय को उजागर किया है कि किसी भी त्रासदी की कीमत अधिकतर वंचित, गरीब वर्ग को ही उन

नितिन नोहरिया, हार्वर्ड बिज़नेस स्कूल के डीन

लोगों से अधिक सहन करनी पड़ती है जिन लोगों को अपनी सुरक्षा करने एवं खुद को बचाने हेतु आराम करने के लिए अपने घर पलायन करने और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने का विशेषाधिकारी प्राप्त है।''

सामूहिक बुराई

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, मिलग्राम, एक यहूदी यह समझने में असमर्थ थे कि सभी जर्मन ऐसा कैसे कर सकते थे जो उन्होंने होलोकॉस्ट के दौरान किया था। क्या ऐसा संभव था कि उस समय सभी जर्मन दुष्ट थे? इस बात या विचार पर विश्वास करने के लिए, आपको अपनी मानवता को भी थोड़ा सा खोने की जरूरत होगी।फ्फ ऐसा कैसे हो सकता है कि लोगों का एक समूह वहां ऐसा हो जहां हर कोई व्यक्तिगत रूप से बुरा है? उसने एक प्रयोग किया जिसमें उसने सड़क से यादृच्छिक रूप से लोगों को इस प्रयोग हेतु आमंत्रित किया और उन्हें ऐसे वातावरण में रखा जहां एक प्रशिक्षक और एक सीखने वाला (विद्यार्थी) था।

यदि सीखने वाला गलती करता, तो उसे ऐसी चीजों को रोकने एवं अगली बार बेहतर करने के लिए बिजली के झटके दिए जाते। ''बाकी प्रतिभागी यह नहीं जानते थे कि सीखने वाला प्रशिक्षक का सहयोगी था और वास्तविक सीखने वाला (विद्यार्थी) नहीं था। इस खेल को प्रशिक्षक और विद्यार्थी के रूप में व्यवस्थित किया गया था जिसे कार्ड के ड्रा के माध्यम से चुने गए थे। हालांकि दो-तिहाई का मानना था कि सीखने वाला ईमानदार था।आप और मैं बिजली के झटके के द्वारा समाप्त हो गए होते। एक निर्दोष व्यक्तिके रूप में सिर्फ केवल इसलिए कि किसी प्राधिकारी ने कहा है और आपको निर्दे शों का पालन करना है'' नोहरा ने कहा। यहां ऐसे बहुत से सामाजिक प्रभाव हैं जो हमें स्वयं के नैतिक मूल्यों के विपरीत व्यवहार करने का कारण बन सकते हैं, जैसे कुछ चीजों को सही ठहराना, प्रचलित नियमों या मानदंडों के अनुसार कार्य करना (जैसे कि हमें चीजों को प्राप्त करने हेतु रिश्वत देना), अन्य चीजों के अलावा भी प्रोत्साहन दबाव एवं समय का दबाव।

अमेरिकी नस्लवाद

कोविड के समय के दौरान नस्लवाद से प्रभावित होने वाले लोग अमेरिका में अनुपातहीन रूप से अल्प प्रतिनिधित्व वाले अल्पसंख्यक समुदाय से थे। ''जार्ज फ्लॉयड की हत्या ने अमेरिकी लोगों को अपने देश में नस्लीय और असामनता के मुद्दों के प्रति अवगत करवाया'' उन्होंने अपनी राय व्यक्त की। यह कैसा मामला है कि बार-बार हम यह देखते हैं कि निर्दोष काले आदमियों और महिलाओं को भयावह हालात में पुलिस के द्वारा मारा-पीटा जा रहा है, उन्होंने जिज्ञासा व्यक्त की। ''जिस तरह के क्रूर तरीके से हमारी नैतिक विफलताएं उजागर हो रही हैं अर्थात सामने आ रही हैं, वह हमें इस महामारी के समय में नैतिक जागृति की ओर ले जाएगा'' उन्होंने कहा। ■

अफगानिस्तान

जहां भारत को प्यार और इज़्ज़त दी जाती है

रशीदा भगत

मेरी तरह अगर कोई भी 2005 में अफगानिस्तान की यात्रा पर गया होगा, और मुझे संशय है कि लैंगिक मुद्दे पर वहां ज़्यादा कुछ बदला होगा, वो भी भारी मन से लौटा होगा। तालिबान ने नवंबर 2001 में वो स्थल छोड़ दिया था, पर लड़कियों की शिक्षा और महिलाओं के आत्मविश्वास को पूरी तरह से नष्ट करने के बाद और यह सुनिश्चित किया, महिला हमेशा घर की चारदीवारों में बंद रहे। रिवोल्यूशनरी एसोसिएशन ऑफ़ द वूमन ऑफ़ अफ़गानिस्तान (RAWA) की एक कार्यकर्ता परवीन से मुलाकात हुई, जिसने तालिबान के दौर में और इससे पहले भी महिलाओं के अधिकार के लिए बड़ी दिलेरी लड़ी थी, उसने मुझसे कहा था कि ''तालिबान युग की तुलना में लैंगिक मोर्चे पर हालात सुधरे हैं पर इस के बावजूद बहुत कुछ किया जाना बाकी है।''

परवीन ने तालिबान काल के दौरान देश छोड़ दिया था और पाकिस्तान के शहर पेशावर में RAWA के लिए काम करती थी, और लैंगिक समानता पर तत्कालीन हामिद करजई सरकार द्वारा उठाए गए उदार रवैये के बारे में उसे संशय था। ''यह भी अमेरिका के दबाव की वजह से है। प्रशासन में हमें ज्यादातर ऐसे लोग मिलेंगे, जिनमें सरकार के कुछ शीर्ष मंत्री भी शामिल हैं, जो दिल और दिमाग से रूढ़ीवादी हैं। फिलहाल, वे

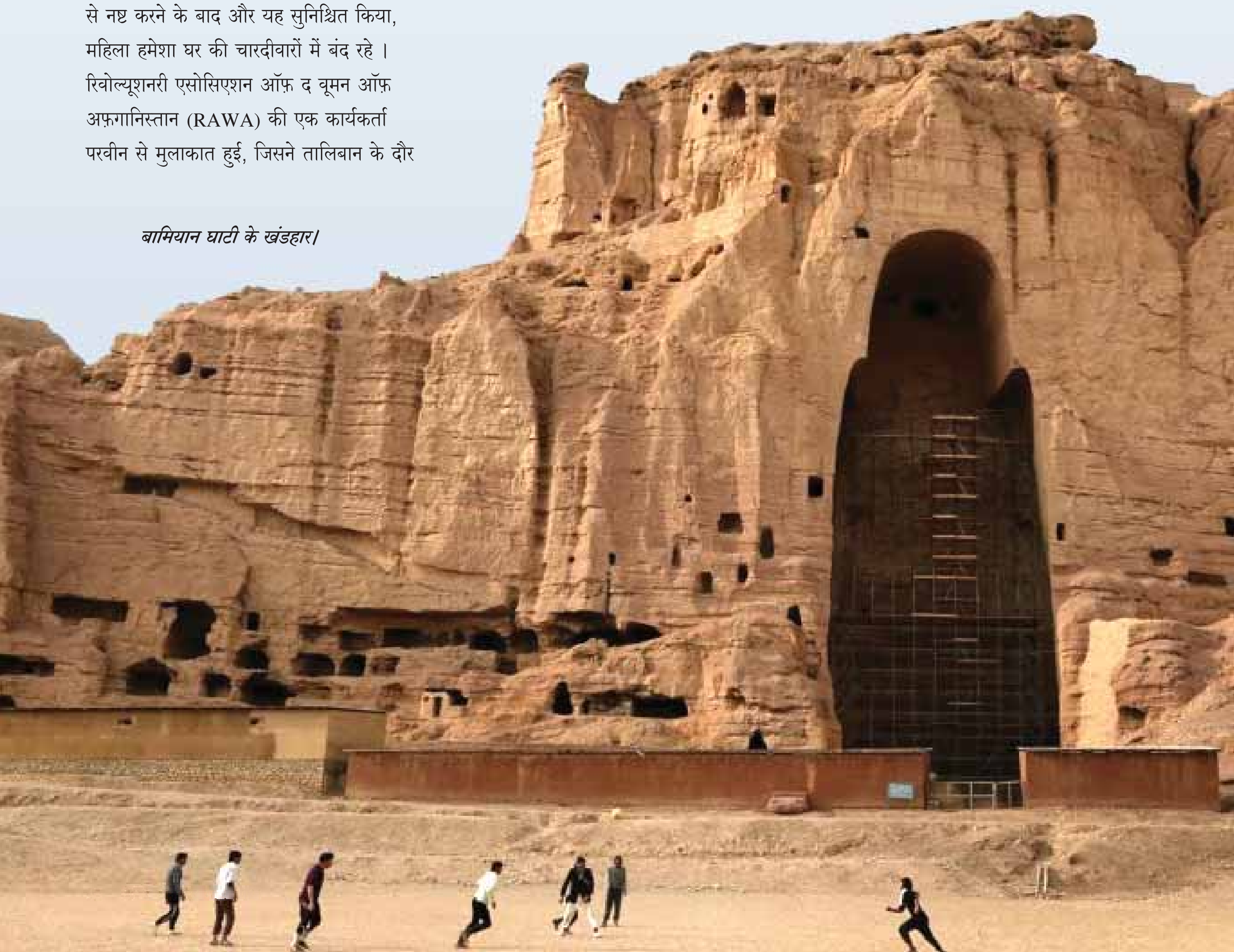

बामियान घाटी के खंडहार।

अमरिकियों को खुश करने के लिए महिलाओं की मुक्ति का सिर्फ दिखावा कर रहे हैं।''

आगे जो बात उसने कही वो, हमारे देश सहित, सभी देशों पर बिलकुल सटीक उतरती है, जो लैंगिक असमानता दूर करने के लिए अक्सर दिखावटी काम करते हैं। अफगानी महिला को उसी के घर में सबसे अधिक प्रताड़ित किया जाता है। पिता, पति, भाई ... यही लोग उसे सबसे अधिक यातना देते हैं; कई घरों में घरेलू हिंसा बहुत ज़्यादा होती है, महिलाओं को बुर्का पहनने के लिए मजबूर किया जाता है और लड़कियों को स्कूल या कॉलेज जाने अथवा काम करने की इजाज़त नहीं है। RAWA के कार्यकर्ताओं ने सरकार पर देश की न्यायपालिका के शीर्ष पर ऐसे उग्र पुरुषसत्तावादी लोगों को बिठाने का आरोप लगाया जो ये कहने में ज़रा भी नहीं हिचकते कि एक महिला कभी भी पुरुष के समकक्ष नहीं हो सकती है!

मैनें एक पश्चिमी व्यक्ति - अफगानिस्तान में विश्व बैंक के राष्ट्र प्रमुख, जीन माजुरेल से - अफगानिस्तान में लैंगिक परिस्थिति और महिलाओं की दशा सुधारने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय की भूमिका पर टिप्पणी करने के लिए कहा। उन्हें लगता है कि यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां पश्चिमी सहायता संगठनों को बहुत सावधानी बरतनी होगी। मिसाल के तौर पर, एक गोरे आदमी का अफ़गानी महिला को बंधनमुक्त होने के लिए बिना बुर्का पहने बाहर जाने को कहना आफत मोल लेना होगा। ''अगर ऐसा किया तो इसे हमारे द्वारा अफगानी महिलाओं पर पश्चिमी मूल्य थोपने के रूप में लिया जा सकता है। हमें बहुत सावधान रहना होगा ताकि लोगों से किसी तरह का कोई टकराव पैदा न हो जो ये कहते हैं कि पश्चिमी लोग हमारी महिलाओं को उघाड़ने की कोशिश कर रहे हैं।''

लेकिन फ्रांसीसी ने आगे जो कहा, उससे मेरे चेहरे पे रौनक आ गई। ''लेकिन यहां जो विभिन्न भूमिकाओं में काफी संख्या में भारतीय महिलाएं कार्यरत हैं, जो स्वैच्छिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं , यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र के कई संगठनों का भी, इस परिस्थिति में अंतर लाने के लिए वो सही जगहों पर काबिज हैं। अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में भारत की जितनी तारीफ की जाए, कम है'', उन्होंने कहा कि दिल्ली में विश्व बैंक की उनकी कई महिला सहयोगी या तो यहां का दौरा कर चुकी हैं या वे अफगानिस्तान में काम कर रही थीं।

''उनकी अफगानियों के साथ बातचीत में जाहिर हुआ, वे यहाँ पर्यावरण का बहुत सम्मान

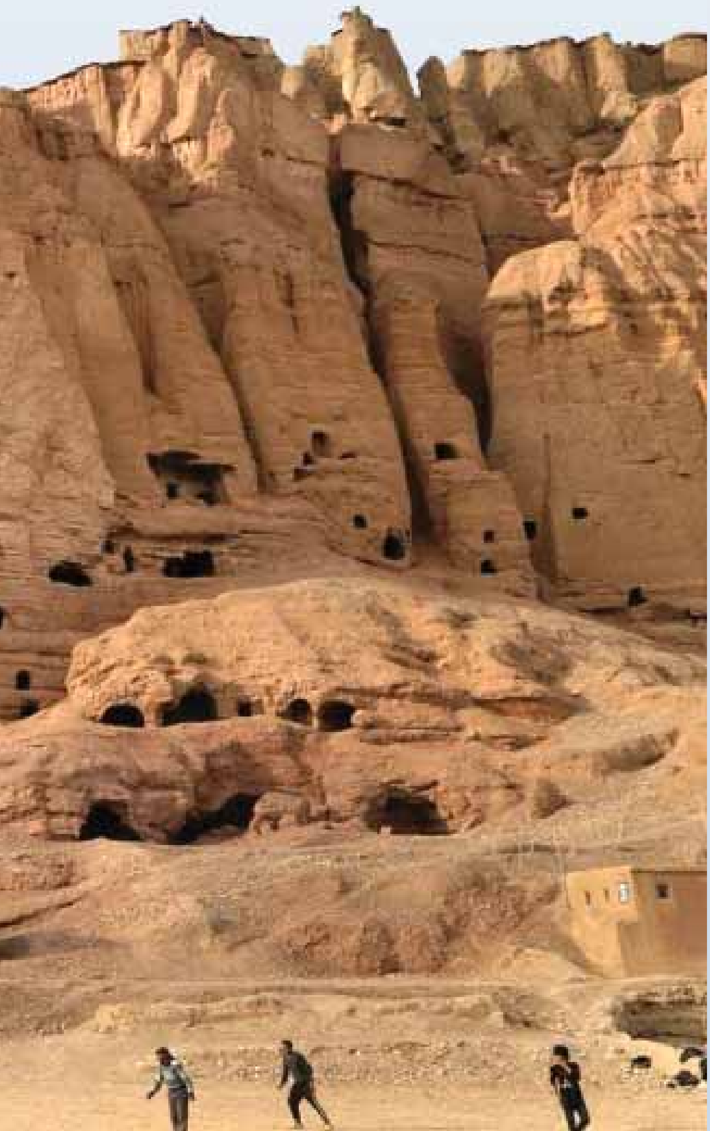

फाइल फोटो

एक तबाह बामियान बुद्ध

करती हैं, लेकिन साथ ही उन्हें लैंगिक मुद्दों पर विश्वास दिलाने और मनाने में भी वे काफी सक्षम हैं । उन्होंने कहा कि ''अफगानों को ईरान या पाकिस्तान के बजाय भारत के विकास मार्ग का अनुसरण करते देख वह प्रसन्न होंगी''

भारत, एक प्रशंसनीय पड़ोसी

सिर्फ माजुरेल ही भारत और उसके प्रभाव की तारीफ़ नहीं करते, इस्लामिक दुनिया में ज़्यादातर, राष्ट्र भले वो इराक हो या तुर्की, भारत को सम्मान, प्रशंसा के साथ देखते हैं और अफगानिस्तान में तो प्यार से भी, और उस अशांत राष्ट्र की यात्रा पर जाने वाले भारतीयों के लिए यह एक सुखद आश्चर्य था । अफगानवासी भारत और भारतीयों से प्रेम करते हैं; वे केवल भारतीय फिल्मों और शाहरुख खान और ऐश्वर्या राय जैसे अभिनेताओं से बल्कि इसके आर्थिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा में भारत की प्रगति और एक उदारवादी विचारधारा को बढ़ावा देने की भी प्रशंसा करते हैं।

अफगानिस्तान में तत्कालीन भारतीय राजदूत राकेश सूद ने बताया कि भारत सरकार ने अफगानिस्तान पुनर्निर्माण के प्रयासों में अपने सहायता कोष से करीब 600 मिलियन डॉलर दिए थे, और यह साफ़ साफ़ नज़र भी आ रहा था। जैसा कि उन्होंने बताया, भारत अफगानिस्तान के आधारभूत ढांचे के निर्माण में शामिल होने वाले शुरुआती राष्ट्रों में से एक था, ''और पूरे देश में हमने उस वक़्त काम किया था जब कई दान दाता सुरक्षा कारणों से काबुल से बाहर जाने में भी हिचकिचाते थे।''

> भारत हमेशा से दोस्त रहा है और उसने हमारी किसी भी चीज़ के लिए कभी लालच नहीं किया ना ही ऐसा कुछ किया जिससे अफगानिस्तान के हितों को ठेस पहुंचे।
>
> **हाजी अब्दुल हकीम**
> कालीन दुकान मालिक

तो चाहे वो 90 मिलियन डॉलर सलमा हाइडल प्रोजेक्ट का पुनर्निर्माण हो ; सैकड़ों किमी सड़कों और बिजली की पावर लाइन बिछाने का काम ; कंधार में अफगानिस्तान के पहले कोल्ड स्टोरेज प्लांट की स्थापना ताकि ये फलों का कटोरा अपनी उपज का प्रसंस्करण कर उसका निर्यात कर सके; काबुल स्थित प्रसिद्ध हबीबिया स्कूल का पुनर्निर्माण, जहां करजई कभी छात्र रहे थे; काबुल में 3 मिलियन डॉलर की लागत से इंदिरा गांधी बाल स्वास्थ्य संस्थान का पुनर्निर्माण जो 250 बेड का एकमात्र शिशु चिकित्सा अस्पताल है ; शिक्षकों का प्रशिक्षण हो या फिर अफगान सरकार के कर्मचारियों का , उन पर भारतीय छाप स्पष्ट दिखाई देती थी।

मुझे एक दिलचस्प बात पता लगी और वजह साफ़ है, अफगानिस्तान के पड़ोसी ईरान और पाकिस्तान को भले नफरत के साथ नहीं तो शक के नज़रिये से ज़रूर देखा जाता था। लेकिन भारत की सराहना कई कारणों से की जाती थी। चिकन स्ट्रीट में काबुल के सबसे पसंदीदा बाज़ारों में से एक, जहां काफी चहल पहल रहती है, मेरी मुलाकात हाजी अब्दुल हकीम से हुई, जिनकी कालीन की दुकान थी। भारत के ज़बरदस्त प्रशंसक हैं, उन्होंने कहा: ''आप अपनी शिक्षा प्रणाली को देखिये; आप के संस्थानों से कितने उम्दा, मेधावी छात्र निकलते हैं।''

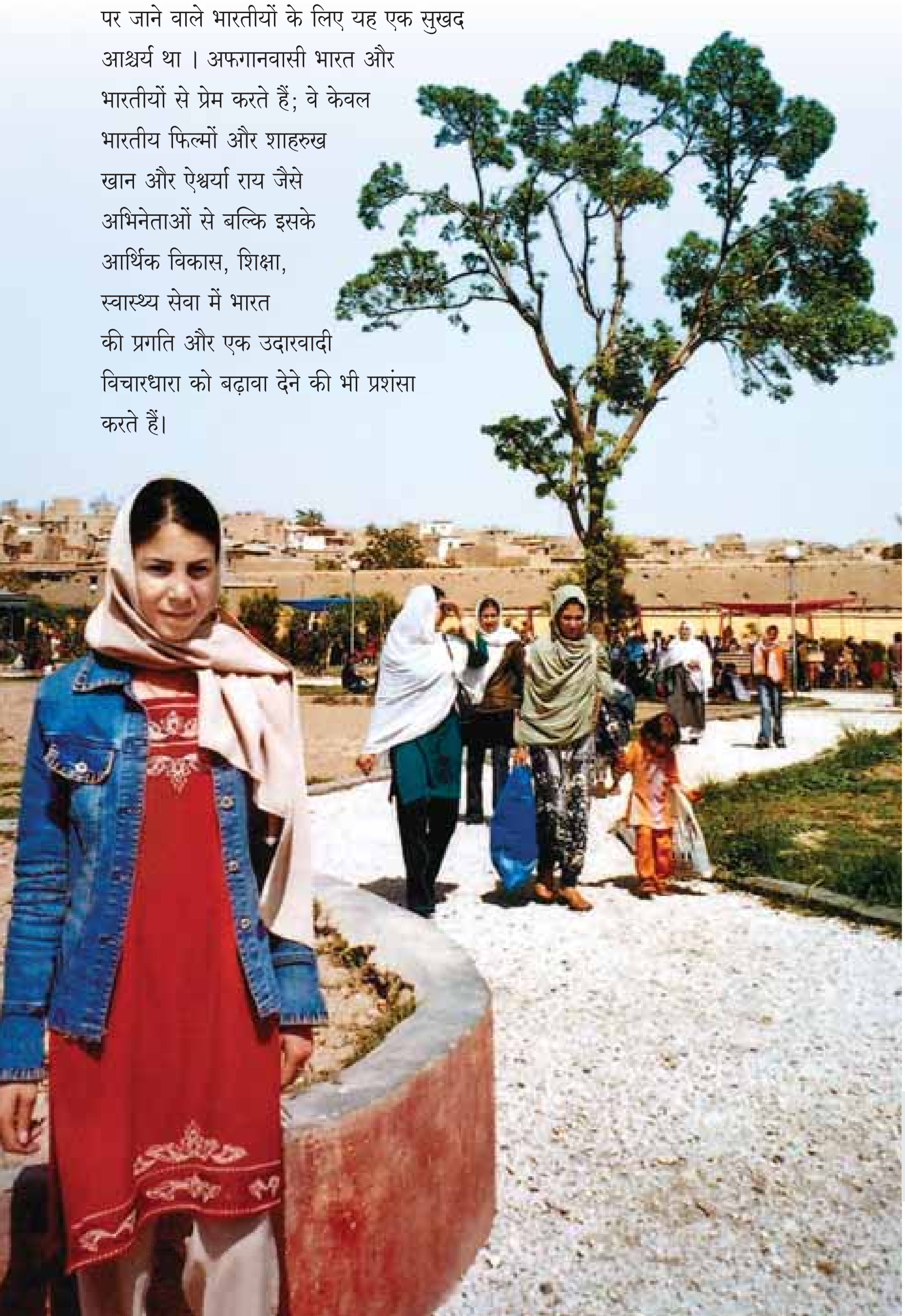

बाघे जनाना (मिहला उद्यान) काबुल में जहाँ महिलाएँ बिना परदा एक दूसरे से मिल सकती हैं।

बामियान के रास्ते पर एक सुंदर झील।

जब अफगानिस्तान के विदेशी संबंधों की बात होती है तो अन्य देशों के साथ भारत की तुलना करने की एक बहुत ही दिलचस्प वजह थी उसके पास। ''जैसा कि आप जानते हैं, लंबे समय से हमारा एक कष्टप्रद इतिहास रहा है, जिसमें बहुत हिंसा और खून-खराबा हुआ।'' अफगानिस्तान का परिदृश्य काफी अस्पष्ट रहा है, और कई देश, चाहे वह शक्तिशाली संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, ईरान, या पाकिस्तान हो, उन सभी ने हमारे मुश्किल हालात का फायदा उठाया है और सिर्फ भारत को छोड़कर सब ने हमारा शोषण किया है। ''भारत हमेशा से दोस्त रहा है और उसने हमारी किसी भी चीज़ के लिए कभी लालच नहीं किया ना ही ऐसा कुछ किया जिससे अफगानिस्तान के हितों को ठेस पहुंचे।''

आपके विचार से ,तबाह हो चुके इस राष्ट्र के विकास के लिए, भविष्य में भारत को क्या करना चाहिए, मैंने पूछा। आप जैसे देश को ज्यादा कुछ नहीं करना। आपकी शिक्षा प्रणाली दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रणालियों में से एक है। सबसे अच्छी मदद भारत यूं कर सकता है कि वो अफगानिस्तान, काबुल, मज़ार, कंधार, बामियान से करीब 500 लड़कों और लड़कियों का चयन करे और उन्हें भारत में शिक्षित करे। जब वे विद्वान और पेशेवर हो कर लौटेंगे, तो उनके पास हमारे देश को संवारने और भविष्य को एक नया आकार देने का कौशल और क्षमता होगी।

भारतीय डॉक्टरों का महत्त्व

यदि भारतीय शिक्षा यहां उत्कृष्ट मानी जाती है, तो भारतीय डॉक्टरों और दवाओं को अनमोल माना जाता था। दिल्ली से काबुल की हमारी उड़ान पर, कम से कम दो मेडिकल टीमें अफगानिस्तान जा रही थीं। जबकि निजी अधिकारी, विशेषकर हृदय चिकित्सा संस्थानों से, संभावित व्यापार की तलाश में जा रहे थे, भारत सरकार द्वारा केंद्र सरकार की स्वास्थ्य सेवाओं से डॉक्टरों को अफगानिस्तान में काम करने के लिए के लिए भेजा गया था, जहां लंबे अरसे तक चले युद्ध की वजह से स्वास्थ्य सेवाऐं तबाह हो चुकी थी।

अफगानी महिला को उसी के घर में सबसे अधिक प्रताड़ित किया जाता है। पिता, पति, भाई ... यही लोग उसे सबसे अधिक यातना देते हैं।

भारतीय राजदूत सूद ने मुझे बताया कि पांच भारतीय चिकित्सा दल कंधार और मजार-ए-शरीफ जैसे खतरनाक जगहों पर काम कर रहे थे। यह पूछने पर कि क्या उनकी सुरक्षा की चिंता नहीं है, उन्होंने कहा: ''लोग भारतीय डॉक्टरों का सम्मान करते हैं और उन पर और उनके फैसले पर आँख मूँद कर विश्वास करते हैं। हमने पाया, यहां के लोगों में भारतीय नैदानिक कौशल और भारतीय चिकित्सा दोनों में बहुत विश्वास है क्योंकि यहाँ के बाजारों में मिलावटी दवा बहुत मिलती हैं। आम धारणा यह है कि ठीक होने के लिए किसी भारतीय चिकित्सक के पास ही जाना चाहिए और उन्हीं से ही दवा लेनी चाहिए। कभी-कभी जब दवाइयों की आपूर्ति समाप्त हो जाती है, तो लोग स्थानीय बाजार से खरीदने के बजाय भारत से दवा आने का इंतजार करते हैं।''

कभी-कभी जब दवाइयों की आपूर्ति समाप्त हो जाती है, तो लोग स्थानीय बाजार से खरीदने के बजाय भारत से दवा आने का इंतजार करते हैं।

राकेश सूद
अफ़गानिस्तान में भारतीय राजदूत

बुद्ध धरोहर का घिनौना विनाश

हालाँकि काफी लोगों ने हिंदू कुश क्षेत्र के ठीक बीचोंबीच स्थित बामियान घाटी में, तालिबान द्वारा छठी शताब्दी की प्राचीन विशालकाय बुद्ध की मूर्तियों को नष्ट करने के जघन्य कृत्य के बारे में पढ़ा था, बामियान की विशालकाय चट्टानों पर जहाँ कभी ये आकर्षक बुद्ध खड़े थे, अब गुफाओं में केवल बड़े बड़े छेद नज़र आ रहे थे जिसे देख कर पेट में बल पड़ गए थे। उन सुनसान, भयावह खोखले स्थानों में कभी लाल और नीले रंग की पोशाक पहने चमकदार गहनों से देदीप्यमान बुद्ध की शानदार मूर्तियाँ खड़ी रहती थीं, रंगीन चित्रों से घिरी हुई, सबसे बड़ी मूर्ति 55 मीटर ऊंची और छोटी 35 मीटर की थी।

तालिबान ने 1998 के अंत में मजार-ए-शरीफ और इस के आस-पास के क्षेत्र पर काबिज़ होने के बाद, 1999 और 2001 के बीच इन मूर्तियों को नष्ट करने में कभी रूचि और कभी उदासीनता दिखाई थी, जिन्हें आक्रांताओं ने ''गैर-इस्लामिक'' करार दिया था, बावजूद इसके कि यूनेस्को ने इसे वर्ल्ड हेरिटेज साइट (विश्व विरासत स्थल) घोषित किया हुआ था। इतिहास गवाह है कि हर साल अफ़गानिस्तान और विदेशों से बौद्ध तीर्थयात्री यहां आ कर प्रार्थना करते हैं और इस क्षेत्र के सबसे प्रसिद्ध और ऐतिहासिक सांस्कृतिक स्थल में उत्सव का माहौल रहता था।

जुलाई 1999 में, तालिबान प्रमुख मुल्ला मोहम्मद उमर ने बामियान के बुद्धों को संरक्षित करने का फैसला करते हुए कहा चूंकि अब मूर्तियों की पूजा नहीं की जाती है, इसलिए भविष्य में यह स्थल एक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में फायदे का सौदा हो सकता है।

लेकिन फरवरी 2001 में, तालिबान अपनी बात से पलट गए और मूर्तियों को नष्ट करने का फैसला किया जिस की वज़ह से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी हंगामा मचा था। ओआईसी (इस्लामिक राष्ट्रों के संगठन) के सभी 54 देशों ने यूनेस्को द्वारा आयोजित एक बैठक में इस फैसले की कड़ी निंदा की। भारत और जापान दोनों ने ही प्रतिमाओं को उनकी लागत पर अपने देशों में स्थानांतरित करने का प्रस्ताव दिया था ; जापान ने प्रतिमाओं के मुआवजे के रूप में तालिबान को अतिरिक्त धन देने की पेशकश भी की थी। यहां तक कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने भी इस असामाजिक कृत्य के खिलाफ तालिबान से पत्र लिखकर अनुरोध किया था । लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा और कई हफ्तों तक शक्तिशाली डायनामाइट का उपयोग कर बुद्ध की विशाल मूर्तियों को धमाके के साथ उड़ा कर टुकड़े कर दिए, एंटी-एयरक्राफ्ट गन से कई राउंड फायरिंग करने के बाद बावजूद विरासत की इन मजबूत कलाकृतियों को केवल खंडित ही कर सके पर नष्ट करने में कामयाब नहीं हुए।

अपने मन की आँखों से उस जगह की हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते थे, ''स्वर्ण जड़ित बुद्ध की भव्य मूर्तियां कीमती आभूषणों से सुससज्जित जो आंखों को चकाचौंध कर दें'' जैसा एक पर्यटक ने कहा था।

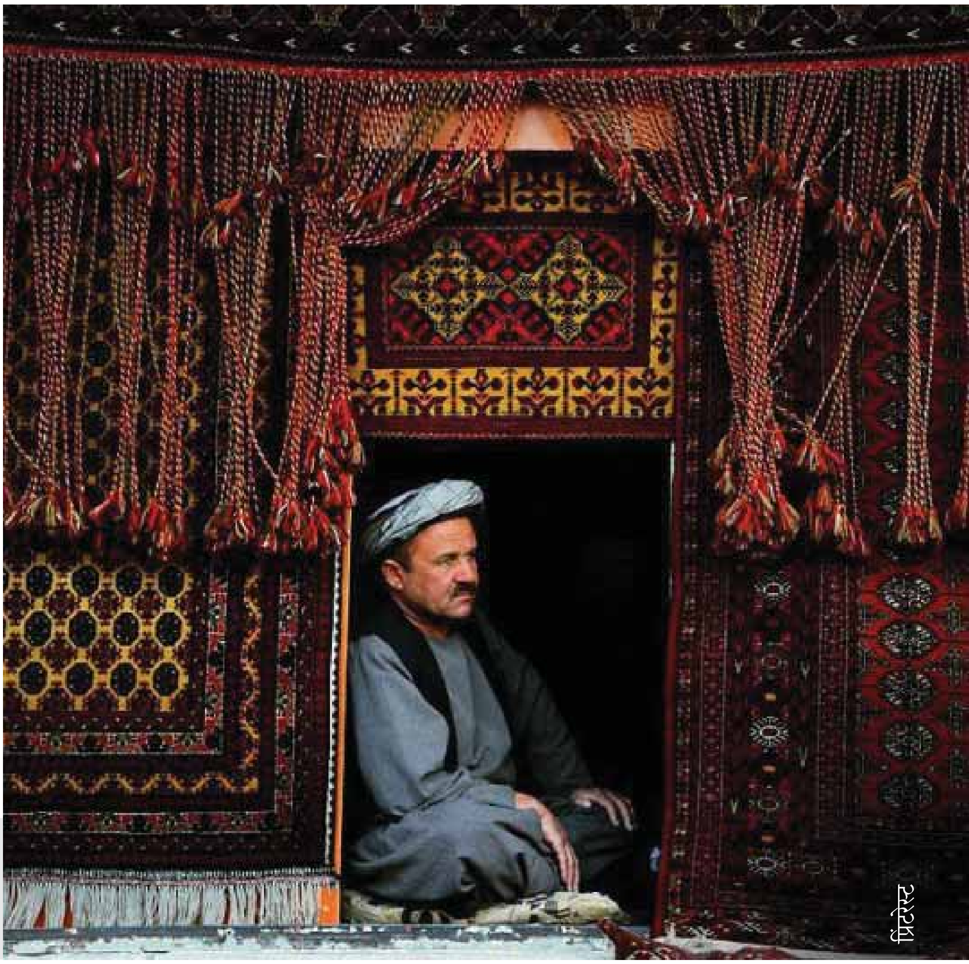

काबुल में एक कालीन बिक्रेता।

ऊपर : *एक फेरीवाला बॉलीवुड सितारों के पोस्टर बेचते हुए।*

बामियान की यात्रा

टोयोटा हाइ एस में, हमारी बामियान की यात्रा यादगार रही, क्योंकि वाहन को बड़े विस्तार में फैले क्षेत्र से गुजरना पड़ता है, जहां कभी सड़क रही होगी । जब हम काबुल से बाहर निकले, मैंने सहजता से काबुल में फ्रांसीसी दूतावास में काउंसलर फॉर कोऑपरेशन, ओलिवियर गीयोल से बामयान की दूरी के बारे में पूछा, तो वह मुस्कुराते हुए बोले : ''अफगानिस्तान में हम फासला कभी भी दूरी से नहीं; बल्कि घंटों में नापते हैं।''

खैर, सड़कों के हालात देखते हुए, 250 किमी के सफर में हमें 11 घंटे लग गए। जिस समय हम अपनी पीठ को सहला रहे थे, तो हमारे ड्राइवर की दशा की कल्पना करें, जिसने हिचकोले खाते वाहन द्वारा बोल्डर और गड्ढों भरे रास्ते पार किये थे जिसमें पूरा का पूरा वाहन समा सकता था। पहाड़ से बर्फ पिघलने की वजह से सड़क पर नदी नाले भी बन गए थे।

लेकिन एक सुरम्य परिदृश्य देख कर राहत मिली, हमारे साथ सड़क से थोड़ा नीचे चल रही छोटी नदियों, असामान्य रूप से हुई अच्छी बारिश की वजह से, शुरुआती वसंत की हरियाली देख कर गेहूं की बढ़िया फसल और खुशी की उम्मीद जगी थी।

लेकिन इन दुर्गम सड़कों पर भी अपनी शानदार मेहमान नवाज़ी के साथ *चायखाने* मौजूद थे, मैत्रीपूर्ण लोग और मुस्कुराते हुए बच्चे जो हमें गरमा गरम चाय पिलाते थे। देश की परिस्थिति, और अपनी गरीबी के बावजूद, उन्होंने विदेशियों को लूटने का कोई प्रयास नहीं किया गया था, जबकि हमारे साथ पश्चिमी लोग, दो गीयोल भी शामिल थे!

मुड़ कर जब अपनी अफगानिस्तान यात्रा पर नज़र डालती हूँ, आज से 16 साल पहले , मेरा सपना किसी दिन वहां वापस जाने का है। लेकिन कोविड महामारी ने यात्रा को हमारी पहुँच से दूर कर दिया है। और उस समय की बॉलीवुड लोकप्रियता को देखते हुए, मुझे उत्सुकता है कि आज उनके लोकप्रिय सितारे कौन हैं। पहले शाहरुख खान और माधुरी दीक्षित के साथ अजय देवगन, ऐश्वर्या राय और प्रीति ज़िंटा भी थीं। तालिबान पर प्रतिबंध के बाद काबुल में संगीत वापस लौट आया था, और आप काबुल की सड़कों पर बॉलीवुड गाने सुन सकते थे, बॉलीवुड सितारों के बड़े पोस्टर भी नज़र आते थे!

भारत को अच्छी फ़िल्मों को बढ़ावा देना चाहिए, जो लड़कियों की शिक्षा और महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता पर केंद्रित हों। निश्चित रूप से अफगानी हुक्मरानों को इस तरह की फिल्मों से प्रेरणा लेने की जरूरत है!

एक ईरानी स्वैच्छिक कार्यकर्ता

लेकिन एक एनजीओ के लिए काम कर रही एक ईरानी महिला ने मुझे सोचने चिंतन करने पर विवश कर दिया जब उसने कहा: ''मुझे पता है कि भारत में महान फ़िल्में बनती हैं; लेकिन दुर्भाग्य से, अफ़गानिस्तान में हमें मिलता क्या है केवल रंगीन गीत-और-नृत्य रोमांस वाला सामान्य स्तर का सिनेमा। लेकिन यहां महिलाओं की स्थिति को देखते हुए और भारत की लोकप्रियता के मद्दे नज़र, आपकी सरकार को ऐसी फिल्मों को बढ़ावा देना चाहिए जिनमें लैंगिक समानता जैसे विषयों की प्रधानता हो, जो लड़कियों की शिक्षा और महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता पर केंद्रित हों। निश्चित रूप से अफगानी हुक्मरानों को इस तरह की फिल्मों से प्रेरणा लेने की जरूरत है!''

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

यह सब बेकार न जाने दें

प्रीति मेहरा

जिम्मेदार हरित नागरिकों के रूप में एक मुद्दा है जिस पर दिल से और तत्काल ध्यान देने की जरूरत है। हमारे घरों में उत्पन्न कचरे के प्रबंधन के लिए सिर्फ कूडेदान में फेंकने से कहीं ज़्यादा करने की ज़रूरत है। दरअसल, अगर हम अपने आप को एक कदम आगे बढ़ाएं, तो यह दुनिया एक स्वस्थ और साफ़-सुथरी जगह बन सकती है।

कचरे का निस्तारण करने के आंकड़े काफी चिंताजनक हैं। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, भारतीय सालाना 145 मिलियन टन (MT) कचरा निकालते हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि 2047 तक यह आंकड़ा चौंका देने वाला होगा, अर्थात प्रतिदिन 260 से 300 (MT) तक पहुंच जाएगा। यह पूर्वानुमान काफ़ी चिंताजनक है।

समस्या को यह बात और जटिल बनाती है कि स्थिति को कम करने के लिए पर्याप्त कार्य नहीं किया जा रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों से पता चलता है कि एकत्र किए गए 117,644 MT कचरे में से वर्तमान में केवल 49,401 MT पर ही उपाय किया जाता है। बाकी शहर के लैंडफिल में ढेर लगाकर कचरे के पहाड़ों में बदले जा रहे हैं। और दुर्भाग्य से, यह दिन-पे-दिन बढ़ता ही जा रहा है।

समस्या के पैमाने और भयावहता को देखते हुए, हम नागरिकों के रूप में क्या कर सकते हैं? बहुत कुछ। सबसे अच्छी बात यह है कि कचरा प्रबंधन घर से ही शुरू होता है। यह हमारे कचरे को अलग करने की सरल कार्रवाई के साथ शुरू होता है। इसके लिए तीन चिह्नित डिब्बे और एक बड़ा कपड़े का बैग रखना सबसे अच्छा है। सूखे कचरे के लिए एक बड़ा बिन और गीले कचरे और खतरनाक कचरे के लिए दो अपेक्षाकृत छोटे बिन। बड़े कपड़े के बैग को एक कोने में छुपाकर रखें ताकि प्लास्टिक पैकेजिंग एकत्र की जा सके, जिसे पुन: उपयोग के लिए समय-समय पर बाहर भेजा जा सकता है।

सूखे कचरे में आम तौर पर कार्टन, कार्डबोर्ड, डिब्बे, एल्यूमीनियम फॉयल, प्लास्टिक, धातु और कागज होते हैं - सभी उन सामग्री से बने होते हैं, जिन्हें पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है। ग्लास भी सूखी श्रेणी में आता है, लेकिन बिन में छोड़ने से पहले, टूटने से बचने के लिए ध्यान से पैक करने की जरूरत होती है। वैकल्पिक रूप से, इसे निपटाने के लिए अलग भी रखा जा सकता है।

आपके गीले कचरे में, जिसे प्रतिदिन निपटाने की जरूरत है, इस्तेमाल की गई चाय की पत्तियां, कॉफी ग्राउंड, सब्जी के छिलके, मांस और मछली की हड्डियां, बचे हुए खाद्य पदार्थ, सूखे फूल और पत्तियां शामिल होंगे। संक्षेप में सब कुछ जैविक है, जिसे दूर फेंका और कंपोस्ट किया जा सकता है।

यदि इसके लिए आप किसी में निवेश करना चाहते हैं, तो वह एक जैविक कचरा कनवर्टर हो सकता हैं। या फिर, एक साधारण खाद बॉक्स चल जाएगा। इस प्रकार कचरे को आपके पौधों के लिए खाद में बदला जा सकता है। यदि आप ऊँची इमारत में रहते हैं, तो पूरे अपार्टमेंट ब्लॉक के लिए एक आम कंपोस्टिंग इकाई शुरू की जा सकती है, जो आसपास के सभी हरे क्षेत्रों के लिए खाद बना सकती है। कई पर्यावरण संगठन अब सक्रिय रूप से अपार्टमेंट ब्लॉकों को ऐसी हरित प्रथाओं को शुरू करने में मदद करते हैं।

घातक कचरा थोड़ा और जटिल है। इसमें एक्सपायर्ड दवाएं या सौंदर्य प्रसाधन, जूते की सूखी पॉलिश, सूखे पेंट, फ्यूज्ड बल्ब, फ्लोरोसेंट ट्यूब, स्प्रे के डिब्बे, बैटरी, खाद और कीटनाशक कंटेनर शामिल हैं। उन्हें एक अलग बिन में इकट्ठा किया जाना चाहिए और निपटान से पहले 'खतरनाक' के रूप में बिन को चिह्नित किया जाना चाहिए। सैनिटरी नैपकिन सहित सैनिटरी कचरे के निपटान के लिए अलग से एक पेपर बैग की भी ज़रूरत होती है।

आप सोच रहे होंगे कि वह कपड़े का बैग किस लिए है। बहुत सारी निवास और इमारत समितियां गैर-लाभकारी संगठनों के साथ गठजोड़ करती हैं जो पेड़-पौधे उगाते हैं, कचरे को नकदी में बदलते हैं तथा बच्चों के लिए खिलौने या फर्नीचर बनाते हैं। ये संगठन इस्तेमाल किए गए दूध के पैकेट, मजबूत ग्रॉसरी बैग, अमेजन कूरियर बैग और अन्य पैकिंग मटेरियल के लिए लगातार जनता से अपील कर रहे हैं। इन्हें इसी कपड़े के बैग में इकट्ठा किया जा सकता है और रीसाइक्लिंग के लिए महीने में एक बार सौंपा जा सकता है।

इसके अलावा हर घर में इलेक्ट्रॉनिक कचरा निकलता है, जिसके सही तरीके से निस्तारण किए जाने की जरूरत है। चाहे पुराना मोबाइल फोन हो, चार्जर, कीबोर्ड, कंप्यूटर माउस, मिक्सर, लैंप, लोहा या हेडफोन्स हो। इन्हें एक कबाड़ीवाले को बेचना सबसे अच्छा है, जो जानता है कि इलेक्ट्रॉनिक कचरे से कैसे निपटना है। बेशक, पुराने मोबाइल और लैपटॉप के कुछ ब्रांडों को मएक्सचेंज ऑफरफ के साथ बेचकर उनके बदले नए मोबाइल और लैपटॉप ख़रीदे जा सकते हैं।

आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, भारतीय सालाना 145 मिलियन टन (MT) कचरा निकालते हैं। 2047 तक यह आंकड़ा प्रतिदिन 260 से 300 (MT) तक पहुंच जाएगा। यह पूर्वानुमान काफ़ी चिंताजनक है।

यह खुशी की बात है कि कई निवासी कल्याण समितियों ने प्रत्येक के लिए चुट्स या विशेष स्थान निश्चित करके सूखे, गीले और खतरनाक कचरे के लिए प्रावधान करके अलगाव की प्रक्रिया शुरू कर दी है। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया है कि इकठ्ठा किया गया कचरा उपयुक्त गंतव्य तक पहुंचे। लेकिन यह सब घर से ही शुरू होता है। अलगाव का सरल कार्य कचरे को कंपोस्टिंग, रीसाइक्लिंग और जलाए जाने जैसी विभिन्न प्रक्रियाओं को लागू करने में आसान बनाता है।

कचरे को घर पर अलग करने को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। यदि हम अपने रहने की जगह में व्यवस्थित रूप से इस क्रिया को पूरा नहीं करते हैं तो इसे लैंडफिल में ढेर का प्रबंधन करने के लिए भविष्य में एक विशाल प्रयास की आवश्यकता होगी। वर्तमान में कचरे के इन पहाड़ों में से कुछ भारी लागत पर कचरा वसूली और निपटान के लिए खनन कर रहे हैं।

एक टिकाऊ जीवन शैली में बदलने का मतलब है, इन चार मन्त्रों का पालन--कम करना, पुनः उपयोग करना, पुनः चक्रित करना और पुनःप्राप्त करना। दरअसल, यह जैविक सामग्री की अपनी खपत को कम करने की वकालत करता है। वस्तु को अधिकतम उपयोग करने की कोशिश करने से पहले आपने जो उपयोग किया है उसे पुनः उपयोग करता है, और इस तरह जो कुछ भी संभव है उसे पुनः प्राप्त करता है। चार मन्त्रों और कंपोस्टिंग तकनीकों पर चर्चा करने के लिए पूरे नए स्तंभों की आवश्यकता होगी।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

TRF की मदद से अच्छे कार्य

अहमदाबाद में एक रोटरी डायलिसिस सेंटर

टीम रोटरी न्यूज़

RIDE महेश कोटबागी और अमिता के साथ डीजी हरीश मोटवानी, डीजीई ओम प्रकाश मोटीपवाले, डी आर एफ सी प्रमोद पारिख, और क्षितिज ज़ावारे डायलिसिस सेंटर में।

रोटरी क्लब अहमदनगर मिडटाउन, रो ई मंडल 3132 ने महाराष्ट्र के अहमदनगर में मैककेयर सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में पांच डायलिसिस इकाइयों सहित एक रोटरी मिडटाउन डायलिसिस सेंटर खोला।

48,000 डॉलर की परियोजना को टीआरएफ की ग्लोबल ग्रांट द्वारा वित्त पोषित किया गया था, रोटरी क्लब मियामी एयरपोर्ट, रो ई मंडल 6990 यूएस और रोटरी क्लब फरीदाबाद आस्था, रो ई मंडल 3011 ने क्लब अध्यक्ष क्षितिज ज़ावारे के बताया। क्लब ने मशीनें, जनरेटर-सेट, आरओ वॉटर प्यूरीफायर, एयर कंडीशनर और हॉस्पिटल बैड को अस्पताल को सौंपा। ज़ावारे ने कहा कि सेवाओं को रियायती दरों पर प्रदान किया जाएगा और इस सुविधा से एक दिन में 400 डायलिसिस करने में मदद मिलेगी जिससे 50 से 80 जरूरतमंद रोगी लाभान्वित होंगे।डीजी हरीश मोटवानी, डीजीई ओम प्रकाश मोटीपवाले, डीआरएफसी प्रमोद पारिख, प्रोजेक्ट चेयरमैन विजय इंगले और ज़ावारे की उपस्थिति में RIDE महेश कोटबागी के द्वारा सेंटर का उद्घाटन किया गया। ■

आपके गवर्नरों से मिलिए

वी मुत्तुकुमारण

नेत्र देखभाल के लिए प्रोजेक्ट ऑरेंज

एस मुत्तुपलनियप्पन

रियलटर, रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल आदित्य, रो ई मंडल 3232

वह यह साझा करने के लिए उत्साहित है कि इस रोटरी वर्ष के अंत तक, तमिलनाडु में ₹30 करोड़ की लागत से 200 विज़न केंद्र होंगे। एस मुत्तुपलनियप्पन कहते है कि मंडल परियोजना - *प्रोजेक्ट ऑरेंज* - के तहत मंडल की टीम WHO, इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ प्रीवेन्टबल ब्लाइन्डनेस और भारत के छह बड़े अस्पतालों के समर्थन से, भारत सरकार के 2020 तक समस्त भारत भर में 20,000 विज़न केंद्र स्थापित करने के लक्ष्य के विशाल अंतर को कम करने के लिए एक मिश्रित मॉडल लेकर आई है। ''हम रो ई मंडल 3232 और पड़ोसी मंडलों में 200 नेत्र देखभाल सुविधाएं स्थापित करेंगे। फरवरी के अंत तक हम 104 विज़न केंद्रों के पहले बैच का संचालन करेंगे जिसके लिए सात वैश्विक अनुदान (1.6 मिलियन डॉलर) को 32 क्लबों के समर्थन से स्वीकृत किया गया है'', उन्होंने आगे कहा।

मंडल ने टैंकर फाउंडेशन के सहयोग से अपनी मौजूदा ऐसी 10 सुविधाओं में चार और डायलिसिस केंद्र जोड़े है। अप्रैल में श्री रामचंद्र मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल को एक मोबाइल कार्डियक स्क्रीनिंग यूनिट दान की जाएगी (वैश्विक अनुदान: 180,000 डॉलर)। अब तक, 2.2 मिलियन डॉलर के 13 वैश्विक अनुदान आवेदन दर्ज किए गए है, जिनमें से 1.9 मिलियन डॉलर के मूल्य के 10 अनुदानों को स्वीकृत किया गया है। विकलांग व्यक्तियों की मदद करने के लिए, ''चरणबद्ध तरीके से 100 गतिशील वेंडिंग गाड़ियां दी जा रही है ताकि विक्रेताओं की महामारी के दौरान सामना की जाने वाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके।''

मुत्तुपलनियप्पन ने *प्रोजेक्ट सुंदरी* के तहत 100 महिलाओं को सौन्दर्य प्रसाधन का प्रशिक्षण देने का लक्ष्य रखा है। कुल 5,400 रोटेरियनों वाले 129 क्लबों के साथ, वह 10 प्रतिशत सदस्यता वृद्धि का लक्ष्य बना रहे है। दुनिया का सबसे बड़ा रोटरेक्ट मंडल (130 क्लब, 25,000 से अधिक रोटरेक्टर) होने के नाते, वह सदस्यों को रोके रखने और युवाओं को व्यस्त रखने को लेकर उत्सुक है ''ताकि उन्हें रोटरेक्ट क्लबों का महत्व नज़र आ सकें। TRF को देने के लिए उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर का है।''

वृक्षारोपण, सड़क सुरक्षा उनके शीर्ष ध्यान केंद्रित क्षेत्र है

के एस वेंकटेसन

खाद्य तेल विनिर्माण, रोटरी क्लब चिन्नासेल्लम, रो ई मंडल 2982

वह विशाल वृक्षारोपण मुहिम के साथ पर्यावरण से संबंधित परियोजनाओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे। के एस वेंकटेशन ने मंडल भर में कम से कम 50,000 पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। ''अब तक 20,000 पेड़ लगाए जा चुके है'', वह कहते है। उनकी दूसरी प्राथमिकता सड़क सुरक्षा जागरूकता है जिसके लिए मंडल एक विशाल बाइक रैली आयोजित करेगा जो रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाएगी। ''अब तक 12 सड़क सुरक्षा जागरूकता शिविर आयोजित किए गए, और इस वर्ष हम ऐसे 30 शिविर आयोजित करने के लक्ष्य को आसानी से पार कर लेंगे।''

सदस्यता के मुद्दे पर, उनका लक्ष्य 15 प्रतिशत की वृद्धि करने का है। वर्तमान में, 3,180 रोटेरियन है, जिनमें से 120 नए सदस्य है। इसके अलावा, हाल ही में 46 नए सदस्यों के साथ एक नया क्लब रोटरी क्लब मेट्टूर डैम सिटी गठित किया गया है। 83 रोटरेक्ट क्लबों में 1,500 से अधिक रोटरेकटर है और उनकी 200 नए सदस्यों को जोड़ने की योजना है।

उनकी मंडल भर में 30 रक्तदान शिविर आयोजित करने की योजना है और अब तक 20 का आयोजन किया जा चुका है। हैप्पी स्कूल परियोजना के तहत सभी क्लबों को सरकारी स्कूलों को दान करने हेतु स्मार्ट टीवी दिए गए। ''हम स्कूल के पुस्तकालयों को 200 अलमारी देंगे'', वह आगे कहते है। उनका अपने मंडल से टीआरएफ में 400,000 डॉलर का योगदान करने का लक्ष्य है। तत्कालीन अध्यक्ष सी भास्कर से प्रेरित होकर वेंकटेशन 1989 में एक रोटरेकटर के रूप में शामिल हुए थे। ''बाद में, मैं 1997 में रोटरी क्लब चिन्नासलेम का चार्टर सचिव बन गया। भास्कर रोटरी में मेरे आदर्श है'', वह कहते है।

नए दिशानिर्देशों के तहत सदस्यता वृद्धि एक बड़ी चुनौती है

राजन गंदोत्रा

रियलटर, रोटरी क्लब धनबाद, रो ई मंडल 3250

जब राजन गंदोत्रा सामुदायिक सेवा परियोजनाओं को गति देने और रोटेरियनों को प्रेरित करने के लिए तत्पर थे, ''तब मैं रो ई मंडल के 1 फरवरी को जारी किए गए परिपत्र से हक्का-बक्का रह गया था कि अब गवर्नरों की क्लबों के मासिक दौरों और व्यक्तिगत बैठकों के लिए कोई भी धन नहीं दिया जाएगा'', वह कहते है। जब यह रो ई परिपत्र जारी हुआ तब वह एक आधिकारिक यात्रा कर रहे थे। जबकि उनका 500 नए सदस्यों को जोड़ने का लक्ष्य है, ''मुझे नहीं पता कि क्लब की बैठकों को लेकर जारी किए गए नए दिशानिर्देश के बाद यह संभव हो पाएगा कि नहीं।'' क्लब जूम बैठकों के माध्यम से प्रेरित नहीं होते और अपने गवर्नरों के साथ रूबरू होकर बैठक करने को प्राथमिकता देते है। 3,870 से अधिक रोटेरियनों के साथ मंडल में 101 क्लब है। वह 58 रोटरेक्ट क्लबों में 1,200 से अधिक सदस्यों की मौजूदा संख्या में 200 नए रोटरेकटरों को और जोड़ने को लेकर आश्वस्त है।

विभिन्न टाइम जोनों के 30 वैश्विक नेताओं की उपस्थिति में 1.2 मिलियन पेड़ लगाने के लक्ष्य के साथ ठखइए शेखर मेहता द्वारा आभासी रूप से प्रोजेक्ट वसुंधरा लॉन्च की गई।

हैप्पी स्कूलों के तहत धनबाद के जीवन ज्योति स्कूल को एक वैश्विक अनुदान परियोजना (60,000 डॉलर) के माध्यम से 110 विकलांग बच्चों को पढ़ाने हेतु विशेष उपकरण प्रदान किए जाएंगे जो प्रक्रियाधीन है। ''मेरी अपने कार्यकाल के दौरान 50 हैप्पी स्कूल करने की योजना है'', वह कहते है। ''50,000 डॉलर की औसत [illegible] हमें मिली हैं और दो सुविधाओं के लिए मंजूरी भी मिल गई हैं।'' स्वास्थ्य सेवा के मुद्दे पर, प्रत्येक में तीन मशीनों वाले छह डायलिसिस केंद्र बिहार और झारखंड के एक निजी और पांच धर्मार्थ अस्पतालों में स्थापित किए जाएंगे।

दो नेत्र अस्पताल और दो रक्त घटक विभाजक इकाइयां वैश्विक अनुदानों के माध्यम से प्रक्रियाधीन है। गंदोत्रा अपने स्कूल के मित्र पीडीजी संदीप नारंग से प्रभावित होकर 1996 में रोटरी क्लब धनबाद से जुड़े। वह अपने गृह क्लब से चौथे गवर्नर है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

ग्रामीण शिमोगा में महिलाओं को अपनी आय बढ़ाने के लिए मिली गायें

किरण ज़ेहरा

रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज प्रोग्राम पर रोटरी क्लब वेस्ट स्प्रिंगफील्ड, रो ई मंडल 7890, यूएसए से पीडीजी रॉबर्ट मैकडोनाल्ड और उनकी पत्नी ने पिछले साल शिमोगा का दौरा किया और रोटरी क्लब शिमोगा की गौ दान परियोजना के लाभार्थियों से मुलाकात की। आंसू भरे नैनों से एक ग्रामीण पल्लवी ने आगंतुकों को बताया कि कैसे उन्होंने रोटरी की इस पहल की मदद से चार गायों का एक झुंड तैयार किया और कैसे तब से उनकी आय लगातार बढ़ रही है। एक अन्य लाभार्थी जगन्नाथ ने बताया कि क्लब द्वारा उसकी पत्नी को उपहार स्वरूप दी गई गाय की वजह से उन्हें जो आय प्राप्त होती है उससे वे अपने बेटे को स्कूल भेजने में सक्षम हो पाए। पीडीजी मैकडोनाल्ड ने घर लौटकर सफलता की इन कहानियों को अपनी क्लब बैठक में साझा किया। जिसके परिणामस्वरूप, उनके क्लब ने उसी परियोजना के लिए छह वैश्विक अनुदानों में से चार अनुदानों के लिए रोटरी क्लब शिमोगा, रो ई मंडल 3182, का समर्थन किया।

रोटरी क्लब रिप्पनपेट, रो ई मंडल 3182, टीआरएफ और रोटरी क्लब वेस्ट स्प्रिंगफील्ड के सहयोग से क्लब ने रिप्पनपेट और शिमोगा के आस-पास के गांवों के वंचित परिवारों को 73 संकर दुधारू गाय उपहार में दी। ''इस परियोजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि की महिलाओं को स्वरोजगार प्रदान करके गरीबी उन्मूलन करना है। इस परियोजना ने इन परिवारों के जीवन स्तर में सुधार किया है'', क्लब अध्यक्ष सुनीता श्रीधर कहती है जिन्होंने इस परियोजना की शुरुआत की।

डीजी राजाराम भट और पीडीजी बी एन रमेश की उपस्थिति में एक पारंपरिक गो पूजा करने के बाद लाभार्थियों को गायें सौंपी गई।

तीस लाख रुपये की लागत वाले इस लोकप्रिय 'काउ प्रोजेक्ट' के माध्यम से आज तक 500 से अधिक परिवार लाभान्वित हुए है। इन गायों को 'रोटरी गाय' नाम दिया गया है, उन्होंने चुटकी ली। लाभार्थियों का गौ पालन का ज्ञान सुनिश्चित करने के बाद ही उन्हें चुना गया। ''हमने यह भी सुनिश्चित किया कि वे गायों को एक साधारण आश्रयस्थल और पर्याप्त जल दे सकें। उनसे उनकी गायों के लिए दुर्घटनाओं और बीमारियों हेतु बीमा लेने का आग्रह किया गया था'', सुनीता कहती है। स्थानीय रोटरी क्लबों ने टीकाकरण, उपचार और कृत्रिम गर्भाधान जैसी नि: शुल्क पशु चिकित्सा सेवाओं का आयोजन करने के लिए स्थानीय सरकार के पशुपालन विभाग के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है। लाभार्थियों को गाय सौंपने से पहले पशु चिकित्सकों द्वारा उन्हें प्रशिक्षण दिया गया।

लाभार्थियों ने रोटेरियनों को आश्वासन दिया कि वे गायों की अच्छी देखभाल करेंगे और अगले तीन वर्षों तक उन्हें नहीं बेचेंगे। रोटेरियनों ने उनसे एक विशेष वचन लिया कि हमारे मार्गदर्शन में एक उपयुक्त लाभार्थी को पहली बछड़ा-बछिया दान की जाएगी। ''इससे हमें और अधिक गरीब परिवारों का समर्थन करने और परियोजना को स्थायी बनाने में मदद मिलेगी'', सुनीता मुस्कुराती है। ■

रोटेरियन नारायण पांडेश्वर, पीडीजी बी एन रमेश, डीजी राजाराम भट (भूरे रंग के कोट में), और रोटरी क्लब शिमोगा की अध्यक्ष सुनिता श्रीधर लाभार्थीयों के साथ।

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

क्लब मान्यता

रोटरी संस्थान अपने क्लबों को अनेक अवसर प्रदान करती है ताकि अनुदानों और कार्यक्रमों के समर्थन हेतु उन्हें अनेक अवसर प्राप्त हो सके। माय रोटरी में मंडल/क्लब के नेताओं के लिए उपलब्ध क्लब फाउंडेशन बैनर रिपोर्ट, वर्तमान रोटरी वर्ष में एक क्लब की प्रगति को प्रदर्शित करती है — 100% संस्थान को देने वाले क्लब; 100% प्रत्येक रोटेरियन, प्रत्येक वर्ष क्लब; वार्षिक निधि में देने वाले शीर्ष तीन प्रति व्यक्ति; 100% पॉल हैरिस सोसायटी क्लब; 100% पॉल हैरिस फ़ेलो क्लब (वन-टाइम बैनर)

2015-16 के अनुसार, नए क्लब सदस्य (जो वर्तमान वर्ष के दौरान अन्य रोटरी क्लब में शामिल हुए या वहाँ से स्थानांतरित हुए है) क्लब बैनरों के लिए भागीदारी की आवश्यकता में शामिल नहीं है (100% पॉल हैरिस फेलो बैनर को छोड़कर)। हालाँकि, प्रति व्यक्ति गणना के लिए नए सदस्यों के योगदानों का उपयोग किया जाएगा।

सदस्यता और अतिरिक्त या पुनर्वितरित योगदान में बदलाव के कारण क्लब फाउंडेशन बैनर रिपोर्ट में सूचीबद्ध बैनर प्राप्तकर्ता पूरे रोटरी वर्ष में घट-बढ़ सकते है। 30 जून के बाद TRF द्वारा अंतिम बैनर प्रमाणन संसाधित किया जाता है। पिछले वर्ष के लिए अर्जित क्लब बैनर वर्तमान मंडल गवर्नर को अक्टूबर या नवंबर में भेज दिए जाते है। आप मंडल फाउंडेशन बैनर रिपोर्ट के लिए *rotarysupportcenter@rotary.org* पर अनुरोध कर सकते है। क्लब/मंडल के नेता उनके माई रोटरी लॉगिन के माध्यम से भी इसे देख सकते है।

रोटरी की कोविड राहत को बढ़ावा दें

अगले कुछ महीनों में रोटरी की कोविड राहत गतिविधियों को निम्नलिखित तरीकों से बढ़ावा दें:

- रो ई के आधिकारिक फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम को फॉलो करें और वैश्विक एवं क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित किए गए ऑनलाइन कार्यक्रमों में भाग लें
- #PeopleOfAction और #RotaryResponds हैशटैग का उपयोग करें और अच्छे काम एवं उम्मीद की कहानियों का प्रचार करें
- छोटे सोशल मीडिया पोस्ट पैकेज बनाएं (किसी विशेष पहल/परियोजना से जुड़ी 4-5 आनुक्रमिक पोस्ट का एक सेट) और उन्हें अपने डिजिटल चैनलों पर साप्ताहिक/पाक्षिक रूप से पोस्ट करें
- विभिन्न ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में किए गए कार्यों और कुछ महत्वपूर्ण तिथियों जैसे विश्व जल दिवस (22 मार्च), विश्व स्वास्थ्य दिवस (6 अप्रैल) पर सामयिक पोस्ट हेतु इन्फोग्राफिक्स तैयार करें।
- क्लब और मंडल नेतृत्व के वीडियो बाइट्स का उपयोग करें और प्रमुख अवसरों या मुद्दों पर फेसबुक और इंस्टाग्राम पर पोस्ट डालें
- उपयुक्त कैप्शन के साथ तस्वीरों की मदद से दृश्य परियोजना पोस्ट (एक पोस्ट में 8-10 तस्वीर) तैयार करें। व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और फेसबुक पर छोटी स्टोरी के लिए इन तस्वीरों को पोस्ट किया जा सकता है।
- विस्तारण और वैश्विक रोटरी सदस्यों तक पहुँचने हेतु अपने सोशल मीडिया पोस्ट पर रो ई के वैश्विक हैन्डल्स को टैग करें
- रोटरी शोकेस पर परियोजनाएं और तस्वीरें अपलोड करें।

योगदान हेतु क्या करें और क्या न करें

क्या करें

दानकर्ता विवरण के साथ व्याख्या लेख जैसे:

- **नाम**
- **चेक/ड्राफ्ट नंबर के साथ रोटरी पहचान पत्र**
- **उपहार संज्ञा**
- **पेन कार्ड** (जो हर योगदान के लिए अनिवार्य है फिर चाहे वह कितनी भी राशि का हो)
- **कॉर्पोरेट पत्र** (परिवार नियंत्रित व्यवसाय/ट्रस्ट खाते से योगदान के मामले में)
- प्रत्येक सदस्य के लिए व्यक्तिगत **चेक/ड्राफ्ट**
- मुख्य दानकर्ता और उससे ऊपर के सम्मान के लिए **केवल व्यक्तिगत/जीवनसाथी** का योगदान

क्या न करें

- बिना दानकर्ता विवरण के चेक/ड्राफ्ट
- सदस्यों की तरफ से क्लब द्वारा समेकित चेक/ड्राफ्ट
- अन्य सदस्य की ओर से योगदान

महत्वपूर्ण:

ऑनलाइन योगदान के लिए, कृपया *My Rotary* लॉगिन या अपने आधिकारिक ईमेल पते का उपयोग करें ताकि दोबारा ID बनने से बचा जा सके और आपके योगदान को समय पर श्रेय दिया जा सके। साथ ही, क्लब नेतृत्वकर्ताओं के लिए उनके माय रोटरी लॉगिन के माध्यम से उपलब्ध 'सदस्यों की ओर से योगदान' विकल्प के मामले में, 80G रसीद केवल धन के प्रेषक के नाम पर ही जारी की जा सकती है, न कि व्यक्तिगत सदस्यों के नाम पर। 'क्लब के सदस्यों की ओर से ऑनलाइन योगदान कैसे करें' इस बारे में अधिक जानने के लिए इस लिंक पर जाएं http://www.highroadsolution.com/file_uploader2/files/give_online_on_behalf_of_club_or_club_members_instructions.pdf

संगीत और माधुर्य

सुरों की मलिका, आशा

एस आर मधु

इस गीत में इतनी ताक़त है कि ये मुर्दा इंसान में भी जान फूंक दे। ये उदगार थे किशोर कुमार के, देव आनंद की फिल्म *हरे रामा हरे कृष्णा* (1971) के लिए, आशा भोसले की शोख आवाज़ में गाये गीत *दम मारो दम* के लिए जो उस वक़्त हिप्पी आंदोलन का अंतर्राष्ट्रीय गान बन गया था। इसने पूरी दुनिया की रॉक और जैज़ संस्कृति को प्रभावित किया था और बॉलीवुड संगीत को हिला कर रख दिया था।

पहले ये गीत लता मंगेशकर द्वारा प्रस्तुत किया जाना था, लेकिन देव आनंद को लगा कि यह आशा भोसले पर ज़्यादा फबेगा। और वो सही थे। आशा थरथराई, ज़ीनत अमान चमकीं, और नतीज़ा, इस गीत ने सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किये।

अगर लता बॉलीवुड में माधुर्य की साम्राज्ञी हैं, तो चुलबुली, खूबसूरत और बिन्दास आशा भोंसले सुरों की मलिका हैं - और बदलाव का प्रतीक हैं। अपने छह-दशक के कैरियर में, उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ कैबरे गीत दिया था *(पिया तू अब तो आ जा- कारवां)* ; मधुबाला के सबसे प्रचलित गीतों में *(आइये मेहरबां - हावड़ा ब्रिज)*; देव आनंद का सर्वश्रेष्ठ रोमांटिक गीत *(अभी ना जाओ छोडकर,* आशा-रफ़ी का एक दिलकश गीत) और सिनेमा की कुछ बेहतरीन गज़लें, *उमराव जान* की जैसे *दिल चीज़ क्या है आप मेरी,* जुस्तजू जिसकी थी और *इन आँखों की मस्ती के* । उनका गाया दुल्हन गीत (बिमल रॉय की *परिणीता* में *गोरे गोरे हाथों में मेहंदी लगा के*); एक सदाबहार जन्मदिन गीत *(तुम जीयो हज़ारों साल - सुजाता)*; सबसे आकर्षक जिप्सी गानों में से एक *(मेरा साया में झुमका गिरा रे)*। बिमल राय की 1963 की क्लासिक बंदिनी में *अब*

के बरस भेज भैया को बाबुल, जिसका संगीत एस डी बर्मन ने दिया है।

शम्मी कपूर ने एक बार कहा: ''अगर मोहम्मद रफ़ी नहीं होते, तो मैं आशा भोसले से मेरे लिए गाने के लिए कहता।'' किशोर के पुत्र अमित कुमार, आशा के कथन को याद करते हुए कहते हैं कि ''किशोर कुमार जैसे व्यक्ति मिलेनियम में एक ही बार पैदा होते हैं'', और आगे जोड़ते हैं, ''पर आशा जी जैसी तो मिलेनियम में एक भी पैदा नहीं होती।'' संगीतज्ञ अशोक रानाडे का कहना है कि आशा जी संगीतकार द्वारा तैयार की गई किसी भी धुन में जान फूंकने की क्षमता रखती हैं।

प्रारम्भ

1943 में आशा की उम्र 10 साल थीं जब उन्होंने पहला फिल्मी गीत गाया था। आज 87 साल की उम्र में, वो 20 से अधिक भाषाओं में फ़िल्मी और गैर फ़िल्मी 13,000 गाने गा चुकी हैं। हालांकि एक अन्य अनुमान के अनुसार ये संख्या 20,000 से अधिक हैं! इनमें पॉप, ग़ज़ल, भजन, कव्वालियाँ, लोक और शास्त्रीय, और रवीन्द्र संगीत शामिल हैं। उन्हें 2008 में पद्म विभूषण; दादा साहेब फाल्के अवार्ड (2002); (*उमराव जान*, 1981), और फिल्म *इज़ाज़त* (1987) के गीत *मेरा कुछ सामान* के लिए दो राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके हैं साथ ही उन्हें सात बार फिल्मफेयर पुरस्कार और 2001 में फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाज़ा जा चुका है।

कभी कैबरे सिंगर और पॉप गायिका के रूप में मशहूर होने के बाद, लता मंगेशकर से कमतर आंकी जाने वाली आशा को आज परिवर्तन और नवाचार की प्रतीक और करिश्माई रॉक-स्टार गायिका के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता हैं, वो व्यक्ति जिसने बॉलीवुड संगीत की सीमाओं को चुनौती दी और नए रूप में परिभाषित किया। अपनी मामूली शुरुआत को याद करते हुए, उन्होंने कहा था, ''पीछे मुड़ कर जब मैं अपने शुरुआती कैरियर में झांकती हूं, तो मुझे धूल भरे फिल्मी सेट, इधर उधर दौड़ते लोग, रोशनी और कैमरे याद आते हैं। और उधर एक कोने में, इंतज़ार करते करते मैं सो जाती थी और फिर मुझे अपने हिस्से का गाना गाने के लिए जगाते थे। मैं उस वक़्त को आज भी याद करती हूं - वो आजादी से पहले का भारत था।''

रिकॉर्डिंग स्टूडियो में आर डी बर्मन के साथ।

कष्ट और संकल्प

आशा भोंसले को अपने कैरियर की शुरुआत में बेहद कड़ा संघर्ष करना पड़ा लेकिन आशा भोंसले की तरह व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में कुछ ही गायकों ने कष्ट झेला है। लेकिन इस पूर्वाग्रह और दुर्भाग्य से मुक्ति पाने के लिए उन जैसा दृढ़ संकल्प और लचीलापन बहुत कम ने दिखाया।

आशा याद करती है, जब वह और किशोर दोनों, फ़िल्मी संगीत की दुनिया में पैर जमाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, संगीतकार खेमचंद प्रकाश ने उन्हें एक रिकॉर्डिंग परीक्षण के लिए बुलाया और जहां दोनों ही रिजेक्ट हो गए। वह कहती है कि जब वे महालक्ष्मी स्टेशन की ओर जा रहे थे, रात के अन्धकार की भांति उनके भीतर भी घोर निराशा व्याप्त थी। उनके कैरियर में ऐसे कई पल आए थे।

आशा की सफलता के लिए तीन संगीतकार सबसे अधिक जिम्मेदार थे एस डी बर्मन, ओपी नैय्यर और आर डी बर्मन, हालांकि रवि और खय्याम ने भी उन्हें कुछ शानदार चार्टबस्टर्स दिए थे और 1995 में ए आर रहमान की *रंगीला* ने उनके कैरियर को एक नई चमक दी।

1957 तक आशा के गायन कैरियर का प्रारंभिक चरण, पारिवारिक इच्छा के विरुद्ध घर से पलायन कर, उनके पड़ोसी गणपतराव भोंसले से विवाह करने की वजह से काफी कष्टप्रद रहा। तब वह सिर्फ 16 वर्ष की थी और गणपतराव 31 वर्ष के थे। यह पूरी तरह से एक बेमेल, अपमानजनक और शोषण करने वाला विवाह था। पेशे से राशन इंस्पेक्टर, गणपत राव ने गायिका आशा का भरपूर शोषण किया। उसने घर से फोन हटा दिया था और आशा की रिकॉर्डिंग और फीस तय करने के लिए खुद ही स्टूडियो की ख़ाक छानता था।

उस समय तक लता एक सितारा शख़्सियत बन संगीतकारों और फिल्म निर्माताओं में लोकप्रिय हो चुकी थीं और उनकी बहुत मांग थी। आशा को जो भी मिला वो सब गाया, जैसे-दूसरों द्वारा अस्वीकृत किये गए गाने, नाइट क्लब के गाने (अक्सर हेलेन के), उन्हें दूसरे दर्जे की फिल्मों के गीत मिलते थे। लेकिन उन्होंने ठान लिया था कि वह अपनी जगह बना कर रहेंगी और दूसरी लता नहीं बनेंगी।

1957 में उन्हें महत्वपूर्ण ब्रेक मिला; जब देव आनंद की दो फिल्मों में उन्होंने सचिन देव बर्मन के लिए गाया था। *आँखों में क्या जी (नौ दो ग्यारह)* और *छोड़ दो आँचल (पेइंग गेस्ट)*, किशोर के साथ गाये दोनों गाने, 1950 के दशक के लोकप्रिय गीतों में शुमार थे।

कैरियर बदलने वाली फिल्म

और फिर 1957 में आई वो फिल्म जिसने उनके कैरियर की दिशा ही बदल दी और किस्मत पलट दी वो थी ब्लॉक बस्टर *नया दौर*, बीआर चोपड़ा द्वारा निर्मित इस फिल्म में वैजयंतीमाला और दिलीप कुमार ने अभिनय किया था। ओपी नैय्यर के प्रसिद्ध गीतों में से एक आशा-रफ़ी का ये युगल गीत, *मांग के साथ तुम्हारा* पूरा भारत गुनगुनाता था। वैजयंती को बिठा कर तांगा हांकते हुए दिलीप का ये गीत, लम्बे समय तक बॉलीवुड संगीत पर छाया रहा। यादगार कोरस गीत *साथी हाथ बढ़ाना* सहित *नया दौर* ने कई हिट गाने दिए थे।

नैयर ने कहा कि उन्हें ''एक दमदार, कामुक आवाज'' की ज़रूरत थी, और वो आवाज़ उन्हें आशा में मिली। दोनों ने मिलकर 324 गाने बनाए। 1960 में, विवाह

लता मंगेशकर के साथ।

विच्छेद के बाद, अपने दो बच्चों हेमंत और वर्षा के साथ आशा घर लौट आईं। उस समय उनके गर्भ में तीसरा बच्चा पल रहा था। उन्हें अपनी बची खुची जमा पूँजी और कार देनी पडी थी। इसके बाद साठ के दशक में, वो नैय्यर के साथ लिव-इन में रहने लगीं। मुहब्बत के साथ-साथ संगीत भी खिल उठा और आशा परवान चढ़ती गई।

ओपी के बैनर तले आशा ने कुछ बेहतरीन एकल गीत गाये हैं, *आइये मेहरबान, पूछो ना हमें हम उनके लिए (मिटी में सोना,* 1963) और *जाइये आप कहाँ जायेंग* (*मेरे सनम,* 1964), बेहतरीन रोमांटिक सोलो में शुमार हैं। 1962 में *एक मुसाफिर एक हसीना* और 1964 के *कश्मीर की कली* में मंत्रमुग्ध कर देनेवाले युगल गीत थे। (*किस्मत,* 1968 में बबिता पर फिल्माया गया) *आओ हुज़ूर* तुमको एक जादुई गीत था।

1972 में आशा ने ओ पी नय्यर के साथ अपनी जुगलबंदी समाप्त कर दी। मतभेद और व्यक्तित्व को ले कर अक्सर झड़पें होती थीं। एक दिन जब नैय्यर ने आशा की किशोर बेटी वर्षा को थप्पड़ मारा, उसने फैसला कर लिया कि अब तो हद हो गई। अलग होते समय उन के रिश्तों में इतनी कड़वाहट आ गई थी कि उन्होंने ओ पी के लिए गाये एक खूबसूरत गीत *चैन से हमको आपने जीने ना दिया,* 1972 *प्राण जाए पर वचन ना जाए* का श्रेय लेने से इंकार कर दिया था। उस गाने के लिए मिला प्रतिष्ठित फिल्म फेयर सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका पुरस्कार भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया। गीत में छिपी विडंबना और पक्षपात को, नय्यर से उनके कड़वे अलगाव के संदर्भ में, नकारा नहीं जा सकता।

आशा और आर डी बर्मन

जब एस डी बर्मन ने *नौ दो ग्यारह* फिल्म के लिए आशा को आर डी बर्मन (पंचम) के साथ गाने का अभ्यास करने के लिए कहा, वह बर्मन के कम अनुभवी बेटे के साथ अभ्यास करने में थोड़ी असहज महसूस कर रही थीं, जबकि किशोर सहज थे। लेकिन जल्द ही उन्होंने पंचम की मौलिकता और उनकी योग्यता का सम्मान करना शुरू कर दिया।1966 में *तीसरी मंज़िल* में अपारम्परिक गीतों और लीक से हट कर दिए संगीत के साथ, पंचम ने अपनी ज़बरदस्त प्रतिभा का प्रदर्शन किया। तीसरी मंज़िल में आशा के शानदार एकल गीत, ओ मेरे सोना रे सोना रे सोना रे की ज़बरदस्त तारीफ, जनसाधारण से लेकर फिल्म समीक्षकों तक ने की थी। उसके बाद तो पंचम-आशा की जोड़ी

किशोर कुमार के साथ।

अपने पति आर डी बर्मन के साथ।

ने चार्टबस्टर्स की झड़ी लगा दी - ज़िंदादिल गीत कारवां में *पिया तू अब तो आ जा* (1971), उस अवधि का युग प्रवर्त्तक गीत *दम मारो दम, यादों की बारात* में *चुरा लिया* (1973)।

दोनों ने 1979 में अपने मजबूत बंधन को एक शादी की मोहर लगा दी । आशा ने एक पत्रकार को बताया था, सालों तक पंचम मुझे गुमनाम रूप से फूल भेज रहे थे। एक दिन मजरूह साब (गीतकार) और पंचम की मौजूदगी में कोई शख्स फिर से गुलाब के फूल ले कर आया। मैंने उससे कहा, ''फेंक दो इन्हें। कोई मूर्ख व्यक्ति अपने गुलाब बर्बाद कर रहा है।'' पंचम का चेहरा उतर गया। तभी मजरूह साहब ठहाका मार कर हँसे और बोले, 'वो मूर्ख और कोई नहीं बल्कि ये पंचम ही है जो तुम्हें गुलाब भेजता रहा है।'

''मैंने आशा से शादी नहीं की, मैंने उसकी आवाज़ से शादी की है, पंचम ने कहा था।'' यह विवाह संगीत और साहचर्य का विवाह था।

दोनों की पसंद आजाद ख्याल थी। वे अक्सर रात में घंटों तक हर शैली के संगीत सुनते थे - लोक, पॉप, जैज़, बिस्मिल्लाह खान, बीटल्स, लैटिन, अरबी, बंगाली। आशा कहती, ''मैं सोने जा रही हूँ, तुम तो सुबह 11 बजे उठोगे लेकिन मेरी रिकॉर्डिंग सुबह 10 बजे है!''

आशा को अपने घर पर गर्व था और वो सफाई और सलीके को लेकर बहुत संजीदा थी जबकि पंचम ऐसे नहीं थे, वो उसकी सफाई की सनक से घबराते थे। आशा के जन्मदिन पर एक बार पंचम ने उसे चांदी की पन्नी में लिपटी झाड़ू भेंट की थी!

दुखों की बाढ़

इधर 1994 में पंचम की मृत्यु हुई, उधर आशा के ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा, और तकलीफें इंतज़ार कर रही थीं जो आशा के बच्चों पर टूट पड़ीं। 2012 में आशा सिंगापुर में थीं, जब बेटी वर्षा ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। तब वर्षा 56 वर्ष की थीं।

2015 में, उनके दूसरे बेटे हेमंत का 66 साल की उम्र में कैंसर से स्कॉटलैंड में निधन हो गया। पंचम की मृत्यु के बाद आशा ने 13 साल तक उनकी माँ की परवरिश की थी। यहां तक कि उसने पहले पति गणपतराव भोसले की मृत्यु के चार साल बाद तक उसकी मां का भी ख्याल रखा था, क्योंकि उन दोनों में कोई मतभेद नहीं था।

मोहम्मद रफ़ी के साथ।

बाएं से: हेलेन, मधुबाला और वैजयंतीमाला जिनके लिए आशा ने कई गाने गाए हैं।

1996 में, आशा ने *राहुल एंड आई,* आरडी बर्मन के साथ बनाये गए गानों का रीमिक्स बनाया। वैसे तो वो रीमिक्स व्यवसाय को नापसंद करती थी लेकिन उन गानों को किसी अन्य के द्वारा फूहड़ रीमिक्स से बचा कर रखने के लिए ऐसा किया था।

अंतर्राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रम और साझेदारी

1980 और 1990 के दशक के दौरान, आशा विश्व भ्रमण पर निकली और यूएस, यूके, कनाडा, यूएई और अन्य देशों में कई कंसर्ट, संगीत कार्यक्रमों का मंचन किया।

उनके कई अंतरराष्ट्रीय संगीत साझेदारी विदेशों में उनकी अपील के प्रमाण हैं। 1991 में, ब्रिटिश गायक और गीतकार बॉय जॉर्ज ने ''बॉय जॉर्ज सिंग्स, बाउ डाउन मिस्टर'' नामक गीत की रचना की थी। जिसमें बॉय जॉर्ज द्वारा भारतीय आध्यात्म की व्याख्या में *गीता* और *महाभारत* के रंगीन परिदृश्य शामिल थे और उसे सुरों में पिरोया था आशा ने।

1997 में, ब्रिटिश बैंड कॉर्नरशॉप ने अंतर्राष्ट्रीय हिट गीत 'ब्रिमफुल ऑफ आशा' के साथ आशा को आदरांजलीं दी थी। आशा कहती हैं: ''एक बार मैं हीथ्रो हवाई अड्डे पर इमिग्रेशन काउंटर पर खड़ी थी जब उस युवा अधिकारी को पता चला कि मैं 'ब्रिमफुल ऑफ आशा' की आशा हूं, तो वह बहुत उत्साहित हुआ और अपनी कुर्सी छोड़ दी और मुझसे मिलाने के लिए अपने दोस्तों को बुला लिया।''

आशा ने अक्सर कहा है, अगर वो संगीत में नहीं होती, तो एक कुक बन जाती। ''पाक कला सीधे दिल से उतरती है। लोगों द्वारा इसके ज़ायके का लुत्फ़ उठाने के लिए, इसे बहुत प्यार से बनाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे गायन।'' आश्चर्यजनक रूप से आशा सफल रेस्टोरेंट संचालिका हैं और 15 अंतर्राष्ट्रीय रेस्टोरेंट की प्रेरणा स्रोत है, 6 मिडिल ईस्ट में और 2 यूके में । 2002 में *आशा* नाम की श्रृंखला दुबई के रेस्तरां के साथ शुरू हुई। इन रेस्तरां ने कई पुरस्कार जीते हैं। व्यंजनों और उन्हें बनाने की विधि आशा ने ईजाद की है।

ख़ाना और गाना मेरी खुशी के मूलमंत्र हैं, वह कहती हैं।

आशा की आशा

आशा ने जब से गाना शुरू किया तब से उन्होंने बॉलीवुड संगीत के हर दशक को समृद्ध किया है। अब वह अपनी ऑनलाइन प्रतिभा प्रतियोगिता, *आशा की आशा* के माध्यम से, नई प्रतिभाओं के साथ बॉलीवुड संगीत के भविष्य को और समृद्ध करना चाहती हैं। महत्वाकांक्षी गायक उन्हें अपने संगीत का दो मिनट का वीडियो भेजते हैं, जिसे उनकी वेबसाइट पर अपलोड किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ नई आवाज को ₹100,000 का पुरस्कार मिलेगा। अन्य चयनित आवाज़ों को उनके यू ट्यूब चैनल और सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित किया जाएगा।

आशा कहती हैं, ''अपने 70 साल के अनुभव को मफ्युवाओं के साथ साझा करने और संगीत से मुझे जो कुछ मिला है उसे लौटाने का ये सुअवसर मुझे बहुत प्रिय है।''

सम्पादक की पसंद

- *अब के बरस भेज भैया को बाबुल*
- *मांग के साथ तुम्हारा*
- *आँखों में क्या जी*
- *दिल चीज़ क्या है आप मेरी जान लीजिये*
- *दीवाना हुआ बादल*
- *छोड़ दो आँचल*

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

Wordsworld

Games People Play

Sandhya Rao

In the backdrop of the Indian cricket team winning the recent Test series in Australia, thus lifting spirits, it is logical to showcase a cricket-related book. I have picked *The Commonwealth of Cricket* by Ramachandra Guha, a personal memoir by a historian with a passion for the game. As the author description on the jacket flap says, 'He says he writes on history for a living; and on cricket to live.' A few years ago, I had read his *A Corner of a Foreign Field: The Indian History of a British Sport* practically at one go. Constructed on a foundation of solid research, sound argument and felicitous writing, that's a book anyone can, should, read: you don't need to be a cricket aficionado. Just as you don't have to be a rifle shooter to read *A Shot at History*, the story of Abhinav Bindra brilliantly written by journalist Rohit Brijnath.

The Commonwealth of Cricket, however, requires some degree of familiarity and interest in the game because much of it is about Guha's own 'real action' engagement with the game as a school boy and university student.

Those who have read him know that he takes the fight to the front. 'I am by nature and instinct an anti-Establishment man,' he writes in this book. 'I left the academy 30 years ago, and have since had no allegiance to a formal institution. I could not cope with working in a university, and would have found it impossible to work in a newspaper or corporate office. I have never been a member of a political party. The Friends Union Cricket Club is an exception to this rule, but there is nothing formal about this lone institution to which I belong. The FUCC has no office, owns no property, and has no paid employees.'

You may ask what the connection is between cricket, politics, twitter and being anti-establishment. Guha is the connection. Woven into this book which is on the one hand a journey down memory lane with all the fine print intact, including who scored how many runs and who took how many wickets, is a ringside view of the games people play when they play games. But be warned: it takes patience to get to those bits.

> " One of the most interesting bits of cricket's political history that Guha sheds light on relates to the Lodha Committee.

Be prepared for juicy stories, facts and all. The outside stories concern Guha's personal cricketing on-field achievements, or rather, non-achievements, by his own admission. The inside stories are analytical, insightful, and definitely distressing, even though it's no secret that sporting organisations in India are rife with nepotism and corruption. There are a few brave ones still standing, but these are few, too few. Guha's person of such standing is the redoubtable left-arm spinner Bishen Singh Bedi whom he refers to several times in the book. The author revives memories of several moments and personalities in the cricketing history of this game as he revisits different eras and the prodigious talent and prowess of cricketers from his club, state, country and other parts of the world.

While reading, I experienced several moments of *déjà vu*. I remember the last time the maverick Pakistani cricketer Javed Miandad appeared for Pakistan in an ODI; it was a match against India, a World Cup fixture in Bengaluru. The image of him walking off the field after he got out, turning back every now and then to look at the pitch as if to imprint the picture in his mind… that television image remains vivid in my mind. I remember standing up to applaud him in my living

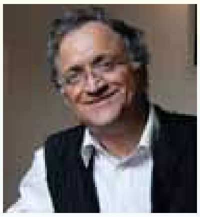

> I couldn't cope with working in a university, and would have found it impossible to work in a newspaper or corporate office. I've never been a member of a political party.
>
> **— Ramachandra Guha**

room, not because he was my favourite but because he had dared so much. Guha refers to this very moment in the book as he recalls that match: 'Nine an over were required when he was run out by a direct hit. When he walked off the ground I stood up to applaud him. "Why are you clapping?" asked an obnoxious fellow from a row behind. "You should clap too," I answered, recklessly. "This is the last time any of us will see him bat." "Thank God I shall never see the bastard again," came the reply. How did I think that an uncertain internationalism would be equal to a single-minded patriotism?'

One of the most interesting bits of cricket's political history that Guha sheds light on relates to the Lodha Committee. In the wake of several public interest litigations after the match-fixing scandals and instances of conflict of interest exacerbated by the IPL, the Supreme Court set up a three-man committee headed by a former chief justice, R M Lodha to clean up Indian cricket. This committee in turn set up a Committee of Administrators (COA) and invited the author as a member. Guha recounts the experience of engaging with Rahul Dravid on the question of conflict of interest, which is insightful. He refers to an email he wrote to Dravid who, at the time, was coaching the India 'A' team and during the IPL was coach of the Delhi Daredevils, and the resulting stand-off between the two. Luckily this was bridged thanks to the cricketer taking on board some good advice from a mutual friend, the former England captain Mike Brearley.

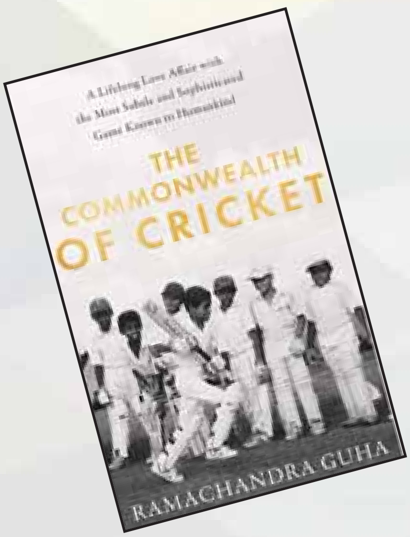

Individuals, institutions, everything comes under the glare of Guha's keen study and astute analysis — and this includes himself. He describes with candour the less than cordial nature of his relationship with the original Little Master, Sunil Gavaskar, even as he holds nothing back in praising Sunny's remarkable achievements on the playing field. The tension between them had a lot to do with the questions Guha raised as a member of the COA.

He also makes bold to spell out what many, at the time, may have thought but did not voice. A former cricket captain, Vijay Merchant, had once famously said one should quit at the right time, when people ask why and not why not. 'He stayed on, and on,' Guha says of SachinTendulkar, and wishes that 'Tendulkar had taken his cues from Merchant and Gavaskar instead. It was not just that he kept going beyond his prime, but that in his (as it were) cricketing dotage he took the cricketing public for granted.'

There's plenty to enjoy and assimilate in *The Commonwealth of Cricket*, among them some quirks such as lists of Guha's dream teams, from a Karnataka XI to an eleven of Indian cricketers he has shaken hands with, to an eleven of his favourite Pakistani cricketers he has seen play, to a similar eleven comprising Indian players, to a joint All-Time Indo-Pak XI. There's just one regret though: I grew up in the small industrial town of Durgapur in West Bengal. Come cricket season (or Davis Cup tennis) my father, who had been a keen cricketer in his college days in Coimbatore, would assign me the task of listening to the radio commentary and relaying to him all that had happened when he returned from work. Perhaps that's what got me interested in sport, and cricket and tennis in particular. I wish my father was alive to read this book. He would have loved it.

The columnist is a children's writer and senior journalist.

Designed by Krishnapratheesh S

Membership Summary

(As on February 1, 2021)

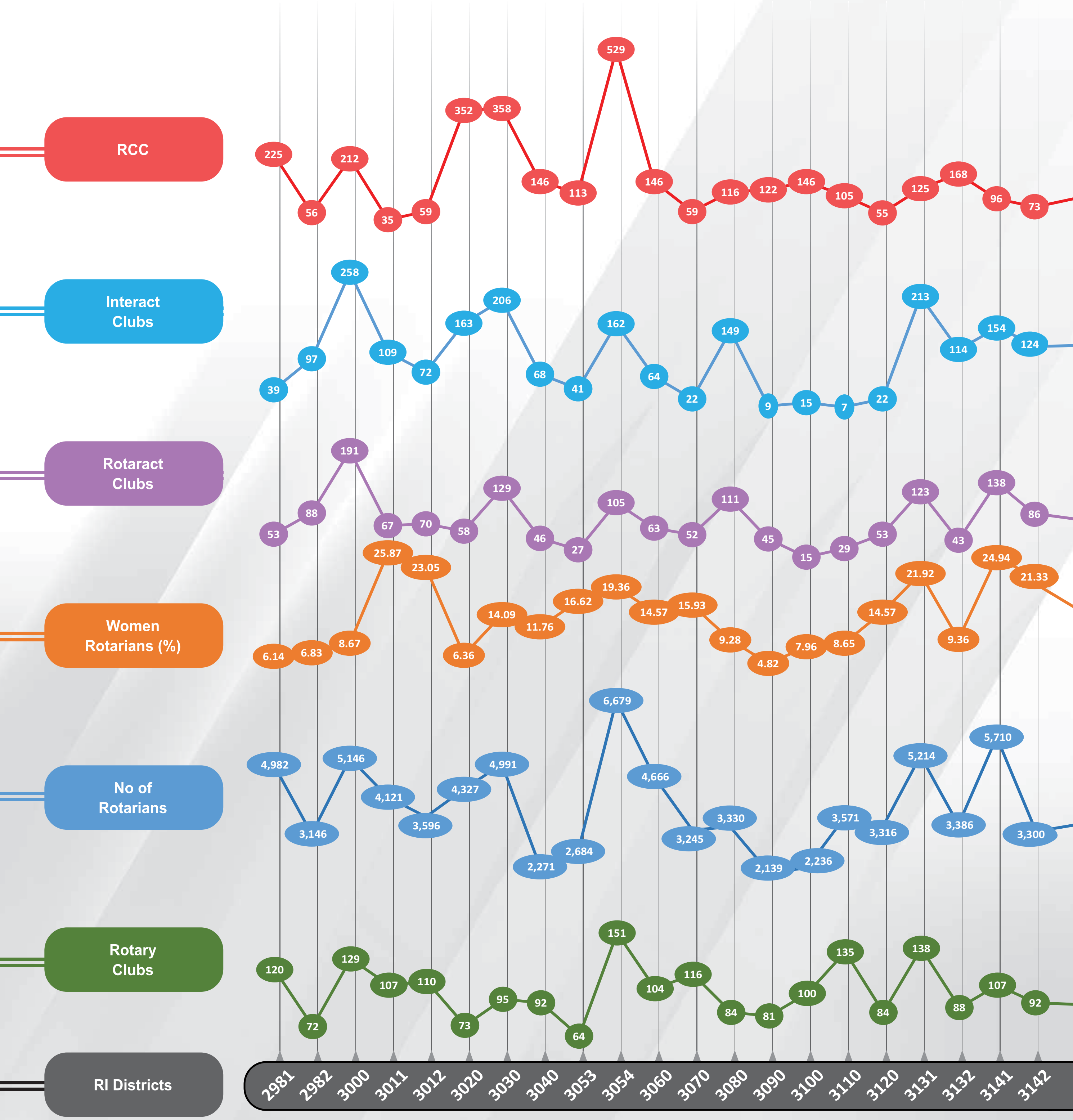

Rotary at a glance

Rotary clubs	: 36,490	Rotary members	: 1,182,601
*Rotaract clubs	: 8,656	*Rotaract members	: 217,162
Interact clubs	: 15,681	Interact members	: 359,214
RCCs	: 11,580		*As on 17 February 2021*
			**As on 19 February 2021*

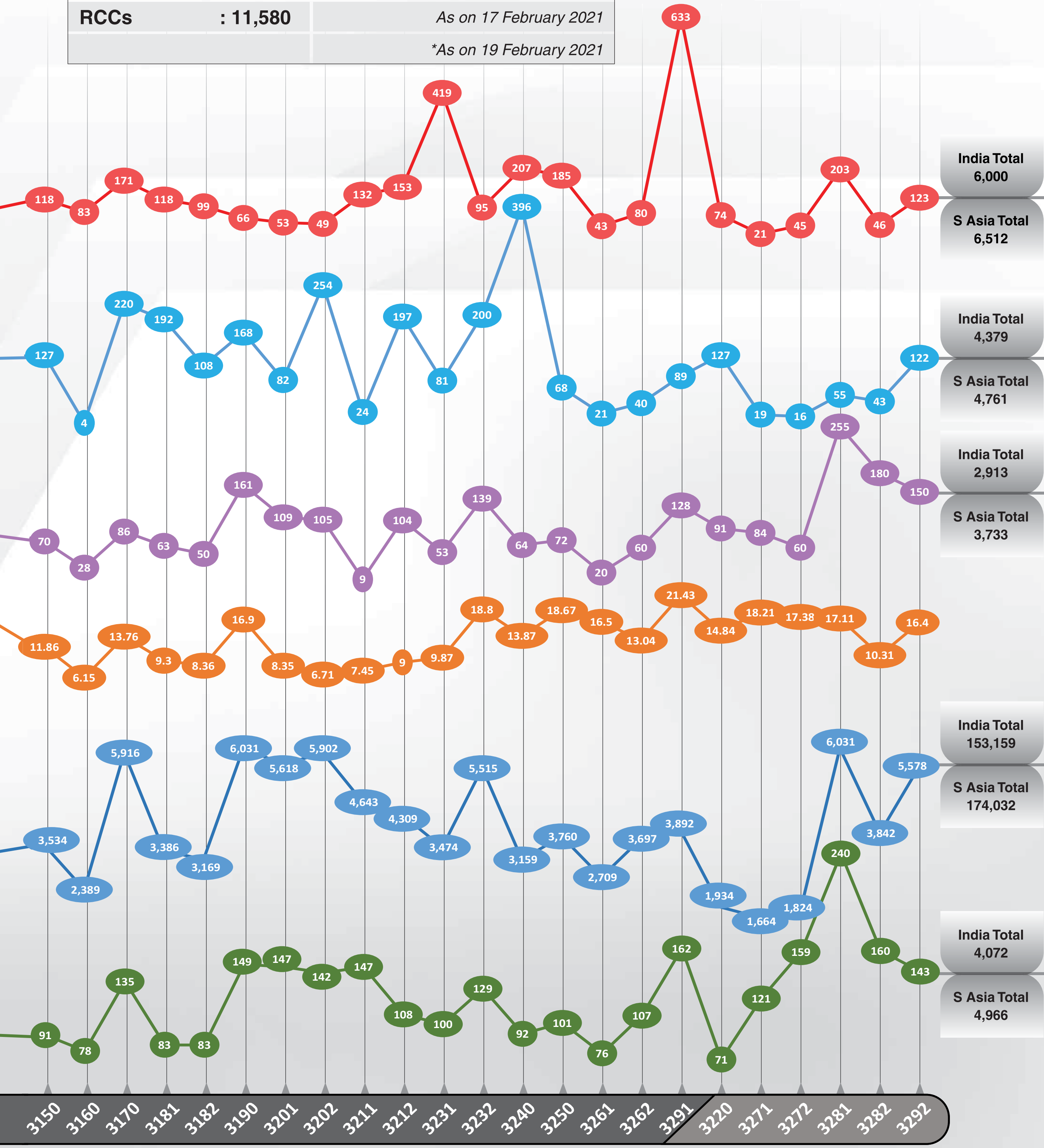

Source: RI South Asia Office

On the racks

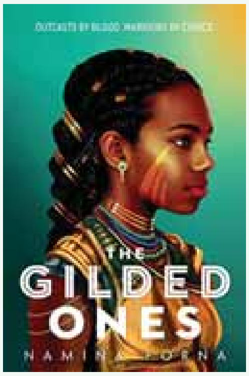

The Gilded Ones

Author : **Namina Forna**
Publisher : **Delacorte**
Pages : **432; ₹1,545**

A unique and female-centred fantasy, this is the story of Deka who has spent the first sixteen years of her life attempting to master the docility and obedience expected from a ‘pure girl’ whose blood must run red instead of the cursed gold in order to stay in her village and be included in her community. If otherwise, this could lead to the death of her father and herself at the hands of their kin. When she finds out, and so does the village, that her blood is gold, she is guided by an unknown woman to a land where she meets girls as special as herself and prepares for a battle to end the patriarchy and ring in the good times for the gold-blooded line.

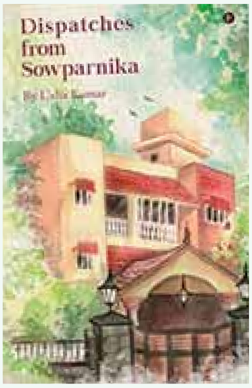

Dispatches from Sowparnika

Author : **Usha Kumar**
Publisher : **Notion Press**
Pages : **242; ₹298**

This book is a microcosm of the passage of human life. With stories of people and places, it’s a compilation of everyday experiences as perceived by the author. It takes the readers on a fascinating journey through thumbnail sketches and vignettes. The versatility of the book lies in every narrative being first-hand and lovingly dealt with, be it about family, cities or just musings. The chapter *An Ode to My Mother* is beautifully and lovingly penned; *The Only Kilo* is about the few things she’d take if caught in something like the great Chennai floods; *A Sliver of History* gives you an insight into indentured labour; *Adieu* on a lighter note is about the dear old Ambassador car; and the pachyderm Guruvayur Kesavan is the focus in *Blessed*. The book is a compelling, heartening and ebullient read and will surely leave readers reflecting on the many forgotten times, places and people in their lives.

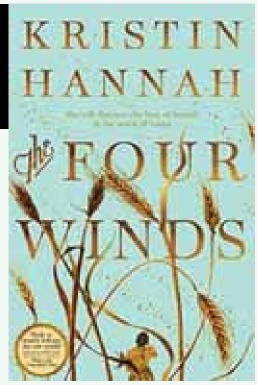

The Four Winds

Author : **Kristin Hannah**
Publisher : **St Martin’s Press**
Pages : **464; ₹1,780**

The book is set in Texas in the year 1921 when the dust storms damaged the ecology and agriculture of the American prairies. The stock market crash at the same time led to the Great Depression. In the middle of it all, Elsa and her family have to make a choice to either remain in their farm and fight for their land or head west to California for a better life. Elsa is a true fighter, she gives up the comfort of her maternal home when she becomes pregnant with the child of a man who does not care for her and is forced to marry him. With the support of her parents-in-law Rose and Tony, the protagonist comes to realise how tough, brave, and kind-hearted she is. She then guides her family through the toughest decision they have to make. Incidentally, farmers from the drought-stricken Dust Bowl and workers from the cities all converge in California looking for jobs. Could this be a new beginning for Elsa and her children or could it be worse?

Compiled by Kiran Zehra

District Wise TRF Contributions as on January 2021

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus	Endowment Fund	Other Funds	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
				India			
2981	41,501	3,928	12,128	0	57,557	187	3.8
2982	23,865	16,146	20,770	43,358	104,139	76	2.5
3000	44,937	17,296	20	8,700	70,954	60	1.2
3011	49,176	10,571	40,653	180,216	280,617	97	2.7
3012	10,808	2,480	0	8,532	21,820	47	1.3
3020	132,261	52,206	32,000	2,726	219,193	251	6.2
3030	26,596	2,284	22,743	128,275	179,899	76	1.5
3040	4,087	222	0	566	4,874	18	0.9
3053	9,733	3,268	0	92,289	105,289	28	1.0
3054	71,534	1,647	0	127,033	200,214	256	4.2
3060	44,422	(34)	32,641	109,902	186,931	882	20.2
3070	26,095	746	0	36,746	63,587	191	6.1
3080	45,756	12,661	0	(19,761)	38,656	103	3.1
3090	28,905	500	0	(736)	28,669	86	3.9
3100	44,249	252	0	4,224	48,725	159	7.1
3110	20,279	200	0	0	20,479	42	1.1
3120	5,688	1,769	0	3,020	10,477	60	1.8
3131	96,599	40,795	109,000	395,483	641,877	493	9.6
3132	19,092	2,615	5,000	1,935	28,641	45	1.3
3141	314,368	42,294	70,568	823,956	1,251,185	605	11.4
3142	166,021	11,971	101	73	178,167	445	13.9
3150	40,352	8,690	98,044	34,352	181,438	391	11.8
3160	14,268	7,564	16	0	21,849	35	1.4
3170	17,866	20,885	1,240	132,426	172,417	67	1.2
3181	29,224	3,300	0	7,050	39,573	126	3.8
3182	45,352	4,312	0	15,953	65,617	174	5.6
3190	72,854	44,313	25,000	112,074	254,241	497	9.9
3201	63,193	25,177	0	178,367	266,736	372	6.7
3202	35,200	21,557	8,468	20,272	85,498	117	2.2
3211	12,371	3,441	0	123,736	139,548	60	1.3
3212	15,762	35,185	14	108,733	159,694	25	0.6
3231	(249)	359	0	18,110	18,221	5	0.1
3232	25,458	34,350	2,000	417,089	478,896	116	2.0
3240	74,311	21,780	0	49,328	145,418	183	6.0
3250	30,490	4,140	0	565	35,195	226	6.1
3261	81,485	1,108	0	8,360	90,954	30	1.1
3262	26,594	2,649	0	0	29,243	76	2.1
3291	36,135	7,449	10,149	56,626	110,359	68	1.9
India Total	**1,846,638**	**470,075**	**490,555**	**3,229,578**	**6,036,846**	**6,775**	**4.6**
3220 **Sri Lanka**	140,346	19,756	26,000	15,015	201,118	218	11.4
3271 **Pakistan**	6,206	97,191	0	246,533	349,930	3	0.2
3272 **Pakistan**	50,948	15,221	0	1,168	67,337	272	16.2
3281 **Bangladesh**	133,670	6,645	29,000	233,288	402,603	391	5.5
3282 **Bangladesh**	51,244	5,707	0	7,770	64,722	104	2.5
3292 **Nepal**	143,577	9,317	0	203,431	356,326	1,439	29.1
South Asia Total	**2,372,630**	**623,912**	**545,556**	**3,936,783**	**7,478,880**	**9,202**	**5.4**

Source: RI South Asia Office

दंडात्मक फिटनेस नियम को ना कहे

शीला नंबीयार

वह थकी हुई उठती है और अपने फोन पर बजने वाले अलार्म को धुंधली नज़रों से घूरकर देखती है। अरे नहीं! उसे तो सुबह 6 बजे तक अपनी जिम जाना होता है! प्रशिक्षक का आदेश! उसे चेतावनी दी गई है कि उसे अपने सत्र के लिए समय पर आना होगा, वरना। वरना क्या? उसे नहीं पता। वह जबरदस्ती अपने बिस्तर से उतरकर लड़खड़ाते हुए बाथरूम में जाती है।

वह सुबह 6.20 पर जिम पहुंचती है। उसका शरीर एक दिन पूर्व की गई कसरत की भारी थकावट की वजह से दर्द में ही रहता है परंतु फिर भी वह और अधिक कष्ट उठाती है। उसे बोल दिया जाए तो वह आराम से जिम के फर्श पर लेटकर सो जाए। हालांकि उसके प्रशिक्षक का बर्ताव हिटलर जैसा है क्योंकि वह बुरे चेहरे बनाते हुए निर्दयता से चिल्लाकर दिए गए निर्देशों के साथ सहसा ही दंडित अभ्यासों की एक श्रृंखला के माध्यम से उसे प्रताड़ित करता है। नींद की कमी की वजह से उसे बहुत थकावट हो गई!

बाद में वह डायटिशियन से मिलने जाती है और कंपकंपाते हुए दबी हुई आवाज़ में प्रार्थना करते हुए वजन नापने वाले स्केल पर चढ़ती है। वह अपने मुंह पर ङ्गमोटाफकहलाए जाने से डरती है। स्केल में मात्र सौ ग्राम का अंतर आया इसलिए उसे आने वाले हफ्ते में दिनभर में केवल एक कौर खाने को कहा गया और लगभग बेहोश होने वाली अवस्था में भी वह आहार संबंधी संघर्ष करती रहती है।

क्या इस स्थिति में वाकई कुछ गलत है या ऐसा सिर्फ मुझे लगता है? क्या आपको नहीं लगता कि अति-व्यायाम और लगभग भुखमरी की यह नियमित दिनचर्या आपके लिए सही नहीं है? जब वजन कम करने के संतुलित और सफल तरीके मौजूद है तो फिर स्वयं को इतनी यातनाएं क्यों देना। किस वजह से आपको ऐसी बकवास बातों पर यकीन होता है? किस वजह से आप एक उचित शरीर की तलाश में भटकने को मजबूर होते है? क्यों आप स्वयं की तुलना ऐसी महिलाओं से करते है जिनका शरीर और शरीर विज्ञान आपसे बिल्कुल अलग हैं, और आप यह तय करते है कि यदि आप उनकी फिटनेस दिनचर्या का पालन करेंगे, उनके ही प्रशिक्षक को स्वयं के लिए नियुक्त करेंगे और उनके जैसा ही आहार लेंगे तो चमत्कारपूर्ण रूप से आपको वही परिणाम मिलेंगे जो आप चाहते है।

क्या यह संभव नहीं है कि आपके शरीर की बहुत ही अलग आवश्यकताएं होंगी? इसे वास्तव में बेहतर तनाव प्रबंधन, अधिक पौष्टिक भोजन या बेहतर आराम वाली नींद जैसी चीज़ों की आवश्यकता हो सकती है। क्या यह संभव नहीं है कि अब तक आपकी जीवनशैली ने आपके लिए ऐसी अनूठी समस्याएं खड़ी की होंगी जिन्हें स्वतंत्र रूप से संबोधित किए जाने की आवश्यकता है? बीमारी और वजन के लिए आपकी आनुवांशिक प्रवृत्ति पूरी तरह से अलग है। हमारा शरीर केवल तभी प्रतिक्रिया देगा जब हम उसके साथ सम्मानपूर्वक पेश आएंगे और इसका अर्थ है उसे सही मात्रा में सही आहार देना, व्यायाम केवल सुधार के लिए करें उसे सजा न बनाएं और तनाव, नींद एवं रिश्तों जैसे अन्य पहलुओं का बेहतर प्रबंधन करें।

विज्ञापन हमें हमेशा यह बताते है कि हम अच्छे नहीं है इसलिए वे हमें कुछ भी बेच सकते है - एक उत्पाद जो हमें एक बार में पतला, सुंदर और युवा बना देगा। फिटनेस उद्योग हमें बताता है कि यहाँ व्यायाम का एक शानदार नया तरीका या नई मशीनें मौजूद है जो चंद मिनटों में आपका पेट समतल कर देंगी जैसा आप चाहते है। या यह उल्लेखनीय नया पेय पदार्थ जो सोते हुए भी वसा को जलाता है। यह सब बहुत आशाजनक है।

लेकिन क्या आप सच में ऐसा मानते है? मुझे लगता है कि आप केवल इसलिए इन पर भरोसा करते है क्योंकि अन्य लोग भी यही कर रहे है। आप अपनी इच्छानुसार वजन कम कर सकते है और फिर भी अपने अंदर के उस खालीपन को भरने के प्रयास में कुछ और अच्छा पाने की जद्दोजहद करते है। हो सकता है कि 26 इंच की कमर हासिल करने के बाद भी आपको अपनी पहचान या खुशी की तलाश हो।

अब समय है कि हम जायजा ले और खुद से पूछे कि हम स्वयं के साथ ऐसा क्यों करते है? हम क्यों स्वयं को दंडित करते है, अपना अपमान करके खुद को ही क्यों दुखी करते है। शायद यह समय

© Freepik.com

हमारा शरीर केवल तभी प्रतिक्रिया देगा जब हम उसके साथ सम्मानपूर्वक पेश आएंगे और इसका अर्थ है उसे सही मात्रा में सही आहार देना, व्यायाम केवल सुधार के लिए करें उसे सजा न बनाएं और तनाव, नींद एवं रिश्तों जैसे अन्य पहलुओं का बेहतर प्रबंधन करें।

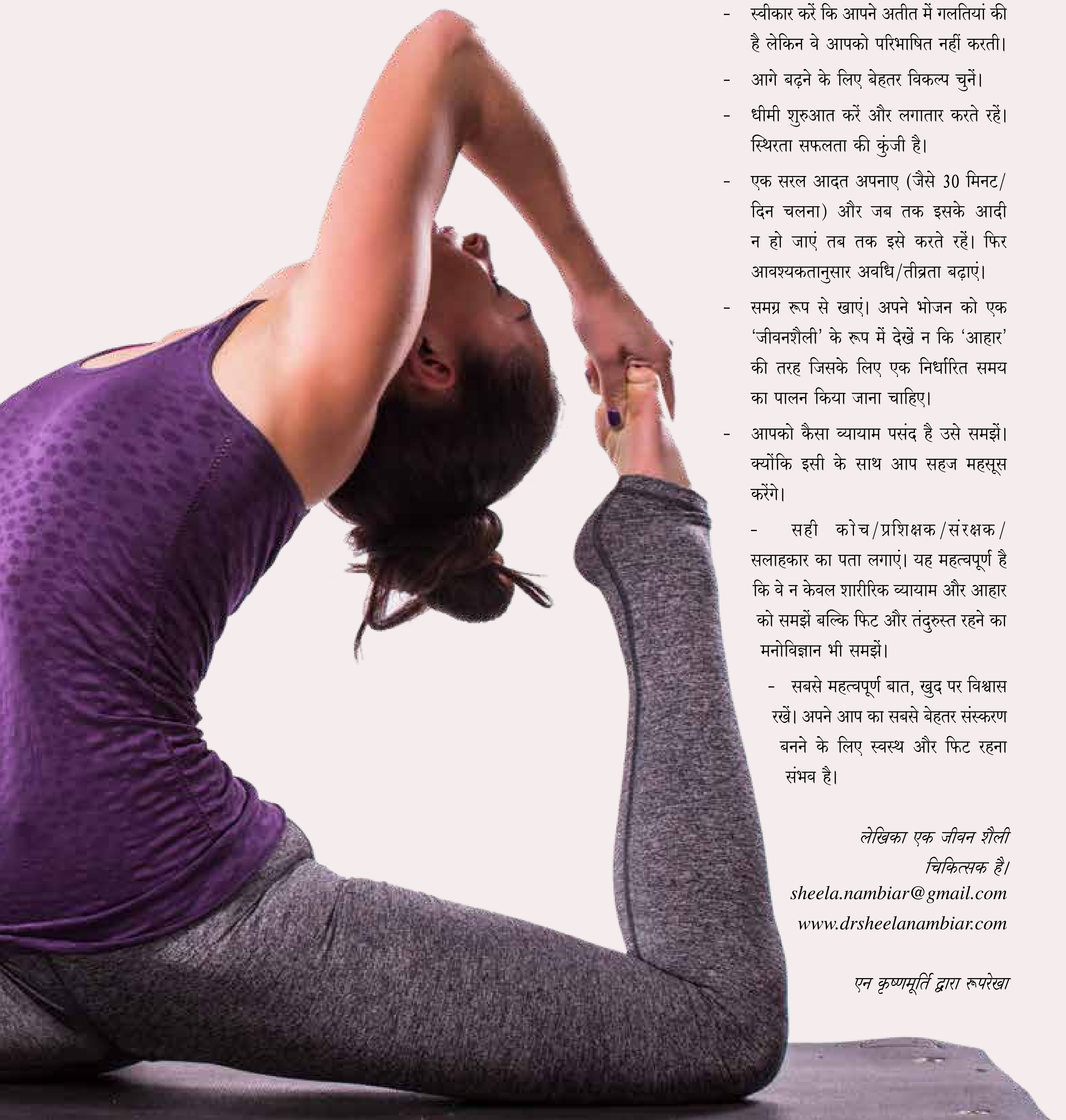

है एक कदम पीछे लेकर खुद से पूछने का कि हम वास्तव में चाहते क्या है। अपनी सुंदर काया के लिए दूसरों से अनुमोदन या प्रशंसा? या अपने लिए संतोष की अनुभूति कि हम अपना सर्वश्रेष्ठ जीवन जीने में सक्षम है?

- शुरुआत अपने शरीर का सम्मान करने से करें।
- स्वीकार करें कि आपने अतीत में गलतियां की है लेकिन वे आपको परिभाषित नहीं करती।
- आगे बढ़ने के लिए बेहतर विकल्प चुनें।
- धीमी शुरुआत करें और लगातार करते रहें। स्थिरता सफलता की कुंजी है।
- एक सरल आदत अपनाए (जैसे 30 मिनट/दिन चलना) और जब तक इसके आदी न हो जाएं तब तक इसे करते रहें। फिर आवश्यकतानुसार अवधि/तीव्रता बढ़ाएं।
- समग्र रूप से खाएं। अपने भोजन को एक 'जीवनशैली' के रूप में देखें न कि 'आहार' की तरह जिसके लिए एक निर्धारित समय का पालन किया जाना चाहिए।
- आपको कैसा व्यायाम पसंद है उसे समझें। क्योंकि इसी के साथ आप सहज महसूस करेंगे।
- सही कोच/प्रशिक्षक/संरक्षक/सलाहकार का पता लगाएं। यह महत्वपूर्ण है कि वे न केवल शारीरिक व्यायाम और आहार को समझें बल्कि फिट और तंदुरुस्त रहने का मनोविज्ञान भी समझें।
- सबसे महत्वपूर्ण बात, खुद पर विश्वास रखें। अपने आप का सबसे बेहतर संस्करण बनने के लिए स्वस्थ और फिट रहना संभव है।

लेखिका एक जीवन शैली चिकित्सक है।
sheela.nambiar@gmail.com
www.drsheelanambiar.com

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब मुथुपेट्टई - रो ई मंडल 2981

थम्बिक्कोट्टई गांव में एक नेत्र शिविर आयोजित किया गया जिसमें 325 लोगों की जांच की गई। उनमें से 115 को सर्जरी के लिए चुना गया।

रोटरी क्लब सोनेपत एजुकेशन सिटी - रो ई मंडल 3012

एक गुरुद्वारे में गैर सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी में एक रक्तदान-सह-स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। जहाँ लगभग 225 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया और 200 रोगियों की जांच की गई।

रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली - रो ई मंडल 3000

72वें चार्टर दिवस को चिह्नित करने के लिए, क्लब ने *मील्स ऑन व्हील्स* परियोजना शुरू की ताकि वृद्धाश्रमों और निराश्रितों के लिए बने एक विशेष आश्रय घर में रहने वाले 300 से अधिक लोगों को भोजन वितरित किया जा सकें।

रोटरी क्लब चन्द्रपुर - रो ई मंडल 3030

एक व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत तीस महिलाओं को ब्यूटी पार्लर पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण प्रदान करके प्रमाण पत्र दिए गए। उनमें से कुछ की अपना स्वयं का पार्लर स्थापित करने की योजना है।

रोटरी क्लब दिल्ली खूबसूरत - रो ई मंडल 3011

आर के पुरम स्थित एक कुष्ठ केंद्र, जीवन दीप कुष्ठ आश्रम, के 60 परिवारों को महामारी के दौरान राहत प्रदान करने के लिए राशन किटें वितरित की गईं।

रोटरी क्लब बीकानेर आध्या - रो ई मंडल 3053

वृंदावन एन्क्लेव के एक वृद्धाश्रम को एक गीजर दान किया गया और झुग्गी बस्तियों में रहने वाले परिवारों को 100 गर्म कंबल दिए गए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब भावनगर रॉयल - रो ई मंडल 3060

75 प्रवासियों और उनके बच्चों को पढ़ने-लिखने जैसे बुनियादी कौशल सिखाने के लिए सरदारनगर के एक रैन बसेरे में एक साक्षरता केंद्र स्थापित किया गया।

रोटरी क्लब चांदौसी लक्ष्य - रो ई मंडल 3100

इसकी RILM पहल के तहत स्कूल के 250 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। RIPE शेखर मेहता द्वारा 100 शिक्षकों के पहले बैच के लिए ऑनलाइन कक्षाओं का उद्घाटन किया गया।

रोटरी क्लब घुमरवीं - रो ई मंडल 3070

क्लब अध्यक्ष अनिल शर्मा द्वारा बच्चों को मिठाइयां बांटकर मकर संक्रांति और लोहड़ी मनाई गई। लोगों का अभिवादन करके रोटेरियनों ने खुशियाँ बाँटी।

रोटरी क्लब आगरा ताज सिटी - रो ई मंडल 3110

टीबी का उपचार करवा रहे ग्यारह बच्चों को क्लब द्वारा गोद लिया गया। क्लब अध्यक्ष डॉ नरेंद्र मल्होत्रा द्वारा 18 बच्चों को पौष्टिक भोजन के पैकेट दिए गए।

रोटरी क्लब अंबाला इन्डस्ट्रीअल एरिया - रो ई मंडल 3080

क्लब ने डॉ जोगिंदर सिंह सिविल अस्पताल में 15 आशा कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया। क्लब ने एक सिलाई केंद्र के छह महीने के कोर्स के लिए 12 लड़कियों को नामांकित किया है।

रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी - रो ई मंडल 3131

चार स्कूलों को 110 टैबलेट (₹8.8 लाख) दिए गए जिनमें सिम कार्ड और प्रीलोडेड कोर्स मौजूद था ताकि सुविधाओं से वंचित बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं का लाभ प्राप्त कर सकें।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब शिर्डी साईबाबा - रो ई मंडल 3132

क्लब ने श्री जनार्दन स्वामी अस्पताल, कोपरगाँव, को अस्पताल के कर्मचारियों एवं रोटेरियनों की उपस्थिति में ऑक्सीजन संकेंद्रक मशीन दान की।

रोटरी क्लब मैंगलोर सेंट्रल - रो ई मंडल 3181

क्लब ने अपनी 15वीं वार्षिक मंडल - स्तरीय अंतर - क्लब रोटरी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की। पीडीजी डॉ भास्कर ने विजेताओं और उपविजेताओं को सम्मानित किया।

रोटरी क्लब सुलूरपेट - रो ई मंडल 3160

₹68,000 की लागत से रोटेरियन बालू लोकनाथम द्वारा दान की गई साड़ियों, लुंगियों और शर्ट को नगरपालिका के 140 सफाई कर्मचारियों को भेंट किया गया।

रोटरी क्लब कोटा सिटी - रो ई मंडल 3182

डीजी राजाराम भट ने कोटा हाई स्कूल के पास एक बस स्टैंड का उद्घाटन किया और क्लब द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। इस परियोजना की लागत ₹2.5 लाख है।

रोटरी क्लब धारवाड़ सेंट्रल - रो ई मंडल 3170

42,500 डॉलर की लागत वाले एक वैश्विक अनुदान के तहत जिला अस्पताल को एक आईसीयू वार्ड दान किया गया। केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी ने IPDG गिरीश मसूरकर की उपस्थिति में इसका उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब कोचीन बीच साइड - रो ई मंडल 3201

एस्पिनवॉल के सीएसआर फंड का उपयोग करते हुए टैगोर लाइब्रेरी, फोर्ट कोच्चि, को ₹50,000 का फर्नीचर दान किया गया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब तेलीचेरी - रो ई मंडल 3202

क्लब ने उप जेल को एक वाटर प्युरफाइअर और पुस्तकालय के लिए किताबें दान की।

रोटरी क्लब जबलपुर साउथ - रो ई मंडल 3261

जनता को आपातकालीन सहायता प्रदान करने के लिए जबलपुर पुलिस को पॉकेट जीवन रक्षक किटें दी गई। परियोजना प्रमुख विपन ललन ने किट का उपयोग करने पर एक डेमो दिया।

रोटरी क्लब शिवकाशी डायमंड्स - रो ई मंडल 3212

क्लब ने कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में शीर्ष रैंक हासिल करने वाले प्रत्येक विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र, शील्ड और उपहार दिए।

रोटरी क्लब क्योंझर - रो ई मंडल 3262

आदिवासी गांवों में स्कूली बच्चों और महिलाओं को कड़ाके की सर्दी से बचाने के लिए स्वेटर और कंबल दिए गए।

रोटरी क्लब तिरुवल्लूर रॉयल्स - रो ई मंडल 3231

क्लब ने ₹73 लाख की अनुमानित राशि से 10 वर्षों के लिए तिरुवल्लूर सरकारी अस्पताल के एक रक्त संग्रह केंद्र का वार्षिक रूप से रखरखाव करने का जिम्मा लिया।

रोटरी क्लब बेलूर - रो ई मंडल 3291

वन हावड़ा डिस्ट्रिक्ट अस्पताल और आईएलएस अस्पताल को ₹35.83 लाख की वैश्विक अनुदान परियोजना के माध्यम से लगभग 3500 पीपीई किटें, फेस मास्क और फेस शील्ड दान किए गए।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

संपादक और उनका सनकीपन

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

अब जब 70 का दशक मेरे सामने है, मुझे कई फ़ैसले लेने होंगे। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि 40 साल के बाद मैंने इस पत्रिका के लिए महीने में एक बार लिखना छोड़कर लेखन बंद करने का फैसला किया है। और मैं वर्णन नहीं कर सकता कि यह कितना सुखमय है कि सुबह उठकर इस बात की चिंता नहीं होगी कि अब क्या लिखें। ये चार दशक बहुत ही अद्भुत रहे है और मैं मौजूदा हर चीज़ के बारे में इतना विस्तार से लिख पाया जिसके बारे में मुझे ज्यादा कुछ पता ही नहीं था। बोलने की स्वतंत्रता स्पष्ट रूप से बहुत उपयोगी है, यदि ऐसा नहीं होता तो मुझ जैसे बकवास करने वाले आदमी को इतनी अच्छी कमाई करने का मौका कैसे मिलता।

लिखने की उत्सुकता तब शुरू हुई जब मैं अपनी किशोरावस्था में था। मेरे पिता ने मुझसे कहा था कि मुझे अपनी अंग्रेजी सुधारने की जरूरत है क्योंकि मेरी ज्यादातर स्कूली शिक्षा हिंदी या जैसा कहा जाता है हिंदी माध्यम में हुई थी। इसलिए अखबारों के संपादकीय पन्नों को पढ़ते हुए मैं अक्सर संपादकीय लेखक बनने की सोचता था। प्रकाशन में पांच साल बिताने के बाद मेरी यह इच्छा सटीक तौर पर 15 जुलाई 1980 को पत्रकारिता में छह महीने गुज़ारने के बाद पूरी हुई। मैं एक आर्थिक साप्ताहिक से जुड़ा। यह अब पिछले 38 साल से बंद है।

समय-समय पर, संपादक मुझसे करीब 800 शब्दों का एक संपादकीय लिखने को बोलते थे। और एक या दो अवसरों को छोड़कर, उन्होंने हर बार उसमें गलतियाँ निकाली और उसे दोबारा लिखा। यह इस काम में मेरा पहला सबक था: संपादकीय संपादक के व्यक्तिगत विचार होते है, हालांकि कपोल कल्पना यह थी कि यह अखबार या पत्रिका के विचार होते है। संपादकीय लेखक इसलिए इस बात से अपना मूल्यांकन कर सकते है कि उनके प्रयासों को कितनी बार दोबारा से लिखा गया है।

सुबह की संपादकीय बैठके एक औपचारिक मामला हुआ करती थी लेकिन संपादक के आधार पर वहां भी एक उत्साही गपशप सत्र हो जाता था। फिर अपना काम करते हुए हालाँकि आपको जल्द ही यह एहसास होता है कि जब संपादक आपसे पूछता है, ''हमारे इस पर क्या विचार है'', तो वह वास्तव में यह पूछना चाहता है, ''आप इस पर ऐसा क्या कहने जा रहे है जिसपर मैं सहमत हो सकूं?''

संपादक आपके द्वारा प्रदान किए गए तथ्यों का सम्मान कर सकता है - और कभी-कभी उसे महत्त्व नहीं भी दिया जा सकता है - लेकिन विवेचना उसी की होनी चाहिए, भले ही वह गलत हो, पक्षपातपूर्ण हो, या बेतुकी हो। खैर, आपको क्या करना, इसके लिए वे स्वयं जिम्मेदार होते है। इसलिए कभी-कभी गद्य का एक खराब हिस्सा भी प्रकाशित हो सकता है और कई बार एक पूरी तरह से बढ़िया लेख को छोटा करके उसे सामान्य बनाया जा सकता है। लेकिन यह बर्दाश्त किया जा सकता है बजाए इसके जब इस बात की परवाह ही नहीं की जाती हो कि आपने क्या लिखा है। एक बार हमारा एक संपादक ऐसा था जो मुश्किल से ही संपादकीय को स्वीकृति देने से पहले उस पर नज़र डालता होगा। यकीन मानिए यह बहुत तकलीफदेह होता है।

जब संपादक आपसे पूछता है, ''हमारे इस पर क्या विचार है'', तो वह वास्तव में यह पूछना चाहता है, ''आप इस पर ऐसा क्या कहने जा रहे है जिसपर मैं सहमत हो सकूं?''

समस्या यह है: पत्रकारिता के बाहर लोगों को पता नहीं होता कि संपादकों के पास पूर्ण शक्ति होती है, जिस हद तक निरंकुश हो सकती है वहां तक। स्वयं के द्वारा लगाई गई बंदिशों को छोड़कर उनकी क्षमता पर कोई बंदिश नहीं है जो उन्हें दूसरों को खुश करने के लिए वैसा ही करना पड़े। और कई ऐसा करते भी है। मैं इस बात पर कई कहानियां बता सकता हूं, लेकिन आपको बोर नहीं करूंगा। यह सब पक्षपात और पूर्वाग्रह धारणाओं के बारे में है। संयोग से, जिन नौ संपादकों के साथ मैंने काम किया है उनमें से केवल दो इस तरह के थे। एक को ज्यादा परवाह नहीं थी। दूसरा इतना पक्षपाती था कि आखिरकार मुझे इस्तीफा देना पड़ा।

मैंने 2002 में आपातकाल स्थिति को छोड़कर संपादकीय लिखना बंद कर दिया था, और वह भी केवल भयानक तरीके से ऊब जाने के कारण। उसके बाद मैंने बहुत कुछ लिखा - कई बार मैं अगले दिन प्रकाशित होने वाले तीनों या दोनों संपादकीय लिख देता था - जिन्हें मैं सिर्फ 20 मिनट में ही पूरा कर सकता था। लेकिन ऐसा न हो कि आप मुझे गलत समझे, इसलिए मुझे यह कहने में खुशी हो रही है कि आमतौर पर संपादक मेरे पास वास्तव में महत्वपूर्ण संपादकीय के लिए ही आते थे। जैसा कि एक संपादक ने मुझसे कहा था, ''आप अपनी कमियों को ढकने में भी मुझसे बेहतर हैं।'' ■

इन्टर्नैशनल असेम्ब्ली 2021 से कुछ पल

दिल्ली में IAटीम के साथ RIPE शेखर मेहता और राशी, RID कमल संघवी, RIDEs महेश कोटबागी और ए एस वेंकटेश।

हेमंत कुमार

DGEs और उनके जीवनसाथी।

रशीदा भगत

Regn. No. TN/CCN/359/2021-2023
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on 1st of every month

ADVT.